मिथिलाक विभूति - १



𑒅𑒧𑒰𑒣𑒞𑒱

उमापति

डॉ॰ रामदेव झा



मैथिली अकादमी, पटना

मिथिलाक विभूति

उमापति

लेखक

डॉ० रामदेव झा

एम० ए०, पी-एच० डी०

स्नातकोत्तर मैथिली-विभाग

ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा



Scanned by CamScanner

मैथिली अकादमी प्रकाशन—४७

प्रकाशक
मैथिली अकादमी
श्रीकृष्णपुरी, पटना—८०० ००१

प्रथम संस्करण १९८०
प्रति ११००

मूल्य :— साधारण 5.00
सजिल्द 6.50



मुद्रक
तरुण भारत प्रेस,
बी० एम० दास रोड
पटना—४

प्रकाशकीय

कहल जाइत अछि जे अतीतकेँ बिसरब सामाजिक पतनक लक्षण थिक, कारण जे कोनो समाजक साहित्य ओ संस्कृतिक अट्टालिका ओहि समाजक अतीतेक शिलापर ठाढ़ रहैत अछि। प्रायः एही भावनासँ प्रेरित भ' मैथिली अकादमी १९७९ मे निर्णय कयलक जे अतीतमे मिथिलाकेँ आलोकित कयनिहार महापुरुष लोकनिक परिचयक एक ग्रन्थमाला चलाओल जाय। फलस्वरूप 'मिथिलाक विभूति' नामक ग्रन्थमालाक ई प्रथम सुमन आइ अपने लोकनिक हाथमे अछि जे अकादमीक प्रकाशनक सैँतालिसम पुष्प थिक।

मैथिली साहित्यक इतिहासमे ख्याति क्रमेँ विद्यापतिक बाद जनिक नाम निर्विवाद रूपेँ लेल जाइत अछि से थिकाह एहि पुस्तकक चरितनायक म० म० उमापति। किन्तु हिनक परिचय ओ काल दूनू सर जार्ज ग्रियर्सनक समयहिसँ जटिल विवादक विषय रहल अछि। सौभाग्यवश हालमे प्रस्तुत ग्रन्थक लेखक डॉ० रामदेव झा व्यापक अन्वेषण-अनुसन्धान क' ओहि विवादक अन्त क' देलनि अछि आ हिनक निष्कर्ष प्रायः सर्वमान्य भ' चुकल अछि। हिनक विशिष्ट अध्ययनक फल प्रस्तुत ग्रन्थमे स्पष्टतः परिलक्षित होयत। ई जाहि तत्परता, शीघ्रता ओ विद्वत्तासँ एहि ग्रन्थकेँ सम्पन्न कयलनि अछि, तदर्थ ई धन्यवादार्ह थिकाह।

विद्वान लेखक एहि पुस्तकमे उमापतिक सम्बन्धमे अद्यपर्यन्त ज्ञात यच्च-यावच्च तथ्य यथावत् प्रस्तुत करबाक प्रयास कयलनि अछि। तथापि विद्वान पाठक लोकनि एहिमे जे कोनो त्रुटि पाबथि से कृपा क' अकादमीकेँ सूचित करथि।

आशा जे मैथिलीक पाठक लोकनि एहि प्रकाशनक स्वागत करताह ओ ताहिसँ उत्साहित भ' अकादमी मिथिलाक अन्यान्यो विभूति लोकनिक अर्चनामे पुष्पांजलि ल' अग्रसर होयत।

पटना,

दिनांक २५ जनवरी, १९८०

श्रीकान्त ठाकुर

अध्यक्ष, मैथिली अकादमी

प्रस्तावना

उमापति निर्विवाद रूपसँ मैथिलीक श्रेष्ठ नाटककार ओ गीतकार थिकाह। तदनुरूपे हिनका विषयमे विचार-चर्चा सेहो प्रचुर मात्रामे भेल अछि, तथापि हिनक आश्रयदाता, स्थितिकाल ओ परिचयक सम्बन्धमे एकवाक्यता नहि भ' सकल अछि। डॉ० ग्रियर्सन, प० चेतनाथ झा ओ डॉ० जयकान्त मिश्रक सिद्धान्तक त्रिकोणक तीन विन्दु तीन दिशामे प्रवृत्त छल। एकर प्रभाव हिन्दी, बंगला, उड़िया ओ असमीक उमापति विषयक विचार क्षेत्रपर सेहो पड़ैत रहल अछि। एहिना उमापतिक नाटकसँ भिन्नो बहुतो स्फुट गीत सभ छनि जे अनुसन्धित-संकलित भ' क' समालोच्य नहि भ' सकल छल। एहि सभक कारणेँ इतिहासकार ओ आलोचक लोकनिक कतोक एहन निष्कर्ष एवं सिद्धान्त सभ प्रतिपादित होइत रहल अछि, इतिहासक व्याख्या होइत रहल अछि जे भ्रामक अछि। एहि भ्रान्ति सभक सूची देब वा खंडन करब हमर इष्ट नहि। उमापतिक यथार्थ आश्रयदाता, परिचय ओ समयक निर्धारण भ' गेलापर ओहन ऐतिहासिक भ्रान्ति सभ स्वतः निरस्त भ' जायत।

उमापतिक सम्बन्धमे दीर्घकालसँ अनुसन्धानरत छलहुँ जाहि क्रममे बहुतो सामग्री सभ उपलब्ध भेल आ अन्ततः हम एकटा निश्चित निष्कर्षपर पहुँचि सकलहुँ। 'मैथिली शैव साहित्य' विषयक अपन शोध प्रबन्धमे उमापति विषयक एहि निष्कर्षकेँ प्रस्तुत कयल। परन्तु ओ शोध प्रबन्ध अप्रकाशित रहने विचारक लोकनिक दृष्टि-पथपर आयब सम्भव नहि छल। अतः विद्वान् लोकनिक विचारार्थ पहिल निबन्ध उमापतिक मैथिलेशक अप्रामाणिकता' मिथिला-मिहिर (२८ दिसम्बर, १९७५)मे ाकाशित कराओल। एहि निबन्धपर मैथिली-इतिहासकार डॉ० जयकान्त मिश्रक प्रतिक्रिया मैथिली प्रकाश (जनवरी, १९७६)मे तथा धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'क प्रतिक्रिया मिथिला-मिहिर (२७ जून, १९७६)मे प्रकाशित भेल। एहि क्रममे हमर दुइगोट निबन्ध अओर प्रकाशित भेल 'उमापतिक आश्रयदाता ओ स्थितिकाल' (मिथिला-मिहिर, १६ अक्टूबर, १९७७) तथा 'मकमानी राजसभामे मैथिली साहित्य' (मिथिला-मिहिर, ४ दिसम्बर, १९७७)। पश्चात् माननीय श्री शैलेन्द्र बाबू विचार देलनि जे उमापति विषयक समस्त नवोपलब्ध सामग्रीकेँ ग्रन्थक रूपमे प्रस्तुत कयल जाय। तदनुरूप पुस्तक तैयार भ' क' प्रेसक ओरियानमे छल ताही मध्य मैथिली अकादमीसँ उमापतिपर पुस्तक-लेखनक आमन्त्रण भेटल। अकादमीक उपयोगक हेतु उमापति विषयक ओहि पोथीकेँ सामान्य पाठकक हेतु निबन्धात्मक शैली प्रदान क' प्रस्तुत कयल गेल अछि।

एहि पोथीमे देखल जायत जे उमापतिक आश्रयदाता, स्थितिकाल ओ परिचय विषयक विवादास्पद विन्दुक सप्रमाण समाधान उपस्थित कयल गेल अछि। प्रमाणसभ पूर्णतः अभिलेख सम्मत अछि। तेँ आब शंकाक लेल कोनो स्थान नहि रहि गेल अछि।

पारिजातहरणक दुइगोट अप्रकाशित गीत ओ पन्द्रहगोट स्फुट गीतक संकलन प्रथम बेर भ' रहल अछि। एहि पन्द्रहो गीतमे किछु सर्वथा अप्रकाशित छल, किछु गीत विद्यापतिक नामपर प्रचलित छल तथा किछु प्रकाशितो छल तँ बेसी लोकके बूझल नहि।

एहि ग्रन्थक उद्देश्य उमापतिक परिचय प्रस्तुत करब छल। ओहि दिशामे जतबा तथ्य उपलब्ध भ' सकल तकर पारस्परिक सामञ्जस्यपूर्वक प्रस्तुतिमे कतेक दूर धरि सफलता भेटि सकल से अध्येता लोकनिक समालोचनाधीन अछि। परन्तु एतबा स्वीकार करैत छी जे उमापतिक काव्य-प्रतिभा, हुनक काव्यक शास्त्रीय विश्लेषण-मूल्यांकन, पारिजातहरणक ऐतिहासिक महत्त्वक प्रतिपादन ओ नाट्य-शास्त्रीय समीक्षा नहि भ' सकल अछि। परन्तु ई सभ यदि कयल जाइत तँ पोथीक आकार वृहत् भ' जाइत जे अपेक्षित नहि छल।

एहिठाम प्रो० प्रफुल्लकुमार सिंह 'मौन'क प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करबनि जे सर्वप्रथम मकमानीक सेनवंशमे हिन्दूपति हरिहरदेव नामक राजाक अस्तित्वक सूचना देलनि। आभारी छियनि मैथिली-अकादमीक सदस्य ओ अधिकारी लोकनिक जे हमरा उमापतिपर पोथी लिखबाक हेतु उपयुक्त व्यक्ति बुझलनि।

मैथिली अकादमीक अध्यक्ष श्री श्रीकान्त ठाकुरक हमरा प्रति जे स्नेह ओ विश्वास छनि तकरा देखैत कोनहु शब्दे आभार प्रदर्शन धृष्टता होयत। हुनका प्रति तँ निःशब्द श्रद्धा निवेदित अछि।

अकादमीक निदेशक साहित्यकार श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क प्रति कृतज्ञ छियनि जे बेर-बेर एहि पोथीक सम्बन्धमे पत्र द्वारा जिज्ञासा करैत रहलाह अछि।

यदि उमापति विषयक एहि पोथीसँ अध्येता-पाठकके कनेको सन्तोष भेटतनि तँ लेखक अपन परिश्रमके सार्थक बुझताह।

मातृनवमी, १९७९
कबिलपुर
लहेरियासराय, दरभंगा।

—रामदेव झा

विषय-सूची

मैथिली साहित्य ओ उमापति

कविपण्डितमुख्य उमापति उपाध्याय मध्यकालीन मैथिली साहित्यक अत्यन्त लोकप्रिय नाटककार ओ गीतकार थिकाह। हिनक नाटक **'पारिजातहरण'** मैथिलीक कीर्त्तनियाँ नाट्य परम्पराक प्रतिनिधित्व करैत रहल अछि। यदि ई कहल जाय जे मध्यकालक अत्यन्त लोकप्रिय कीर्त्तनियाँ रंग-मंच पारिजातहरणेक आश्रय ल' क' वर्त्तमान शताब्दीक आरम्भिक काल धरि जीबैत रहल, तँ कोनो अत्युक्ति नहि होयत।

मध्यकालमे अनेको नाटकक रचना भेल आ अपना समयमे कीर्त्तनियाँ रंग-कर्मी द्वारा ओकर अभिनयो होइत रहल। परन्तु जे लोक-स्वीकृति उमापतिकृत **'परिजातहरण'**केँ भेटल से आन नाटककेँ नहि। पारिजातहरणक अभिनयमे कुशलता, कीर्त्तनियाँ अभिनेताक प्रधान योग्यता मानल जाइत छल। स्वयं ओहि नाटकमे एहन विशेषता निहित अछि जे सहृदय दर्शक ओ श्रोताक आकर्षणक विन्दु बनैत रहल अछि। पारिजातहरणक गीत सभ माधुर्य ओ वस्तुवैशिष्ट्यक कारणेँ स्वतन्त्रो रूपमे लोकप्रिय भेल।

उमापतिक एकहि गोट नाटक एखन धरि उपलब्ध छनि। किछु स्फुट गीत सभ सेहो लोकमे प्रचलित छनि। परन्तु जखन मैथिलीक लोकप्रिय कविक गणना होम' लगैछ तँ विद्यापतिक पश्चात् उमापतिहिक नाम लेल जाइत छनि।

अतः स्वभावतः उमापतिपर विचार-चर्चा विशेष रूपसँ भेल अछि। हिनक नाटक पारिजातहरणक अनेकानेक संस्करण विभिन्न विद्वान्क संपादनमे बहराइत रहल अछि। ई सौभाग्य उमापतिएक नाटककेँ छनि जकर एखन धरि कम सँ कम सात गोट संपादित संस्करण प्रकाशित भ' चुकल अछि।

परन्तु एतबा होइतो ई निस्संकोच कहल जा सकैत अछि जे उमापति सन साहित्यकारक परिचय ओ जीवनवृत्त अद्यापि तमसाच्छन्ने अछि। विवादशून्य नहि भ' सकल अछि। एतेक प्रसिद्ध ओ लोकप्रिय साहित्यकारक आश्रयदाता, स्थितिकाल, परिचय इत्यादिक सम्बन्धमे साधार निश्चयात्मकता नहि आबि सकल अछि। हिनक जे स्फुट गीत सभ यत्र-तत्र भेटैत अछि तकरो एकत्र करबाक कोनो प्रयास नहि कयल गेल अछि। एहि सभ विन्दुपर जावत व्यवस्थित कार्य सम्पन्न नहि भ' जाइछ तावत् उमापतिक व्यक्तित्वक सम्पूर्ण छवि देखि पायब कठिन अछि।

उमापतिक आश्रयदाताक स्थितिकालविषयक मतभिन्नता

प्राचीन ओ मध्यकालक बड़ कम कवि अपन रचनामे अपन परिचय देने छथि। उमापतियो एही कोटिक कविमे अबैत छथि। ई अपन कृतिमे, विशेषतः पारिजातहरणमे अपन परिचयक सम्बन्धमे किछु संकेत नहि देने छथि। देने छथि केवल अपन आश्रयदाताक संकेत, आश्रयदाताक नामक उल्लेख, हुनक पत्नीक नामक उल्लेख।

जे कवि अपन परिचय नहि दैत छथि तनिक स्थितिकाल आश्रयदाताक स्थितिकालसँ निर्धारित कयल जाइछ आ तखन हुनक परिचय स्थिर करवाक प्रयास कयल जाइछ। उमापतियो केर सम्बन्धमे एही प्रक्रियाक अवलम्बन करव अपेक्षित होयत।

यदि हुनक आश्रयदाताक परिचय ओ समयक सम्बन्धमे निश्चित प्रमाण भेटि सकय तँ उमापतियो केर समय आ परिचय निर्धारित करब सम्भव भ' जायत। परन्तु संयोग ई अछि जे एही बिन्दुपर सबसँ अधिक विवाद अछि। एहि विषयमे विभिन्न विद्वानक अभिमतमे पारस्परिक सामंजस्य नहि अछि तथा एहि सभमे समन्वय स्थापित करब कथमपि संभव नहि अछि।

आश्रयदाताक सम्बन्धमे नाटककारक कृतिकेँ सर्वप्रथम देखब अपेक्षित अछि। पारिजातहरण नाटकमे नाटककार अपन आश्रयदाताक उल्लेख बेर-बेर कयलनि। ई उल्लेख अछि आरम्भक दुहू नान्दी श्लोकमे, प्रस्तावना-वाक्यमे तथा नाटकक गीत सभक भणितामे।

पारिजातहरण भगवती-वन्दनासँ आरम्भ होइत अछि। गीतक अन्तमे **'आसिखबानी'**क रूपमे 'सकलसभा'क जयकामना कयल गेल अछि। तत्पश्चात् संस्कृतमे दुइ गोट नान्दी श्लोक देल गेल अछि। प्रथम नान्दीमे 'हिन्दूपति'क मंगल-कामना कयल गेल अछि—

क्षोणी यस्य रदे मृणालशकलं मूलार्णवः पल्वलम्।
स्वर्गंगा वसनं विभाति गगनं कस्तूरिकालेपनम्॥
चन्द्रश्चारु-ललाट-चन्दनमुडुश्रेणीगता मालयताम्।
तेन श्रीधरणीधरेण हरिणा हिन्दूपतिः पाल्यताम्॥

[जनिक दन्तपर कमल-दण्ड-खण्ड सदृश पृथ्वी छनि, समुद्र लघुजलाशय सदृश छनि, स्वर्गगंगा वस्त्रवत् शोभायमान छनि, आकाशे जनिक कस्तूरिका-लेपन छनि, चन्द्रमा जनिक ललाटक चन्दन ओ तारागण जनिक माला छनि ताहि (वराहरूप) श्री धरणीधर हरि द्वारा हिन्दूपति पालित होथु।]

दोसर नान्दीश्लोकमे **'मैथिलेश'**क स्तुति करैत हुनका द्वारा प्रेक्षकक रक्षाक कामना कयल गेल अछि—

यस्यास्यं पूर्णचन्द्रः स्ववचनममृतं दिग्जयश्रीश्च लक्ष्मी—
र्दोः स्तम्भः पारिजातो भ्रुकुटिकुटिलता संगरे कालकूटः ।
तीव्रं तेजोऽग्निरौर्वः पदभजनपरा राजराज्यस्तटिन्यः
पारावारो गुणानामयमतुलगुणः पातु वो मैथिलेशः ।।

[जनिक मुख पूर्णचन्द्र रूप छनि, निज वचन अमृत छनि, दिग्जय-श्री लक्ष्मी छनि, भुजदण्ड पारिजात-स्तम्भ थिकनि, जनिक भ्रू-भंग संग्राममे कालकूट (विष) छनि, तीव्र तेज वाडवाग्नि रूप छनि, जनिक पद-भजन-परायण राजागणक श्रेणी नदी रूप छनि, गुण समूहक जे पारावार छथि से ई अतुल-गुण 'मैथिलेश' अहाँ लोकनिक रक्षा करथु ।]

एकरा पश्चात् सूत्रधार प्रवेश क' नाट्य-प्रस्ताव करैत अछि । एहि प्रस्तावनामे नाटकक आदेष्टाक रूपमे 'हिन्दूपति'क उल्लेख करैत हुनका लेल अनेकशः विशेषणक प्रयोग कयल गेल अछि । एहि ठाम **हिन्दूपति हरिहरदेवकें** यवन-वनकें उच्छिन्न कयनिहार कराल करवाल स्वरूप, विनष्ट होइत चतुर्वेदक पथकें अपना प्रताप सँ प्रकाशित कयनिहार तथा भगवान् विष्णुक दशम अवतार कहल गेलनि अछि—

आदिष्टोऽस्मि, यवनवनच्छेदनकरालकरवालेन, विच्छेदगतचतुर्वेदपथ-प्रकाशक प्रतापेन, भगवतः श्रीविष्णोर्दशमावतारेण, हिन्दूपतिश्रीहरिहरदेवेन यथा उमापत्युपाध्यायविरचितं नवपारिजातमंगलमभिनीय वीररसावेशं शमयन्तु भवन्तो भूपाल-मण्डलस्य ।

गीत सभक भणितामे '**हरिहरदेव**' नहि, केवल '**हिन्दूपति**' नाम देल गेल । एहन सतरह गोट गीत अछि जाहिमे हिन्दूपति नाम उल्लिखित अछि । एहूमे चौदह गोट गीतमे हुनक रानियो सभक नामक उल्लेख अछि । उल्लिखित रानी सभक नाम अछि—माहेसरि देवि, 'पटमहिषी देवि, जगमाता देइ तथा महारानी । उमापतिक आश्रयदाताक प्रसंग एतत्रे अन्तःसाक्ष्य पारिजातहरणमे विद्यमान अछि । **गीतरत्नावली** नामक संग्रह-ग्रन्थमे कविशेखर बदरीनाथ झा उमापतिक एकटा स्फुट गीत देने छथि जकर भणितामे **'छत्रपति भूप'क** नाम आयल अछि ।

हिन्दूपति हरिहरदेवक परिचय ओ स्थितिकालक सम्बन्धमे स्पष्टतः तीन गोट मान्यता अछि । प्रथम, ग्रियर्सन हिनका कर्णाट वंशक अन्तिम राजा **हरसिंह देव** सँ अभिन्न मानने छथि जनिक राजत्वकाल चौदहम शताब्दीक प्रथम चरण छलनि । दोसर, पं० चेतनाथ झा **हिन्दूपति हरिहरदेवकें भपटियाहीक** निकट नेपालमे स्थित **मकमानीक** राजा मानने छथि एवं समय अठारहम शताब्दी । तेसर, डा०

जयकान्त मिश्र हिन्दूपतिकेँ बुन्देलखण्डक राजा **हिन्दूपति सिंह सँ अभिन्न** मानने छथि जनिक समय अठारहम शताब्दी छलनि ।

उमापतिक काल-निर्धारणक प्रसंग जतेक पर्यालोचन भेल अछि से एहि तीनू मतमे सँ कोनो एकटाकेँ मेह बना क' घुमैत रहल अछि । एहि तीनू मतक समर्थनमे जे किछु कहल गेल अछि ओहिमे प्रमाणक स्थानमे अनुमान ओ तर्कक परिमाण अधिक अछि । खंडन ओ मंडन दुहूमे व्यक्तिगत आग्रहकेँ वेसी स्थान देल गेल अछि ।

जॉर्ज ग्रियर्सन **मैथिलेश** पदकेँ आधार मानि क' **हिन्दूपति** उपाधि ओ प्रस्तावनामे देल गेल विशेषणक बल पर **हरिहरदेवकेँ हरसिंह देव** मानि लेलनि । अपन सम्पादित पारिजातहरणक भूमिकामे अपन मतक समर्थनमे विस्तारसँ तर्क उपस्थित कयलनि । पुनः एक आओर निबन्धमे पं० चेतनाथ झाक मतक खण्डन करैत अपन विचारकेँ स्थिर कयलनि । एहि क्रममे ओ अपन स्थापनामे एकेटा दुर्बल विन्दु देखलनि जे हरसिंह देव कोनो यवन सेनाकेँ पराजित नहि कयने छलाह । परन्तु तकरो समाधान देलनि जे मुसलमान इतिहासकार हरसिंह देव द्वारा यवन सेनाक पराजयक उल्लेख नहि कयलनि । यद्यपि ई ने कोनो एहन दुर्बल विन्दु छलनि, ने तकर समाधान अपेक्षित छल ।

ग्रियर्सनक स्थापनामे जे यथार्थ त्रुटि छलनि ताहि दिस ओ ध्याने ने देलनि । कर्णाट वंशक अन्तिम राजाक नाम छलनि हरसिंह देव । ग्रियर्सन हरिहरदेवकेँ **हरसिंहक** नामान्तर मानि लेलनि । परन्तु अन्य कोनो समकालिक स्रोतसँ एकर पुष्टि नहि भ' सकल अछि । नामक ई अन्तर सामान्य नहि मानल जा सकैत अछि । हरसिंहदेव हिन्दूधर्म ओ वैदिक आधार-पद्धतिक संरक्षक अवश्य छलाह । परन्तु हुनका 'हिन्दूपति' उपाधिसँ भूषित नहि देखैत छियनि । वीरेश्वर, गणेश्वर, चण्डेश्वर, गोविन्ददत्त इत्यादि जे हुनक संरक्षणमे धर्मशास्त्रीय निबन्धक रचना कयलनि आ अपन संरक्षकक प्रभूत प्रशंसा कयलनि, सेहो सभ कतहु हुनका 'हिन्दूपति' कहि क' सम्बोधित नहि कयने छथि । नेपालोक मल्लराज-वंशावलीमे हरसिंहदेवक बेरबेर उल्लेख कयल गेल अछि किन्तु ओहू ठाम हरसिंहक लेल हिन्दूपति उपाधि अनुपस्थित अछि । जाहि उपाधिकेँ उमापति एतेक महत्त्व देलनि से यदि हरसिंहक लेल प्रयुक्त रहैत तँ हुनक संरक्षित लेखकक रचनामे तथा नेपालक वंशावलीमे अवश्य उल्लिखित होइत ।

ज्योतिरीश्वर हरसिंह देवक आश्रयमे रहि धूर्त्तसमागम नाटक ओ पँचसायक नामक कामशास्त्रीय ग्रन्थक रचना कयने छलाह से निर्विवाद तथ्य अछि ! अपन

दुहू रचनामे हरसिंहक स्तुति कयने छलाह। परन्तु ओहूमे 'हिन्दूपति' विरुद नहि अछि। यदि ज्योतिरीश्वर ओ उमापति एकहि व्यक्तिक आश्रयमे अपन नाटकक रचना कयने छलाह, तँ की कारण जे उमापति अपन आश्रयदाताकेँ **हिन्दूपति** कहैत बिसरैत नहि छथि आ ज्योतिरीश्वर एकहुबेर एहि शब्दकेँ स्मरणो ने करैत छथि ?

पारिजातहरणमे हिन्दूपतिक रानी सभक उल्लेख बहुत बेर कयल गेल अछि। परन्तु जे स्थिति **हिन्दूपति** विरुदक अछि सैह हुनक रानीक नामो सभक। उमापति जँ पारिजातहरणक गीतक भणितामे अपन आश्रयदाताक नामक संग हुनक रानियोक नामक उल्लेख आवश्यक बुझलनि तँ हुनक समकालीन **ज्योतिरीश्वर धूर्त्तसमागमक** मैथिली गीतमे किएक अनावश्यक बुझलनि ?

मैथिली धूर्त्तसमागम नाटक नवोपलब्धि थिक तेँ ग्रियर्सनकेँ ई ज्ञात नहि छलनि। परन्तु एहिसँ इतर सभ सामग्री हुनका समक्ष छलनि तथापि ओ एहि तथ्यपर विचार नहि कयलनि जे (क) हरसिंहक नामान्तर 'हरिहर' नहि छलनि ; (ख) हरसिंहकेँ कतहु 'हिन्दूपति' विरुद नहि देल गेल छनि ; (ग) उमापति द्वारा उल्लिखित हिन्दूपति हरिहरदेवक पत्नी **माहेश्वरी, जगमाता, पटमहिषी, महारानी** इत्यादिमे एकहु गोटेक नाम हरसिंहक पत्नीक रूपमे नहि देखल गेल अछि।

अन्ततः ग्रियर्सनक एके गोट आधार रहि जाइछ, **'मैथिलेश'** पद। हरसिंह देव **'मिथिलेश'** छलाह आ प्रकारान्तरसँ **'मैथिलेश'** सेहो कहल जा सकैत छथि। किन्तु एहि आधारपर ग्रियर्सनक स्थापना मान्य नहि भ' सकैत अछि।

पं० चेतनाथ झा पारिजातहरणक भूमिकामे उमापतिक आश्रयदातापर विचार लकथन अछि। हुनक कथन छनि जे—'यवननाशक ई हरिहरदेव के छलाह ? नेपाल मध्य जे भपटियाही स्टेशनसँ उत्तर सप्तरी प्रगन्ना अछि ताहि मध्य नेपाल राजक हनुमान नगर कचहरी अछि ताहि समीप मकमानी स्थान मध्य ई स्वाधीन राजा छलाह। कवि विद्यापति लिखनावली ग्रन्थ मध्य सप्तरी वर्णन कएने छथि। ई राजा स्वाधीन छलाह। मुसलमानी अमलदारी नेपालमे कहियो नहि भेल तेँ ओ कवि (उमापति) हिनके आश्रित छलाह, तेँ ई सब विशेषण (हिन्दूपति आदि) देल गेलैन्हि।'

चेतनाथ झा अपन मतक समर्थनमे कोनो प्रमाण नहि देलनि। हुनक स्थापना स्पष्टतः ऐतिह्य ओ किंवदन्तीपर आधृत छनि। उमापतिक आश्रयदाताक प्रसंग मुख-परम्परासँ जे सुनने छलाह तकरे लिपिबद्ध क' देलनि। यद्यपि किंवदन्ती सर्वथा निराधार नहि होइत छैक। ओकरा पाछाँ किछु ने किछु सत्य अवश्य रहैत छैक।

परन्तु ओकर सतर्क परीक्षण क' सत्यक उद्घाटन अपेक्षित भ' जाइत छैक। पंडित महोदय एहि आवश्यकताकेँ महत्त्व नहि देलनि। तेँ ई देखबाक प्रयास नहि कयल जे भपटियाहीसँ उत्तर मकमानी नामक स्थान छैको वा नहि। मकमानी राजाक सम्बन्धमे आर विशेष खोद-बेद क' आर अधिक विवरण देब अनपेक्षित बुझलनि अथवा तद्विषयक सामग्रीक अभाव छलनि।

दोसर विचारणीय विषय अछि 'मैथिलेश'क प्रशस्ति। मकमानीक राजा हरिहरदेव मैथिलेश नहि छलाह। तखन हुनका आदेशसँ रचित नाटकमे मैथिलेशक प्रशस्ति किएक? एकर औचित्य सिद्ध करबाक लेल ओ कहैत छथि–'कविक काल-मध्य मुसलमानक राजत्व भेने सनातन धर्मक अवनति छल; ताही दुःखसँ कविक ई मङ्गल (वराह-स्तुति) बुझब। तदन्तर मैथिलेशक वर्णन अछि। कविक समयमध्य मिथिलेश महाराज नरपति ठाकुर ओ महाराज राघवसिंह छलाह। कवि हुनके प्रजा छलाह। ओ मुसलमानक अमलदारी रहलो सन्ताँ ई दुनू महाराज मिथिला मध्य तेहन प्रबन्ध कयने छलाह जे कोनहु तरहक अधर्म मिथिला मध्य ताहि काल नहि छल।'

एहि तर्ककेँ संगत नहि मानल जा सकैछ। कारण प्रथम श्लोकमे कामना अछि जे वराह भगवान हिन्दूपतिक पालन करथु ओ दोसर श्लोकमे कहल गेल अछि जे मैथिलेश अहाँ सभक रक्षा करथु। सूत्रधारकेँ हिन्दूपति हरिहरदेवसँ आदेश देल गेल जे दर्शक रूपमे उपस्थित भूपालमण्डलक वीररसावेशक शमन नव पारिजात मंगलक अभिनय द्वारा करू। ओहि दर्शकमे आदेष्टा सेहो छल होयताह। अतः हिन्दूपतिसहित भूपालमण्डलक रक्षा मैथिलेश द्वारा होयबाक कामनासँ सिद्ध होइछ जे मैथिलेश नरपति ठाकुर ओ राघवसिंह हिनका लोकनिसँ ऊपर अभिभावक कोटिक राजा छलाह। किन्तु एहन मानब असंगत ओ इतिहासविरुद्ध होयत तेँ अमान्य अछि।

डॉ० जयकान्त मिश्र उमापतिकेँ नरपति ठाकुर ओ राघव सिंहक सम-कालिक मानियो क' हुनक आश्रयदाता बुन्देलखण्डक राजा हिन्दूपति सिंहकेँ मान-लनि अछि। हुनक विचार छनि जे मिथिलाक विद्वान् विभिन्न प्रान्तमे जाय अपन विद्वत्ताक बलपर सम्मानित होइत छलाह। बुन्देलखण्डहुक राजसभामे मैथिल विद्वानक सम्मान छल। जयकान्त बाबू नलोदय काव्यक एक गोट हस्तलेखक प्रमाण प्रस्तुत कयलनि। लक्ष्मण संवत् ५७७ मे हेमाङ्गद द्वारा अपन सहचर उमापतिक हेतु ई प्रतिलिपि कयल गेल छल। ओहि हस्तलेखक पुष्पिकामे देल अछि–

"माघे मासि समुद्रसप्तविशिखैः शुक्ले द्वितीयातिथौ।
भानौ रोगविनाशकारिणि मुदा वर्षेतिधान्यप्रदे॥

प्रालेखीति नलोदयो गिरिसुता पादारविन्दालिना ।
प्रीत्यै श्रीमदुमापतेः परधिया हेमाङ्गदेनाचिरम् ॥

लसं ५७७ माघशुक्लद्वितीयातिथौ श्रीउमापतये सहचराय श्रीहेमाङ्गदेन नलोदयोऽलेखीति शिवमास्तां लेखपितृलेखकयोश्च ।"

एहि आधार पर श्रोजयकान्त बाबू अनुमान कयलनि अछि जे संभवतः महेश ठाकुर, हेमाङ्गद ठाकुरक संग उमापतियो बुन्देलखण्ड गेल होयताह । उपर्युक्त उद्धरणमे कोनो संकेत नहि अछि जे उमापति पारिजातहरणेक रचयिता थिकाह, ने यैह सूचित होइत अछि जे प्रतिलिपिकार हेमाङ्गद ठाकुरे थिकाह, संगहि एहिसँ बुन्देलखण्डोक संग कोनो सम्बन्ध नहि संकेतित होइत अछि ।

उपर्युक्त आपत्तिकेँ छोड़ियो देल जाय तथापि जयकान्त बाबूक अभिमतमे एहूसँ गम्भीर आपत्ति वर्त्तमान अछि। उमापतिक आश्रयदाता 'हिन्दूपति हरिहरदेव' छलाह, बुन्देलखण्डक राजा हिन्दूपति सिंह छलाह । हुनक नाम हरिहर नहि छलनि । 'हिन्दूपति' बुन्देलखण्डक राजाक व्यक्तिवाचक संज्ञा छलनि मुदा उमापतिक आश्रयदाताक ई 'विरुद' छलनि ।

फेर एहू ठाम 'मैथिलेश' प्रशस्ति विचार-संकट उत्पन्न करैत अछि। किछु मैथिल विद्वान्केँ आश्रय द' देने हिन्दूपति सिंह मैथिलेश कहयबाक अधिकारी कोना भ' सकैत छलाह । यदि ई प्रशस्ति अपन मातृभूमिक राजा नरपति ठाकुर वा राघव सिंहक लेल प्रयुक्त मानल जाय, तँ तकरो विरुद्ध वैह तर्क समीचीन होयत जे चेतनाथ झाक मतक प्रसंग देल गेल अछि ।

उमापतिक आश्रयदाताक प्रसंग श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' बाबू भोलालाल दासक अल्पचर्चित मतक चर्चा अपन पारिजातहरणक भूमिकामे कयने छथि। तदनुसार उमापतिक आश्रय चौदहम शताब्दीमे स्थित विजयनगरम् राज्यक संस्थापक हरिहरदेव-वुक्कदेव छलाह। परन्तु हरिहरदेव नाम समान रहितो, हिन्दूधर्मक संरक्षक रहितो, यवन सैन्यकेँ पराजित करबाक यशस्वी होइतो, यथार्थमे हिन्दूपति भैयो क' ओ 'हिन्दूपति'—विरुद-विभूषित नहि छलाह। मैथिलेश तँ कथमपि नहि छलाह ।

नान्दीमे प्रयुक्त 'मैथिलेश'क अप्रामाणिकता

वस्तुतः उमापतिक आश्रयदाता वैह राजा मानल जा सकैत छथि जे मैथिलेश होथि, हिन्दूपति-विरुदयुक्त हरिहरदेव होथि तथा हुनक पत्नी सभक नाम माहेसरि, जनमाता इत्यादि होइन ।

चौदहम शताब्दीसँ अठारहम शताब्दी धरिक मिथिलाक राजनीतिक इतिहासमे एहन कोनो राजाक अस्तित्व नहि अछि। यत्किंचित् साम्याभास हरसिंह देवक संग भेटैत अछि। तखन मान' पड़त जे सुमति-सुगुरु कविपण्डित मुख्य उमापति उपाध्याय अपन आश्रयदाताक नाम अशुद्ध लिखलनि अथवा नाटकक प्रतिलिपिकार सभ अशुद्ध लिखलक। परन्तु दुनूमे सँ कोनो संभावना मान्य नहि अछि। कारण एखन धरि पारिजातहरणक जतेक मुद्रित वा हस्तलिखित प्रति देखल गेल अछि ताहि सभमे 'हिन्दूपति हरिहरदेव' मात्र पाठ भेटैत अछि, हरसिंह देव नहि। अतः कोनो पाठान्तरक अभावमे 'हरिहर' नामपर शंका करबाक अवकाश नहि अछि। तखन 'मैथिलेश' शब्दहि पर शंका कयल जा सकैछ जे ई मूलपाठ थिक वा नहि। सर्वप्रथम एकरे निराकरण आवश्यक।

मैथिलेश-प्रशस्तिबाला दोसर नान्दीक सूक्ष्म पर्यालोचनसँ एहि शंकाक हेतु आधार भेटैत अछि। एहि श्लोकक अन्तिम चरणमे छन्दक कोनो त्रुटि नहि अछि परन्तु अर्थमे पुनरुक्ति जकाँ देखि पड़ैत अछि। अन्तिम चरण थिक—

पारावारो गुणानामयमतुलगुणः पातु वो मैथिलेशः।

एहि ठाम जखन मैथिलेशकेँ गुणसमूहक पारावार कहि देल गेलनि तखन पुनः 'अतुलगुण' ओ 'अयम्' सर्वनाम देबाक कोन प्रयोजन छल ?

यदि उमापति 'मैथिलेश'क प्रति आदर व्यक्त करबाक विशेष इच्छुक छलाह तँ नाटकमे एकोटा गीत हुनका किएक ने समर्पित कयलनि ? एकोटा गीतमे मैथिलेशक भणिता किएक ने देलनि ?

अतः ई मानबाक हेतु बाध्य होम' पड़ैत अछि जे की तँ दोसर नान्दीश्लोके प्रक्षेप थिक अथवा एहिमे परिवर्तन कएल गेल अछि आ कोनो शब्द हटा क' ओकरा स्थानमे 'मैथिलेश' शब्द बैसा देल गेल अछि।

पारिजातहरणक जतेक मुद्रित संस्करण अछि से दुइ गोट संस्करणक अनुसरण कयने अछि, प्रथम थिक मिथिला-पब्लिशिंग कम्पनीक १८९३ ई०क संस्करण ओ दोसर थिक ग्रियर्सनक संस्करण। दुहूमे 'मैथिलेश' शब्दयुक्त दोसर नान्दी श्लोक विद्यमान अछि। दुहूमे मतैक्य रहने उपर्युक्त शंकाक समाधान हेतु विशेष उपयोगी नहि अछि। एहि लेल अन्य स्रोतक अन्वेषण करबाक आवश्यकता अछि।

मुद्रित संस्करणसँ भिन्न हमरा तीन गोट एहन प्रमाण भेटल अछि जाहि आधारपर हम कहि सकैत छी जे दोसर नान्दी श्लोक थिक तँ कविकृत परन्तु परवर्त्ती कालमे ओहिमे पाठ-परिवर्त्तन क' देल गेल अछि।

उनैसम शताब्दीमे एक जन मैथिल विद्याकर मिश्र छलाह। ओ **'विद्याकर-साहस्रक'** नामसँ एक ग्रन्थक निर्माण कयने छलाह। एहि ग्रन्थमे विभिन्न प्राचीन कविक एक हजार सूक्तिक संग्रह कयने छथि। एहिमे मिथिलोक प्राचीन कवि लोकनिक संस्कृत सूक्ति सभ संकलित छनि। म० म० डा० उमेश मिश्र एकर सम्पादन क' १९४२ ई०मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयसँ प्रकाशित करओने छलाह। एहि ग्रन्थमे पारिजातहरणक दुनू नान्दी श्लोक उद्धृत अछि जकर संख्या क्रमशः ९९२ ओ ९९३ छैक। दोसर नान्दी श्लोकमे किछु शब्द खण्डित छैक परन्तु अन्तिम चरण सुरक्षित छैक, से निम्न रूपक छैक—

पारावारो गुणानामतुलरसमयः पातु हिन्दूपतिर्वः ॥

प्रथम नान्दी श्लोकक पाठ यथावत् अछि। ओहिमे कोनो अन्तर नहि अछि।

दोसर प्रमाणसँ सेहो ई पाठान्तर सिद्ध होइत अछि। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् (पटना) हस्तलिखित पोथीक विवरण प्रकाशित कयने अछि। ओकर छठम खण्डमे बिहार रिसर्च-सोसाइटी (पटना) द्वारा खोजमे उपलब्ध प्राचीन हस्तलिखित पोथीक अप्रकाशित विवरणकेँ प्रकाशित कयल गेल अछि। एहि खण्डमे सौराठ (मधुबनी) ग्राम वास्तव्य म० म० रज्जे मिश्रक घरमे स्थित पारिजातहरणक एक प्राचीन हस्तलिखित प्रतिक विवरण देल गेल अछि। एहि विवरणमे आरम्भिक अंशक किछु उद्धरण देल गेल अछि। उद्धरणमे उपरिचर्चित दोसर नान्दी श्लोक अछि। एहू उद्धरणमे वैह पाठ अछि जे विद्याकरसहस्रकमे देखल गेल अछि। अर्थात् मैथिलेशक स्थानमे 'हिन्दूपति' पाठ अछि। **अयमतुलगुणः**क स्थानमे **अतुलरसमयः** पाठ अछि।

हमरा पारिजातहरणक एकटा हस्तलिखित पोथी उपलब्ध भेल अछि। डेढ़-पओने दू सय वर्ष पुरान होयबाक अनुमान अछि। एहि प्रतिमे अशुद्धि बहुत अछि। पारिजातहरणक आरम्भिक मंगलगीत ओ पहिल नान्दी श्लोक नहि छैक। अन्तसँ सेहो किछु अंश अनुपस्थित छैक। एहिमे दुइ गोट नव गीत अछि जे एखन धरिक संस्करणमे नहि देखल गेल अछि। एहि गीतक भणिता उमापतिक परिचय-निर्धारणमे महत्त्वपूर्ण सूत्र सिद्ध होयत। मुदा से पाछाँ विचार करब। एखन विचारणीय अछि, दोसर नान्दी श्लोकक पाठ। हस्तलेखक आरम्भमे 'अपि च' देलाक पश्चात् द्वितीय नान्दी श्लोक देल गेल अछि। एहू ठामक श्लोकमे किछु पाठान्तर ओ अशुद्धिक अछैतो **'मैथिलेश'**क स्थानमे **'हिन्दूपति'** इएह पाठ अछि।

एहि तीन-तीन गोट साक्ष्यक प्रामाणिकताकेँ अमान्य नहि कयल जा सकैत अछि। हमर तँ विश्वास अछि जे अन्यो हस्तलेख सभक परीक्षण कयल जाय तँ ओहिसँ **'हिन्दूपति'** पाठ समर्थित होयत।

समस्त तथ्यक आधारपर हमर निष्कर्ष अछि जे पारिजातहरणक दोसर नान्दी श्लोकमे प्रथमे नान्दी जकाँ मूलपाठ 'हिन्दूपति' थिक। वैह कविकृत पाठ थिक। 'मैथिलेश' पाठ कविकृत नहि, कोनो आन व्यक्ति द्वारा कयल गेल परवर्ती परिवर्त्तन थिक।

मैथिलेश-पाठ-प्रक्षेपक कारण

प्रश्न ई उठैत अछि, एहन परिवर्त्तन भेल किएक ? अनवधानमे भेल पाठान्तर थिक वा सावधान परिवर्त्तन ? हिन्दूपतिकेँ हटा क' 'मैथिलेश' शब्दकेँ तेना व्यवस्थित क' देल गेल अछि जे छन्दमे कोनो त्रुटि नहि अयलैक अछि। तेँ ई कोनो छन्दज्ञाता व्यक्तिक कयल परिवर्त्तन थिक से स्वतः स्पष्ट भ' जाइत अछि। परन्तु परिवर्त्तनकर्त्ता 'अतुलरसमयः'क स्थानमे 'अतुलगुणः' विशेषणक प्रयोग क' अर्थकेँ कतेक क्षत क' देलनि तकर अनुभव नहि क' सकलाह। ऐतिहासिक विसंगति जे भेल तकर परिणाम देखिए रहल छी।

पारिजातहरण नाटक अत्यन्त लोकप्रिय रहल अछि। राजसभामे सेहो एकर अभिनय विशेषकाल होइत छल। खण्डवलाकुल केर मिथिलेश लोकनिक मनोरंजनार्थ जे कीर्त्तनियाँ अभिनय होइत छल ताहिमे पारिजातहरणक विशेष स्थान छल। अन्य नाटक सभ, यथा—आनन्दविजय, रुक्मिणीस्वयंवर, उषाहरण, हर्षनाथक उषाहरण ओ माधवानन्द ओ भानुनाथक प्रभावतीहरण मिथिलेशेक आदेशसँ रचित भेल छल। सभमे कोनो ने कोनो रूपमे मिथिलेशक प्रशस्ति अछि। केवल पारिजातहरणेमे एकर अभाव छल। एकर अभिनयकालमे मिथिलेश-प्रशस्तिक अभाव खटकब स्वाभाविक छल। एहि आवश्यकताक अनुभव भेलापर मंच-प्रयोगार्थ कोनो नव प्रशस्ति नहि बना क' नान्दिएक दोसर श्लोकमे 'मैथिलेश' शब्द बैसा देल गेल। एहना स्थितिमे 'अयम्' सर्वनाम उचिते कहल जायत।

अयम् अतुलगुणः पातु वो मैथिलेशः।
[ई अतुलगुणः मैथिलेश अहाँ सभक रक्षा करथु।]

पारिजातहरणक जे संस्करण आरम्भिक कालमे मुद्रित भेल से सभ कोनो ने कोनो रूपमे राज दरभंगासँ सम्पृक्त छल। सर्वप्रथम संस्करण १८९३ ई०मे **मिथिला पब्लिशिंग कम्पनी**, दरभंगाक द्वारा भेल छल। एहि प्रकाशनक आयोजक बाबू विन्ध्यनाथ झा छलाह जे राजसम्पर्किए नहि अपितु खण्डवलाकुलक सम्बन्धियो वर्गमे छलाह। कहल तँ इहो जाइछ जे कवीश्वर चन्दा झा एकर सम्पादन कयने छलाह। एही संस्करणक आधारपर चेतनाथ झा १९१७ ई०मे नव संस्करणक सम्पादन कयने छलाह।

ग्रियर्सन महोदय जे सम्पादन कयलनि से तीन गोट प्रतिक आधार पर। पहिल तँ १८९३ बाला मुद्रित प्रति छलनि । दोसर हस्तलिखित प्रति महाराज रमेश्वर सिंहसँ प्राप्त भेल छलनि। तेसर प्रति जोगियारा ग्रामक जमींदार बाबू श्रीनारायण सिंह प्रदान कयने छलथिन। श्रीनारायण सिंह महाराज लक्ष्मीश्वरे सिंहक समकालसँ दरभंगा राजक खैरखाह ओ मित्रमण्डलीमे छलाह। हिनको ओ हस्तलेख दरभंगा-राजेक परिसरक कोनो व्यक्तिसँ भेटल होयतनि । घुमा-फिरा क' दुनू संस्करणक आधार-सामग्रीपर खण्डवलाक सम्पर्क देखि सहजे अनुमान कयल जा सकैछ जे ओहि सभमे परिवर्तित 'मैथिलेश' पाठ रहब स्वाभाविक छल। एकरा बाद जे कोनो संस्करण भेल वा आलोचना भेल से सभ उपर्युक्ते संस्करणक आधारपर। कोनो सम्पादक, इतिहासकार वा आलोचक नव हस्तलेख ताकि ओकर तुलनात्मक अध्ययन करबाक कष्ट नहि कयलनि।

'मैथिलेश' पाठ अप्रामाणिक सिद्ध भेला पर उमापतिक यथार्थ आश्रय-दाताक परिचय स्थिर करब, हुनक समय निर्धारित करब ओतेक कठिन नहि रहि जाइछ।

आश्रयदाताविषयक अन्तःसाक्ष्य

पारिजातहरण ओ उमापतिक अद्यापि उपलब्ध स्फुट गीत सभमे आश्रय-दाताक प्रसंग कवि जतेक सूचना देने छथि तकरा एक बेर व्यवस्थित रूपसँ देखि लेब आवश्यक प्रतीत होइत अछि।

नाटकक प्रस्तावना-वाक्य मात्रमे 'हिन्दूपति हरिहरदेव' नाम कहल गेल अछि, अन्यत्र सर्वत्र 'हिन्दूपति' विरुदहिक प्रयोग कयल गेल अछि। से आरम्भक दुहू नान्दी श्लोक (दोसर नान्दी श्लोकमे मैथिलेश पाठ अप्रामाणिक सिद्ध भेला पर) तथा सतरह गोट गीतक भणितामे ई नाम प्रयुक्त अछि।

हमरा लग स्थित पारिजातहरणक हस्तलिखित प्रतिमे दुइ गोट गीत अधिक नवीन अछि। एहिमे एकटा गीतक भणितामे 'हिन्दूपति'क प्रयोग अछि। दुइ गोट स्फुट गीतमे सेहो ई विरुद भेटल अछि।

उमापतिक आश्रयदाताक निर्धारण करबामे, ओकरा निर्विवाद सिद्ध करबामे हुनक रानी सभक नाम महत्त्वपूर्ण साधन सिद्ध होयत। नाटकक मुद्रित संस्करणमे चारि गोट रानीक नाम आयल अछि। गीत संख्या ६, ७, ११, १६ ओ २० मे माहेसरि देइ केर नाम अछि । १०म गीत चेतनाथ झा संस्करणमे निम्नलिखित भणिताक चरणयुक्त अछि—

सुमति उमापति भाने। पुनमति भजु भगवाने॥

परन्तु ग्रियर्सन एहि स्थानमे देने छथि—

हिन्दूपति जिउ जाने। महेसरि देइ विरमाने ॥
सुमति उमापति भाने । पुनमति भजु भगमाने ॥

एहिना ग्रियर्सन-संस्करणक १३म गीतक भणिताक चरणमे हिन्दूपति-माहेसरि देइक नाम अछि परन्तु चेतनाथ झा संस्करणमे माहेसरि देइक स्थानमे 'पट-महिषी'क नाम अछि। दुहू संस्करणक गीत संख्या—३, ८ ओ १७ मे 'पटमहिषी'क नाम अछि । ५, ९ ओ १५ संख्यक गीतमे 'जगमाता देइ'क नाम अछि। १२म गीतमे 'महारानि'क उल्लेख अछि। नाटकक दुनू नवका गीतमे—एकटामे 'महारानि' ओ दोसरमे 'लखिमा' नामक पाँचम रानीक नाम अंकित अछि। कविशेखर बदरीनाथ झा द्वारा 'मैथिली-गीत-रत्नावली'मे संकलित उमापतिक एकटा स्फुट गीतमे एकटा नवे राजाक नाम 'छत्रपति भूप' देल गेल अछि। उमापतिक कृतिमे अन्तःसाक्ष्यक रूपमे एतवे सूचना देल गेल अछि। उमापति-प्रदत्त ई अन्तःसाक्ष्य जाहि राजाक संग समग्ररूपेण घटित होयत सैह राजा उमापतिक यथार्थ आश्रयदाता मानल जयताह।

उमापतिक यथार्थ आश्रयदाता : मकवानपुरक हरिहरसेन

पं० चेतनाथ झा जहिया अपन मत अभिव्यक्त कयने छलाह तहिया कोनो ऐतिहासिक आधार हुनका प्राप्त नहि छलनि। जे किछु आधार छलनि से परम्परासँ प्राप्त किंवदन्ती मात्र। ताहिपर सँ ग्रियर्सन सन महान् व्यक्ति द्वारा हुनक मतक तेहन कठोर आलोचना ओ खंडन भेल जे ओहि आगाँमे चेतनाथ झाक मत स्थिर नहि रहि सकल। पश्चात् हुनक मत विद्वान् लोकनिक विचार-परिधियोमे नहि राखल गेल।

परन्तु आब जे सामग्री ओ तथ्य सभ उद्घाटित भेल अछि से सभ हुनकहि मतक पक्षमे जाइत छनि। मकमानी मकवानपुरेक दोसर नाम थिक। मकवानपुरक राजवंशमे यथार्थे एक गोट हिन्दूपति हरिहरसेन नामक प्रमुख राजा भेल छलाह। मकवानपुरक जे राजवंशावली भेटैत अछि ताहिमे उमापति द्वारा देल गेल समस्त अन्तःसाक्ष्य यथावत् घटित होइत अछि। एतबे नहि, नेपालक इतिहाससँ हरिहर सेनक हिन्दूपति विरुद धारण करबाक कारणक विववरण सेहो भेटि जाइत अछि। वैह मकमानी वा मकवानपुरक राजा हिन्दूपति हरिहर सेन (अथवा देव) उमापतिक आश्रयदाता छलाह।

मकमानी राजवंश

हिन्दूपति हरिहर देव मकमानीक राजा छलाह। मकमानी वस्तुतः मकवानपुरक नाम छल। नेपालक कोसी प्रदेशक 'भित्री मदेस'क एहि नामक एकटा जिला अछि जकर सदर मोकामो मकवानपुर गढ़ी अछि। मकवानपुरक राजनीतिक इतिहासक अन्वेषणसँ ज्ञात होइछ जे पृथ्वीनारायण शाहक विजयसँ पूर्व नेपालक 'भित्री मदेस'क समस्त भाग, पश्चिममे कर्नाली प्रदेशक पहाड़ी भाग ओ पूवमे कोसी प्रदेशक तराइक इलाकापर—अर्थात् जुमला-सल्यान-पाल्पासँ ल' क' मोरङ इलाका धरि सेनवंशक राजा सभक शासन छलैक। नेपालक प्रसिद्ध मल्लराजवंशक शासन काठमांडूक उपत्यका भागमे छलैक। मल्लवंश ओ सेनवंश समानान्तर अस्तित्व रखैत छल। जहिना मल्लवंशक अनेक शाखा-राज्य छलैक तहिना सेनोवंशोक अनेक शाखा-राज्य स्थापित होइत गेलैक जाहिमे एकटा सशक्त शाखा मकवानपुरक छल। सेनवंश ओ मकवानपुरक यत्किंचित् राजनीतिक इतिहास एफ० हैमिल्टन अपन ग्रन्थ 'एकाउण्ट ऑफ दि किंगडम ऑफ नेपाल' (एडिनबर्ग, १८१९ ई०, पृ० १२९-१४५) मे देलनि। बालचन्द शर्मा 'नेपाल को ऐतिहासिक रूपरेखा' नामक ग्रन्थमे किछु आओर नवीन तथ्य जोड़ि क' एकरा पल्लवित कयलनि। डी० आर० रेग्मी महोदय 'मेडाइभल नेपाल'मे मल्लवंश ओ सेनवंशक पारस्परिक राजनीतिक सम्बन्धक प्रासंगिक उल्लेख कयलनि अछि। नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालयमे एकटा **'मकवानपुरीयनृपवंशावली'** (सूची—१, क्रमांक—११४०) सुरक्षित अछि। ई वंशावली किछु अन्य सेन-वंशावली केर संग **'सेनवंशावली'** नामसँ वीर लाइब्रेरी (राष्ट्रीय अभिलेखालयक पूर्वक नाम) द्वारा प्रकाशित कयल गेल अछि। मकवानपुरीय राजा लोकनि अपना नाममे 'सेन' जोड़ैत छलाह तेँ एहि वंश-समूहकेँ सेनवंश कहल जाइछ तथा वंशावलीकेँ सेनवंशावली।

उपर्युक्त 'सेनवंशावली'मे **'मकवानपुरीयनृपवंशावली'मे** बीजी पुरुषसँ आरम्भ क' सेनवंशक विभिन्न शाखा-राज्यक वंशक परिचय देल गेल अछि। एहिमे प्रथम खंड मकवानपुरक हरिहर इन्द्र द्वारा लिखबाओल गेल छल। कारण, एहिठाम हरिहरक परिवारक परिचय द' क' अन्तमे कहल गेल अछि **'इति प्राचीनलेखनक्रमः'**।[१] परवर्त्ती वंशक शेष परिचय एहि शाखाक अन्तिम राजा कामारिदत्त सेनक द्वारा जोड़ायब जे नवीन प्रति तैयार करबाओल गेल, से राष्ट्रीय अभिलेखालयक उपलब्ध प्रति थिक।

ई वंशावली मूलतः मकवानपुरेक शासक द्वारा तैयार करबाओल गेल छल

१. सेनवंशावली—संपादक शंकरमानराजवंशी, पृ० १४।

तकर सूचना आरम्भिक मंगल श्लोकक़ेर पश्चात् देल गेल निम्नलिखित श्लोकसँ भेटैत अछि—

> वंशावली श्रीमकवानिभूपतेरघौघविध्वंसकरी जनानाम् ।
> शृण्वन्तु तामत्र सभासु वन्द्यामन्तःप्रयत्नादवधाय सन्तः ॥

अतः निश्चित होइत अछि जे अत्र विवेच्य वंशावली मकवानपुरक शासक हरिहर इन्द्र द्वारा मकवानपुर शाखाक कीर्त्तन हेतु कोनो पण्डित द्वारा निर्मित कराओल गेल छल, विशेष क' प्राचीन लेखन-क्रम धरिक अंश। तेँ पूर्ववर्त्ती ओ परवर्त्ती अन्य सेन-शाखाक परिचय एहि वंशावलीमे रहितो मकवानपुरक ओ ताहूमे हरिहर इन्द्रक सम्बन्धमे विस्तृत ओ तथ्यात्मक विवरण देल गेल अछि। अतः 'सेनवंशावली'मे देल गेल अन्य. वंशावलीक हरिहरविषयक विवरणक अपेक्षा अधिक विश्वसनीय अछि **मकवानपुरीयनृपवंशावली** ।

सेनवंशक बीजी पुरुषसँ ल' क' कतोक पीढ़ी बाद धरिक नामावलीमे विभिन्न वंशावलीमे मतभेद अछि। परन्तु सभ एहि बात पर सहमत अछि जे आदि पुरुष राजस्थानक कुम्भलमेरु नामक स्थानक सिसौदिया क्षत्रियवंशक छलाह। इतिहासकारक अनुसार अल्लाउद्दीन खिलजीक चित्तौर आक्रमणक पश्चात् मदन-रायक सन्तान अन्य राजपूत योद्धासभक संग हिमालय प्रदेशमे पलायन कयलनि। एहि वंशक चारिम पुरुष अभयराणा मकवानपुरवासी राजलक्ष्मण सिंह नामक नगरमहीपालक कान्तिमती नामक कन्यासँ विवाह कयलनि। प्रायः श्वशुरक कोनो औरस उत्तराधिकारी नहि रहबाक कारणेँ अभयराणा ओत'क राजा भेलाह। अभयराणाक एगारहम पीढ़ीमे रुद्रसेन राजा भेलाह। रुद्रसेनक एकटा दानपत्र संवत् १५७१क उपलब्ध भेल अछि। एहि आधारपर खरदार बाबूराम आचार्य हिनक समय १४८३ ई० सँ १५१८ ई० धरि निश्चित कयलनि अछि। रुद्रसेनक पुत्र छलाह मुकुन्दसेन। बाबूराम आचार्य हिनक शासनकाल १५१८ ई० सँ १५५३ ई० धरि निश्चित कयलनि अछि।[1] वंशावलीमे पूर्ववर्त्ती राजाक अपेक्षा हिनका हेतु अधिक विशेषणक प्रयोग भेल अछि—

विविध-विरुदावली-विराजमान मानोन्नत श्रीमन्महाराजाधिराज पर्वतैकपात्साह हिन्दूपति राजराजेश्वर ।

नेपालमे लिखित **'भाषावंशावली'** नामक अन्य ग्रन्थक अनुसार काठमांडूक राजा रत्नमल्लक शासनकालमे भोट सभ द्वारा जखन बड़ उपद्रव कयल गेल तँ

---

१. देखू, भानुभक्त स्मारक ग्रन्थ, पृ० ६५-६६ ।

चारि जन तिरहुतिया ब्राह्मणक माध्यमसँ पालपाक राजासँ सहायताक याचना कयल गेल। पालपाक राजा लोकनि ओहि तिरहुतिया ब्राह्मणक शिष्य छलथिन। पालपाक शासक ओहि निवेदनकेँ स्वीकार क' रत्नमल्लक सहायता कयलथिन। पालपा-पर मकवानपुरीय सेनवंशक मुकुन्दसेनक शासन छल। तेँ स्वतःसिद्ध अछि जे मुकुन्दसेने ई सहायता देने छलथिन। अतः मुकुन्दसेनोक कालमे तिरहुतिया ब्राह्मणक वर्चस्व सेन-राजसभामे स्थापित छल आ एहि कूटनीतिक दौत्यचर्यासँ काठमांडूओमे सम्मान एवं प्रतिष्ठा भेलनि।

ई मुकुन्दसेन पराक्रमी ओ विजयीक संगहि विद्याप्रेमी, त्यागी एवं भगवद्-भक्त छलाह। पराक्रमक बलपर एकटा विशाल भूभागपर अपन शासन स्थापित कयलनि। परन्तु एकटा पैघ अदूरदर्शिता क' बैसलाह। मृत्युसँ पूर्व अपन विस्तृत राज्यकेँ पुत्र, भातिज तथा नाति सभक मध्य विभक्त क' स्वयं तपस्या करैत दिवंगत भ' गेलाह। यदि ओ अपन राज्यकेँ एना विघटित नहि कयने रहितथि तँ नेपालकेँ एकच्छत्र करबाक श्रेय हिनके भेटितनि जे श्रेय कतोक शताब्दी पाछाँ गोरखा राजा पृथ्वीनारायण शाहकेँ भेटलनि, एहन विचार नेपाली इतिहासकार लोकनिक छनि।

मुकुन्दसेनक तेरह गोट बेटा छलनि जनिका वयस एवं योग्यताक अनुसार विभिन्न राज्यखंड सभ देल गेलनि। एहिमे मानिकसेनकेँ पालपा, विहंगसेनकेँ तनहू ओ लोहांगसेनकेँ मकवानपुर भेटलनि। भवदत्त नामक पंडित द्वारा संस्कृत-श्लोकनिबद्ध एकटा दोसर वंशावलीमे कहल गेल अछि—

पालपां पुरीं मानिकसेन आवसद् विहंगसेनस्तनहूमपालयत्।
लोहंगसेनो मकवाननामकं पुरं जुगोपापरिमेयविक्रमः॥[1]

लोहांगसेन अपन विक्रमसँ अपन हिस्साक राज्यक सीमामे खूब बढ़ोतरी कयलनि। अधवारा नदी पार क' कोसीक पूर्वीय क्षेत्रमे मोरङ धरि अधिकार क' लेलनि। महोत्तरीक मोहन ठाकुरकेँ तथा मोरङक राजा विजयनारायणकेँ पराजित क' सौंसे मोरङपर अधिकार कयलनि। एही क्रममे कोरानी, खेसराहा, रामपुर, पोखारी, झामना, जोगोड़ा, धापर, कलिसा, वेल्काकोट, सम्दा, करजैन, मेघवारी इत्यादि कोसी क्षेत्रक स्थानक छोट-छोट राजा, सामन्त ओ जमीन्दारकेँ पराजित क' अपना अधिकारमे करैत गेलाह।[2]

---

१. सेनवंशावली, पृ० २४।

२. नेपाल को ऐतिहासिक रूपरेखा—बालचन्द्र शर्मा, पृ० २०१।

लोहांगसेनक पश्चात् हिनक राज्य मकवानपुर ओ चौदण्डी नामसँ विभक्त भ' गेल। एहिमे चौदण्डी अपेक्षाकृत छोट राज्य छल। विजयपुरसँ उत्तर भागक समस्त मोरङ इलाका मकवानपुरेक अधिकारमे रहल। लोहांगसेनकेँ पाँच गोट पुत्र छलथिन जाहिमे ज्येष्ठ छलथिन राघवसेन। हिनका राघव नरेन्द्र सेहो कहल जाइत छलनि। लोहांगसेनक मृत्युक पश्चात् राघव नरेन्द्र मकवानपुरक राजा भेलाह।

मकवानपुरीय नृप-वंशावलीमे हिनका सम्बन्धमे कहल गेल अछि—

'विजयादुत्तरतो देशे मोरंगसंज्ञके राघवनरेन्द्रो नाम राजा सर्वजनप्रियः।'[1]

हिन्दूपति हरिहरदेव

एहि राघव नरेन्द्रक दुइ गोट पुत्र छलथिन– हरिहर इन्द्रसेन तथा **कृष्णसेन**। राघवक पश्चात् हरिहर मकवानपुरक राजा भेलाह। हिनक मायक नाम छलनि दुर्गावती ओ मातामह छलथिन समालवासी ज्ञानमल्ल। वंशावलीमे हरिहर इन्द्रकेँ अन्य परम्परित विरुदक संग **'पर्वतैकपातसाह-हिन्दूपति-राजराजेश्वर-मकवानी कुलावतंस'** कहल गेल छनि। एहन विरुद हिनक प्रपितामह मुकुन्द सेनेकेँ देल गेल छनि से विचारणीय अछि। ताहूमे सौंसे वंशावलीमे **'मकवानीकुलावतंस'** विशेषण हरिहरेक हेतु प्रयुक्त भेल अछि। ई हरिहर सेनक वैशिष्ट्य सूचित करैत अछि।

मकवानपुरीय नृप-वंशावलीमे हरिहर इन्द्र सेनक अपन परिवारक परिचय देबाकाल पुनः-पुनः विरुदावलीक प्रयोग करैत हिनक पत्नी एवं पुत्र-पुत्रीक परिचय देल गेल अछि। प्रस्तुत सन्दर्भमे हरिहरक पत्नी ओ पुत्र सभक परिचय महत्त्वपूर्ण प्रमाण सिद्ध होयत तेँ वंशावलीक मूलवाक्य उद्धृत क' देब अधिक उपयोगी होयत—

''अथ रूप नारायणेत्यादि महाराजाधिराज हिन्दूपति-राजराजेश्वर–श्रीहरिहर-इन्द्र सुता–

(१) रूपनारायणेत्यादि महाराजाधिराज हिन्दूपति-राजराजेश्वर श्रीछत्रपति इन्द्र-पद्मावती इन्द्र देवौ महादेवी-पट्टमहिषी श्रीमाहेश्वरी देवी पुत्रो।

(२) पूर्वदेशीय वणि प्राणनाथसाह दौहित्रौ **यशोदरा** सुतश्च महाराज कुमार श्रीहिन्दूपतिकुमार-श्रीहिन्दूपतिकुमारी जीउ जुमली राजा श्रीकृष्णसाह सुत-श्रीकल्याणसाह पत्नी।

(३) अपरे रूपनारायणेत्यादि महाराजाधिराज वर कुमार श्रीवासुदेवसेन **महादेवी सकुंतला राज्ञी** पुत्रः सेनजान जातीदास दौहित्र।

१. सेनवंशावली, पृ० ९।

(४) रूपनारायणेत्यादि महाराज **श्रीशुभसेनदेवः** महादेवी **महाराणीधिराणी** पुत्र कामरूपी विहारवासी श्रीलक्ष्मीनारायण सुत श्रीवीरनारायण दौहित्र महाराज प्राणनारायणस्य भागिनेयः।

(५) अपरा श्रीहिन्दूपति हरिहरइन्द्र पत्नी **श्रीजगन्माता** तस्य सुता श्रीमहाराजाधिराज कुमारी जीउ विशेन राजपुत्र महाराज दंडमाहिसुत श्रीकीर्त्तिसाह पत्नी।

(६) अपरा श्रीहिन्दूपति हरिहरइन्द्र पत्नी **श्रीपट्टमहिषी**।

(७) अपरा श्रीहिन्दूपति हरिहरइन्द्र पत्नी **श्रीलक्ष्मावती** राजराजेश्वरी तस्य सुता प्राणमती कुमारीजीउ—श्रीराजमती कुमारीजीउ—आद्या श्रीवासुदेवमल्लसुत—श्रीप्रतापमल्ल पत्नी—अपरा श्रीज्ञानमल्लसुत मोहनमल्ल पत्नी।"[१]

अर्थात् हरिहरसेनक सात गोट पत्नी छलथिन जाहिमे चारि गोट पुत्र ओ पाँच गोट कन्या छलथिन—

१. **माहेश्वरी देवी**—पुत्र छत्रपतिइन्द्र, पुत्री पद्मावतीइन्द्र।
२. **यशोदरा**—पुत्र हिन्दूपति कुमार, पुत्री हिन्दूपति कुमारी।
३. **शकुन्तला**—पुत्र वासुदेवसेन।
४. **महाराणीधिराणी**—पुत्र शुभसेनदेव।
५. **जगन्माता**—पुत्री महाराजाधिराज कुमारी।
६. **पट्टमहिषी**— × × × ।
७. **लक्ष्मावती**—पुत्री प्राणमती ओ राजमती।

एहि उद्धरण ओ परिचयक आलोकमे उमापतिक पारिजातहरण ओ स्फुट गीतक अन्तःसाक्ष्यक मिलान कयने कोनो विन्दु शंकास्पद नहि रहि जाइछ। सभ तथ्यक संगति बैसि जाइत अछि। प्रस्तावनाक 'हिन्दूपति हरिहरदेव' ओ अन्यत्र प्रयुक्त 'हिन्दूपति' विरुद वंशावलीमे एकत्रैव भेटैत अछि। हुनक चारि गोट रानी **माहेसरि देइ, जगमाता देइ, पटमहिषी देइ** ओ **महारानि** एहि ठामक वंशावलीमे क्रमशः प्रथम, पाँचम, छठम तथा चारिम थिकीह। माहेश्वरी देवी ज्येष्ठा पत्नी छलथिन तेँ हिनका 'महादेवी पट्टमहिषी' विशेषण देल गेल छनि। पारिजातहरणमे बेसी बेर हिनके नामक उल्लेख छनि। किन्तु छठम रानीक नामे छलनि **पट्टमहिषी** जे वंशावलीसँ स्पष्ट अछि। तेँ पारिजातहरणमे **पटमहिषीक** नामक आगाँ 'देइ' शब्दक प्रयोग भेल अछि। 'पटमहिषी' नामसँ वंशावलीक छठम रानी अभिप्रेत अछि।

१. सेनवंशावली, पृ० १४।

पारिजातहरणक नवोपलब्ध एकटा गीतमे तथा मुद्रित संस्करणक बारहम गीतक भणितामे 'महारानि'क उल्लेख अछि। बारहम गीतक भणिता अछि—

गुरु उमापति हरि होएब परसन मान होएब अवसाने।
सकल नृपति पति हिन्दूपति जिउ महारानि विरमाने॥

नाटकक नवोपलब्ध गीतक भणिता अछि—

हिन्दूपति जिय जाने। महारानि विरमाने। जगजाने लो॥

दुनू ठाम 'महारानि' व्यक्तिवाचक संज्ञा थिक जे हरिहरसेनक चारिम रानीक नामक रूपमे आयल अछि जनिक नाम वंशावलीमे 'महाराणीधिराणी' देल अछि। पारिजातहरणक हस्तलिखित प्रतिमे जे दोसर नवीन गीत अछि तकर भणितामे **'लखिमा देइ'** चौंका देब' वला अछि। भणिता निम्न रूपक अछि—

उबेर (?) रसिक उमापति भान। लखिमा देइ पति ई रस जान॥

एहि **'लखिमा'** नामक समाधान वंशावलीमे अछि। एहि ठाम हरिहरसेनक सातम ओ अन्तिम रानीक नाम 'लक्ष्मावती' देल अछि जकर तद्भवरूप **'लखिमा'** स्वाभाविक अछि।

कविशेखर बदरीनाथ झा द्वारा संकलित उमापतिक एकटा स्फुट गीतमे भणिता अछि—

छत्रपति भूप रसिक रसविन्दक सुमति उमापति भान॥

वंशावलीमे देखल अछि जे ज्येष्ठा रानी माहेश्वरीक पुत्र छलाह छत्रपति इन्द्र। हरिहरक हेतु जे विरुद ओ विशेषण प्रयुक्त भेल अछि से सभ छत्रपतिहुक लेल प्रयुक्त अछि। एहन विरुदावली हिनक वैमात्रेय भाइ सभक संग नहि छनि। एहिसँ अनुमान कयल जा सकैछ जे ओ हरिहरसेनक घोषित भावी उत्तराधिकारी छलाह, तेँ राजत्वक समस्त प्रक्रियाक अधिकारी छलाह। मकवानपुरक भावी उत्तराधिकारी होयबाक कारणेँ नृपवत् कार्य करैत छल होयताह। उमापति एही **छत्रपति भूपकेँ** अपन एकटा गीत समर्पित कयलनि।

अन्तिम तर्कक रूपमे एकटा छोट तथ्यकेँ सेहो प्रस्तुत क' देब अनुपयोगी नहि होयत। पारिजातहरणमे छौ ठाम हिन्दूपतिक संग **'जिउ'** आदरार्थे प्रयुक्त देखैत छी। वंशावलीमे हिन्दूपतिक संग तँ नहि परन्तु हुनक पुत्री सभक लेल **'जीउ'** नामान्तमे प्रयुक्त अछि। एत' ईहो सूच्य अछि जे वंशावलीमे हरिहरइन्द्रक परिवारक अतिरिक्त अन्य ककरहु नाममे एहि शब्दक प्रयोग नहि भेल अछि। लगैत अछि जेना हरिहरदेवक परिवार ओ राजसभा-परिसरमे **'जिउ'** शब्दक प्रयोग-वैशिष्ट्य छल।

उपरि-विवेचित तथ्य ओ प्रमाणक आलोकमे आब एहिमे कोनो विवाद नहि रहि जाइछ जे मकवानपुर वा मकवानी वा मखमानीक राजा हिन्दूपति हरिहर-इन्द्रसेने उमापतिक यथार्थ आश्रयदाता छलाह; कर्णाटवंशीय हरसिंह देव वा विजय नगरक हरिहर बुक्कदेव अथवा बुन्देल-खण्डक हिन्दूपतिसिंह नहि।

'हिन्दूपति' उपाधि

एहिठाम तीन विन्दुक व्याख्याक अपेक्षा रहि जाइत अछि। ओ थिक हिन्दूपति विरुद, हरिहरकें विष्णुक दशमावतारक उपमा तथा प्रथम नान्दी श्लोकमे वराह भगवानक स्तुति।

नेपाली इतिहासकार बालचन्द्रशर्मा कहैत छथि—

> "राघवसेन का छोरा हरिहरसेन ले गोण्डवारा सम्म विजय गरेर हिन्दूपति को उपाधि धारण गरे।"[१]

अर्थात् राघवसेनक बेटा हरिहरसेन **गोण्डवारा** धरि विजय क' क' 'हिन्दूपति' उपाधि धारण कयलनि। ई गोण्डवारा पूर्णिया जिलामे एखनो एकटा कस्बा अछि आ इस्ट इण्डिया कम्पनीक शासनकाल धरि एकटा प्रमुख व्यापारिक नगर ओ सबडिविजनक केन्द्र छल। नेपाली इतिहाससँ पता चलैत अछि जे आलोच्य कालमे पूर्णियाक नबाब इस्कन्दर खाँ छल जकरा हरिहरसेनक बेटा सभसँ संघर्ष भेल छलैक। हरिहरसेनोक कालमे कोनो मुसलमाने नबाब छल होयत। हरिहरसेन ओकरे मुसलमानी सेनाकें पराजित कयलनि आ हिन्दूपति उपाधि धारण क' अपनाकें हिन्दूक रक्षकक रूपमे प्रतिष्ठित कयलनि। ई उपाधि हरिहरक प्रपितामहोकें छलनि किन्तु हरिहरक पश्चात् हिनक वंशधर प्रत्येक राजाक स्थायी कौलिक उपाधि 'हिन्दूपति' भ' गेल। मकवानपुरक एहि शाखाकें हिन्दूपतिवंश सँह कहल जाय लागल। मोरङमे हरिहरसेन जे गढ़ बनबौलनि अथवा जाहि गढ़मे अवस्थान कयलनि तकर नामे पड़ि गेल **हिन्दूपतिगढ़** जे एखनो अवशेष रूपमे **'हिनपतगढ़'** नामसँ विद्यमान अछि। पृथ्वीनारायणशाह एहि वंशक राजा सभकें पराजित क' हुनका सभक राज्य अपना राज्यमे मिला लेने छलाह। ओ अपन अन्तिम समयमे बड़ा गौरवपूर्वक एहि बातक उल्लेख करैत कहने छलाह—'**हिन्दूपति को राज लिया।**'[२]

---

१. नेपाल को ऐतिहासिक रूपरेखा, पृ० २०६।

२. दिव्य उपदेश—पृथ्वीकी आर्ति, पृ० १।

'स्याहामोहर' नामसँ अनेको दानपत्र सभ प्राप्त भेल अछि जे 'पुरातत्त्वपत्र-संग्रह, भाग—२' नामसँ काठमांडूसँ प्रकाशित भेल अछि। ओहिमे हरिहरक वंशधर राजा सभ अपना हेतु 'हिन्दूपति' विरुदक प्रयोग अपन नामक संग कयने छथि।

हरिहर द्वारा हिन्दूपति उपाधि धारण करबाक पाछाँ रहल होयत हुनका द्वारा हिन्दू जातिक यवन जातिसँ रक्षा करबाक महान् एवं सफल प्रयास, जाहिमे अन्यो समकालिक राजा सभक, खास क' सेनवंशी अन्य शाखा-राज्यक राजा सभक सहयोग। तेँ हिन्दू जातिक ओ हिन्दू धर्मक रक्षक रूपमे प्रशस्तिवाचन करैत उमापति हरिहरदेवके 'विच्छेदगतचतुर्वेदपथ-प्रकाशक प्रताप' कहल।

मुकुन्दसेन पार्वत्यशक्तिपुंजक रूपमे उदित भेल छलाह। ओकरा आओर पुष्ट कयलनि हुनक पुत्र लोहाङ्गसेन। हरिहरसेनकेँ पिता-पितामह-प्रपितामहसँ जे प्रतिपत्ति भेटलनि ओहिमे अपन पराक्रमक सेहो योग देलनि। कामरूप-कुचबिहारक कोच राजवंशक संग हरिहरदेव तथा काठमांडूक प्रतापमल्लक वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित भेलासँ पूर्वोत्तर भारतक एहि भागमे त्रिकोणात्मक शक्ति-संघटन स्थापित भ' गेल। फलस्वरूप हरिहरदेव आरो शक्ति सम्पन्न भ' गेलाह। सेनवंशक अन्य शाखा राज्य—पालपा, तनहू, रिसिङ, दरछा, मदरिया, प्यूठान, राजपुर, चौदण्डी इत्यादिक मध्य हरिहरदेवक वर्चस्व सर्वोपरि भ' गेल आ ओ राजा सभ हिनक अनुगत भ' गेलथिन तेँ उमापति कहलनि 'पदभजनपरा राजराज्ञ्यस्तटिन्यः' 'सकल-नृपति पति' इत्यादि।

ओही कालमे मोगल साम्राज्यक सीमामे दिल्लीक बादशाहक प्रतिनिधि सूबेदार द्वारा हिन्दू जातिपर अत्याचार कयल जाइत छल जकर प्रतिकारक हेतु हरिहरदेव हिन्दू राजाक सहयोगसँ शस्त्र उठओलनि आ पूर्णियाक नबाबक सेनाकेँ गोण्डवारा धरि खेहारि क' पराजित कयलनि। ओहि समयमे पूर्णियाक नबाबकेँ छल तकर पता नहि अछि परन्तु हरिहरक मृत्युकालमे इस्कन्दर खाँ नामक नबाब छल जकर उल्लेख नेपाली इतिहासकार करैत छथि। संभव अछि जे इस्कन्दर खाँसँ पहिने कोनो दोसर सूबेदार नियुक्त रहल हो। परन्तु बालचन्दशर्मा हरिहरक मृत्युक बादक घटनाक उल्लेख करैत कहैत छथि जे इस्कन्दर खाँ हुनक पुत्र शुभसेन तथा पौत्र छत्रपतिसेनक बेटा इन्दुविधातासेनकेँ षड्यन्त्र द्वारा पकड़ि दिल्ली पठबाय जातिच्युत करबा देलक। एहिसँ अनुमान भ' सकैछ जे इस्कन्दरे खाँ हरिहरदेवक हाथेँ पराजित भेल छल जकर बदला हुनक पुत्र-पौत्रसँ लेलक।

दशमावतार

इस्कन्दर खाँक यवन-सेनापर विजय-प्राप्तिक उपलक्ष्यमे प्रायः उमापति पारिजातहरणक रचना कयने छलाह। यवन-सेनाकेँ पराजित कयनिहार हरिहर-

देवकें विष्णुक दशम अवतार कहि प्रशंसा कयने छलाह। गीतो सभमे हिनका यवन-विनाशक, यवनरूपी वनक हेतु दावानल समान कहने छथि जकर सम्पुष्टि इतिहाससँ भेल अछि। जयदेव गीतगोविन्दक दशावतार-स्तुतिमे कहने छथि—

म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम्।
धूमकेतुमिव किमपि करालम्॥
केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे॥

एहि ठामक '**कराल**' ओ '**करवाल**' शब्दक उपयोग करैत अपन आश्रयदाता हेतु उमापति कहलनि—'**यवनवनच्छेदन-कराल-करवाल**'। जयदेव कल्कि अवतारक प्रयोजन म्लेच्छ-विनाश कहने छलाह। उमापतिक कालमे 'यवन-विनाश' कल्कि अवतारक प्रयोजन मानल जाय लागल छल। एकर समर्थन ओही कालक नेपालक भातगाँवक राजा जगज्ज्योतिर्म्मलक रचित '**दशावतार-गीत**'क कल्कि-वन्दनामे भेटैत अछि—

कलिक अन्त अधरम परिपूर। कलकि सरूपे कएल सबे दूर॥
कर करवाल तुरग वर साजि। पूहवि बल रण कैए विराजि॥
उग्रप्रतापे यवन कुल मारि। संतक संकट लेल उबारि॥
कतहु भयंकर कतहु कृपाल। संभल गाम लेल अवतार॥[१]

अतः उमापतियो अपन आश्रयदाताक यवन-विजयकें विष्णुक दशम अवतार कल्किक एकटा कार्य मानि हुनका विष्णुक दशम अवतार मानलनि—

सकल जवन वन वरदावानल दसम देव अवतारा।

वराहस्तुति

पारिजातहरण नाटकक नान्दीमे वराह भगवानक स्तुति सहेतुक अछि। प्रसिद्ध तीर्थस्थान वराहक्षेत्र मकवानपुर राज्यक सीमामे स्थित छल। अतः ओहि राज्यक राजा ओ प्रजाक पूज्य छलाह वराह भगवान।[२] एकरा संग इहो कहल जाइत अछि जे हरिहरक पितामह लोहांगसेन वराहमूर्त्तिक स्थापना कयने छलाह। अतः मकवानपुर राज्यक राजसभामे अभिनेय नाटकमे ओहि राज्यक अधिदेवताक सर्वप्रथम स्तुति करब आश्रित कविक हेतु सर्वथा स्वाभाविक अछि।

मकवानपुरक राजनीतिक इतिहास

हिन्दूपति हरिहरदेवक समकालिक घटना सभक सम्बन्धमे बड़ कम

१. जगज्ज्योतिर्म्मल्लक दशावतारनृत्यम्—डा० रामदेव झा, मैथिली-प्रकाश, मार्च-अप्रैल, १९७७, पृ० १५।
२. हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ किरात पीपुल, भाग-२—इमानसिङ चेमजोङ, पृ० ९३।

ऐतिहासिक तथ्य प्रकाशमे आयल अछि। यवन-विजयक घटना पहिनहि चर्चित भ' चुकल अछि। एकरा अतिरिक्त नेपाली इतिहासकार लोकनि हरिहरक जीवनक अन्तिम कालक गृहकलहक उल्लेख कयने छथि। बालचन्द्रशर्माक कथ्य छनि जे हरिहरसेनक वृद्धावस्थामे हुनक चारि गोट पुत्रमे पैतृक राज्यक हेतु बड़ आपसी कलह भेल छलनि। हुनका किछु समय धरि बेटा सभक कैदमे सेहो रह' पड़लनि। अन्ततः मकवानपुर राज्यक विभाजन भ' गेल। मकवानपुर सहित कोसीक पश्चिमी इलाका **शुभसेनक** अधिकारमे चल गेल तथा कोसीसँ पूव मोरङ धरिक इलाका छत्रपतिसेनक नवजातपुत्र इन्दुविधातासेनकेँ द' देल गेल। तकरा पश्चात हरिहर सेनक मृत्यु भ' गेल।[1]

दिल्लीरमण रेग्मी किछु प्राचीन अभिलेख सभक आधारपर सूचना देने छथि जे नेपाल संवत् ७९० (१६७० ई०) मे माघ कृष्ण चतुर्थीकेँ काठमांडूक **प्रतापमल्ल** ओ पाटनक **श्रीनिवासमल्लक** संयुक्त तत्त्वावधानमे मकवानपुर आक्रमण कयल गेल किन्तु से असफल रहल। नेपाल संवत् ७९१ (१६७१ ई०) क चैत्र मासक कृष्णपक्षमे श्रीनिवासमल्ल मोरङक हरिहरसेनक पुत्र महाराज कुमार शुभसेनपर आक्रमण कयल आ जगाबनिया शुभसेनकेँ पकड़ि लेलक। ओहि वर्ष ज्येष्ठ कृष्ण बुधकेँ श्रीनिवासमल्लक चारि मन्त्री ओ एक सय सैनिक गोरखाक मुरारि साही एवं जगाबनिया मकवानपुर दिस आक्रमण हेतु प्रयाण कयलक किन्तु ई प्रयाण बीचेमे रुकि गेल। नेपाल संवत् ७९४ (१६७४ ई०)क आसिन मासमे मकवानपुर पर हरिहरसेनक आक्रमणक खतरा उपस्थित भेल तँ शुभसेनकेँ पाटनसँ साहाय्य भेटलैक। श्रीनिवासमल्लक प्रेरणासँ भक्तपुर, काठमांडू एवं तनहू (सेनवंशक एकटा शाखा-राज्य) सम्मिलित आक्रमण क' मोरङ द्वारा शुभसेनक अपहृत १७ गोट गाम पुनः आपस देया देल। शुभसेन एतदर्थ कृतज्ञता-ज्ञापन-स्वरूप चारि गोट हाथी श्रीनिवासमल्लकेँ प्रदान कयल।[2]

उपर्युक्त दुहू विवरणमे अनेक ठाम अन्तर्विरोध देखना जाइत अछि। परन्तु एहि सभक आधारपर ओहि कालक राजनीतिक घटनाचक्रक रूपरेखा स्थिर कयल जा सकैछ। हरिहरसेनक राज्यसीमा ओहि कालक अन्य सेन-शाखा-राज्य ओ नेपालक मल्लवंशक विभिन्न शाखा-राज्यसँ बहुत बेसी विस्तृत छल। स्वयं अत्यन्त साहसी ओ शक्तिशाली छलाह, तेँ दिल्ली बादशाहक प्रतिनिधि पूर्णियाक नबाब पर विजय प्राप्त कयलनि। काठमांडूक परिसरक मल्लराजागण ओ सेनवंशक कतोक शाखा-राज्यकेँ—जे मकवानपुरसँ द्वेषभाव रखैत छल—प्रत्यक्षरूपेँ किछु

१. नेपाल को ऐतिहासिक रूपरेखा, पृ० २०६।

२. मेडिएभल नेपाल, भाग-२, पृ० २६५-९७।

करबाक साहस नहि होइत छलैक। कोचबिहारक संग जे वैवाहिक सम्बन्ध काठमांडूक प्रतापमल्लकें हरिहरदेवक मित्र बना देने छल सैह विरोधियो बना देलक। प्रतापमल्लक संग अन्यो राजा सभ मकवानपुरक शक्तिकें तोड़ि देब' चाहैत छल। हरिहरदेवक वृद्धावस्था भेलापर प्रतापमल्ल कोचबिहारक दौहित्र आ अपन पत्नीक बहिनौत शुभसेनकें अपन राजनीतिक मोहरा बनाओल। मकवानपुरमे गृहकलह आरम्भ भ' गेल। हरिहरदेव राजविभाजनक अपन वंश-परम्पराक विपरीत, राज्यक विभाजन नहि क' समस्त राज्यक उत्तराधिकारी अपन ज्येष्ठ पुत्र छत्रपति इन्द्रकें बनब' चाहैत छलाह। ई मन्तव्य वंशावलीमे देल गेल छत्रपतिक विरुदावलीसँ प्रकट होइछ, जकर उल्लेख पहिनहि कयल गेल अछि।

प्रतापमल्लक संग पाटन, तनहू इत्यादि शुभसेनक पक्ष ल' क' मकवानपुर ओ मोरङपर सम्मिलित आक्रमण कर' लागल। हरिहरदेव वृद्ध होइतो ओकरा सभकें निरस्त करैत रहलाह। परन्तु जखन अपने पुत्र शत्रुपक्ष दिस छलथिन तखन बाहरी हस्तक्षेपकें ओ कतेक काल रोकि सकितथि ! हरिहरदेव मकवानपुरसँ हटि मोरङमे केन्द्र बनओलनि। मोरङ पर १६७१मे आक्रमण भेल जाहिमे हरिहरदेव पराजित भ' क' पुत्र सहित पकड़ल गेलाह। एहि युद्धक सम्बन्धमे रेग्मी महोदयक सूचना भ्रमाह लगैत अछि। हरिहरसेन शुभसेनक संग नहि अपितु अपन ज्येष्ठ पुत्र छत्रपतिसेनक संग पकड़ल गेल होयताह। एहि क्रममे प्रायः छत्रपतिसेनक मृत्यु भ' गेलनि। हरिहरसेन वन्दी अवस्थामे विवश भ' क' राज्यक विभाजन क' देलनि। मकवानपुर केन्द्र सहित कोसीक पश्चिम भाग शुभसेनकें देब' पड़लनि आ कोसीसँ पूब मोरङक इलाका छत्रपतिक गत होयबाक कारणें हुनक नवजात शिशु इन्दु-विधातासेनकें देलनि। एहि विभाजनक शर्त्तपर ओ प्रायः वन्दी जीवनसँ मुक्त भ' इन्दुविधातासेन केर अभिभावक रूपमे आपस अयलाह। परन्तु हुनक मन एहि विभाजनकें कथमपि स्वीकार नहि कयलकनि। ओ मकवानपुर पर आक्रमण क' १७ गाम छीनि लेलनि। पुनः १६७४ ई०मे आसिन मासमे आक्रमणक आयोजन कयल परन्तु शुभसेनकें काठमांडू, पाटन, भक्तपुर ओ तनहूक सम्मिलित सैन्य-सहायता भेटलैक। आक्रमण निष्फले नहि क' देल गेल प्रत्युत बलपूर्वक छीनल १७ गाम सेहो दखल क' लेल गेल गृहकलह, शुभसेन द्वारा विद्रोह, वन्दी अवस्थामे पुत्रक प्राण-वियोग, इच्छाक विरुद्ध राज्य-विभाजन, निरन्तर युद्ध ओ पराजयसँ जर्जर हरिहरदेव अन्तिम पराजयक आघात नहि सहि सकलाह आ १६७४-७५मे हुनक मृत्यु भ' गेलनि।

नेपाली इतिहासकार बालचन्द्रशर्मा परवर्त्ती घटनाक स्पष्ट चित्र देलनि अछि। हरिहरक मृत्युक पश्चात् शुभसेनकें पितृद्रोहक पापक फल भोग' पड़लैक।

पूर्णियाक नबाब इस्कन्दर खाँ अपन वा अपन पूर्ववर्त्ती नबाबक पराजयकेँ बिसरल नहि छल। हरिहरक जीबैत तँ नहि परन्तु हुनक मृत्युक पश्चात् षड्यन्त्र क' शुभसेनक मन्त्री सभकेँ अपना दिस मिला क' आक्रमण क' देलक। आरम्भमे सेन सभक विजय भेलैक। परन्तु अन्ततोगत्वा इस्कन्दर खाँ शुभसेनकेँ पराजित क' ओकरा शिशु इन्दुविधातासेन सहित बन्दी बना क' दिल्ली पठा देलक जत' दुनूकेँ जातिच्युत क' देल गेलैक। मोरङ्क बेस पैघ भाग पर नबाबक अधिकार भ' गेलैक। शुभसेनक एकटा विश्वस्त मन्त्री प्रबोधदास शुभसेनक दुइटा बेटा महापतिसेन (वा मान्धातासेन) ओ मानिकसेनकेँ ल' क' किरात-प्रदेशमे शरण लेलनि तथा किराती सरदार विद्याचन्द्र राइक सहयोगसँ पुनः राज्य पर अधिकार क' कमलासँ पश्चिम भाग पर मानिकसेनकेँ तथा कमलासँ पूबक भागपर महिपतिसेनकेँ स्थापित कयलनि।

हरिहरदेवक समय

एतावता हरिहरसेनक सम्बन्धमे जतबा तथ्य जानल अछि ताहि आधारपर हुनक समयक मोटा-मोटी अनुमान कयल जा सकैत अछि। ऊपर देखल गेल अछि जे हरिहरक वृद्धप्रपितामह रुद्रसेन ओ प्रपितामह मुकुन्दसेन ३५-३५ वर्ष राज्य कयलनि। मुकुन्दसेनक मृत्युवर्ष १५५३ ई० मानल गेल अछि। यदि राज्य-शासनक यैह औसत अवधि लोहांगसेन ओ राघवसेनक सेहो मानल जाइनि तँ ओ ७० वर्ष होयत। अतः १५५३ ई०मे ७० वर्ष जोड़ि देल जाय तँ १६२३-२४ ई०क लगपासमे हरिहरसेनक राज्यारोहण भेल होयबाक चाही।

हरिहरसेनक एकटा पत्नी **महाराणीधिराणी** ओ शुभसेनक माता छलथिन कोचराजा **वीरनारायणक** पुत्री। **वीरनारायणेक** दुइटा कन्या **रूपमती** ओ **अनन्त प्रिया** काठमांडूक राजा प्रतापमल्लक पत्नी छलथिन। कोचवंशक परिचय दैत एडवार्ड गेट महोदय अपन ग्रन्थ 'हिस्ट्री ऑफ आसाम'मे **लक्ष्मीनारायण केर** मृत्यु १६२२ ई०मे तथा हुनक पुत्र **वीरनारायण** केर मृत्यु १६२७मे मानलनि अछि। **वीरनारायणक** मृत्युवर्षसँ एक-दू वर्ष पूर्व वा पश्चात् हुनक कन्यासँ हरिहरक विवाह भेल होयतनि। ओ छलथिन हुनक चारिम पत्नी जे स्वेच्छासँ कयने होयताह। स्वेच्छासँ निर्णय करबाक प्रवृत्ति राज्यारोहणक पश्चाते भेल होयतनि। अतः विवाह-कालमे हुनक आयु कमसँ कम तीस-पैंतीस वर्षक अवश्य रहल होयतनि।

दोसर दिस हरिहरसेन एवं प्रतापमल्ल छलाह साढ़ू। तेँ दुहू समसामयिक तँ छलाहे, समवयस्को होयबाक अनुमान क' सकैत छी। प्रतापमल्लक राजत्व १६४१ ई० सँ १६७४ ई० धरि रहल। साढ़ू प्रतापमल्लक १६४१ ई०मे राज्यारोहण भेलासँ हरिहरकेँ एकटा प्रबल सहयोगी भेटि गेल। एहि शक्ति-समुच्चयसँ

उत्साहित भ' हरिहर पूर्णियाँक नबाबसँ युद्ध कयने होयताह। अतः हुनक यवन-विजयक घटना १६४०सँ १६५० ई०क मध्य घटित भेल होयबाक चाही जकर उपलक्ष्यमे पारिजातहरण नाटकक रचना ओ अभिनय भेल होयतनि। तावत ओ अपन अनेक विवाह सम्पन्न क' चुकल छलाह, तेँ एहि नाटकमे पाँच-पाँच गोट रानीक नामोल्लेख अछि।

१६७४ ई०क पश्चात् हरिहरसेनक मृत्यु भ' गेलनि। प्रतापमल्लोक मृत्यु १६७४मे भेलनि। यदि हरिहरसेनक परम आयु ७५-८० वर्ष मानी तँ हुनक जन्मकाल १५९५ ई० सँ १६०० ई०क मध्य सरलतासँ निश्चित कयल जा सकैछ।

एही समय-सीमाकेँ केन्द्र मानि उमापतियोक काल निर्धारित करब संभव अछि।

उमापतिक परिचय

उमापति छलाह के? ऑफ्रेट महोदय संस्कृत वाङ्मयमे चौदह गोट कृतिक उल्लेख कयने छथि जकर कर्त्ता उमापति छलाह अथवा जाहिमे उमापतिक उल्लेख अछि। एकरा अतिरिक्तो सारस्वत क्षेत्रमे उल्लिखित उमापतिक नाम जोड़ल जा सकैत अछि। एहि सभमे किछु उमापति सर्वथा भिन्न थिकाह, भिन्नकालिक थिकाह। परन्तु अनेक कृतिक कर्त्ता एकहि उमापति भ' सकैत छथि। यथा—**'शुद्धिनिर्णय'** ओ **'सारसंग्रह'** नामक उभय ग्रन्थक हस्तलेखमे ग्रन्थकर्त्ता **'महामहोपाध्याय पगौली सं श्रीउमापति'** कहल गेल छथि। **'स्मृतिदीपिका'** नामक ग्रन्थक कर्त्ता महामहोपाध्याय **'उमापति'** कहल गेल छथि। एहिमे साम्य वा वैभिन्यसूचक कोनो विशेषण नहि अछि, परन्तु एकर मंगलश्लोक किछु शब्द-व्यत्ययक अतिरिक्त ओहने अछि जेहन **'शुद्धिनिर्णय'** ओ **'सारसंग्रह'**क मंगलश्लोक। अतः **'स्मृतिदीपिका'**क रचयिता पगौली मूलक उमापति छलाह। एहिना अन्यो कृति सभमे साम्य-वैषम्य ताकल जा सकैत अछि।

पारिजातहरणकार उमापतिक अन्वेषण सोलहम शताब्दीक अन्तिम चरणसँ ल' क' सतरहम शताब्दीक तेसर चरण धरिक समय-सीमामे करब अपेक्षित अछि। एहि कालावधिक लगपासमे दुइ गोट उमापतिक होयबाक चर्चा साहित्य-जगतमे कयल जाइत अछि। एकटा छलाह **मङरौनी** वासी ओ दोसर छलाह **कोइलख** वासी। किछु विद्वान् मङरौनीक उमापतिकेँ पारिजातहरणक रचयिता मानैत छथि तँ किछु विद्वान् कोइलखक उमापतिकेँ। वस्तुतः एहि दुनूमे सँ के यथार्थ नाटककार छलाह वा एहि दुहूसँ भिन्न केयो तेसरे उमापति हमर सभक नाटककार छलाह से निर्णय करब अपेक्षित अछि।

एहि प्रसंगमे अन्वेषणक सर्वप्रथम चेष्टा कवीश्वर चन्दा झा कयने छलाह। स्व० रमानाथ झा कवीश्वरक पोथासँ उमापतिक परिचयक प्रसंग हुनक मन्तव्य उद्धृत कयने छलाह। कवीश्वरक देल परिचय-सूत्र देखल जा सकैत अछि—

"ई महामहोपाध्याय उमापति उपाध्याय तिरहुति मौजे कोइलखमे बसथि। महामहोपाध्याय गोकुलनाथ उपाध्यायक परीक्षक गुरु छलाह। हिन्दूपति हरिहरदेव मकमानीक प्रधान पण्डित ओ धनी छलाह। कीर्त्तनिञा नटुआ मिथिलामे ओही महाशयक द्वारा प्रचारित भेल। दरिहरय अमरावती मैथिल ब्राह्मण छलाह जनिक पिता महामहोपाध्याय कविरत्नशर्मा चिन्तामणि न्याय ग्रन्थक क्षीरनीर नामक टीका कयल छल जे श्रीमन्मिथिलेशक पुस्तकालयमे अछि।"[१]

पण्डित चेतनाथ झा कवीश्वरक एही सूत्रकेँ अपन विचारक आधार बनाय पारिजातहरणक भूमिकामे प्रस्तुत कयलनि। पश्चात् कालक अधिकांश विद्वान् एही कोइलखवासी उमापतिकेँ मैथिली नाटककार मानबाक पक्षमे रहलाह अछि। एतेक धरि जे ओहनो विद्वान् जे उमापतिकेँ चौदहम शताब्दीक मानैत छथि सेहो हुनका कोइलखेक निवासी मानैत छथि। यद्यपि ई दुनू बात होअय नहि। यदि कोइलखवासी उमापतिक परिचय पंजीग्रन्थसँ प्राप्त करबाक चेष्टा ई लोकनि कयने रहितथि तँ दुनू स्थापनाकेँ एक सूत्रमे गथबाक साहस नहि करतथि।

कोइलखवासी उमापति असली नाटककार थिकाह एहि धारणाक कोनो आधार नहि अछि, जे किछु से किंवदन्ती मात्र। तथापि कवीश्वर चन्दा झा सन प्राचीन पुरुषक वचनकेँ आप्तवाक्य मानि कोइलखवासी उमापतिक परिचयक अन्वेषण क' कोनो एहन सूत्र तकबाक अपेक्षा अछि जाहिसँ नाटककार उमापतिक संग अभिन्नत्व स्थापित कयल जा सकय।

एहि सम्बन्धमे हम सर्वप्रथम १९६३ ई०मे चन्दधारी मिथिला कालेजक अपन छात्र कोइलखनिवासी श्रीभीमनाथ झा जे आब मिथिला-मिहिरक सह-सम्पादक छथि तनिकासँ उमापतिक पाँजि-निबद्ध परिचय ओ कोइलखमे हुनका सम्बन्धमे प्रचलित किंवदन्तीक संकलन करबाक आग्रह कयलियनि। ओ एक-डेढ़ वर्षक परिश्रमसँ कोइलखवासी दरिहरय-अमरावती मूलक उमापतिक वंशावली एवं अन्य सूचना सब प्रदान कयलनि। पाछाँ १९७१मे स्वर्गीय रमानाथ बाबू सेहो पंजीग्रन्थसँ उमापतिक सम्बन्धक विस्तृत परिचय संकलित क' प्रकाशित करओलनि। दुहु ठाम उमापति रत्नपतिक पुत्र कहल गेल छथि। श्रीभीमनाथ झा जे वंशावली

१. मैथिली-अनुसन्धान-पत्रिका, १९७१, पृ० २९।

देलनि ताहिमे बीजी पुरुष कमलपाणि कहल गेल छथि। हुनक पन्द्रहम पीढ़ीमे छलाह विष्णुपति। विष्णुपतिक तीन पुत्र छलथिन—गौरीपति, यज्ञपति, (जनिक प्रसिद्ध नाम छलनि 'बाबू') ओ रत्नपति। रत्नपतिक एकमात्र पुत्र छलाह उमापति। उमापतिकेँ पुत्र नहि, दुइ गोट कन्यामात्र। परन्तु श्रीभीमनाथ झाक वंशावलीक अनुसार गौरीपति ओ यज्ञपतिक सन्तान एखनो कोइलख गाममे विद्यमान छथिन। ई सूचना सभ रमानाथ बाबूक विवरणमे अनुपलब्ध अछि।

पंजीमे रत्नपतिक पुत्रक नाम कतहु उमानाथ कहल गेल अछि, कतहु उमानाथ ओ उमापति दुहु। हमरा लगक वंशावलीमे कहल गेल अछि 'महामहोपाध्याय पण्डित उमानाथ प्रसिद्ध उमापति'। रमानाथ बाबूक सूचनामे उमापतिक प्रसिद्ध नाम 'उमानाथ' कहल गेल अछि। दरिहरय-अमरावतीक एहि शाखामे पत्यन्त नाम रखबाक परिपाटी देखैत छी। अत: रत्नपतिक ओहि एकमात्र पुत्रक कौलिक परिपाटीक अनुसार 'उमापति' ना। छलनि जनिक लोकमे प्रसिद्धि 'उमानाथ' कहि क' छलनि।

पारिजातहरणकारक संग एहि उमापतिक एकात्मकता स्थापित करबामे ई हमरा हेतु एकटा मूल्यवान सूत्र सिद्ध भेल अछि। पारिजातहरणमे सर्वत्र उमापतिए नाम आयल अछि। नाटकक अन्तमे नामक संग 'महामहोपाध्याय' ओ 'पण्डितमुख्य' विशेषण लागल अछि। पंजीमे सेहो 'महामहोपाध्याय पण्डित उमानाथ' कहल अछि।

'विद्याकरसाहस्रक'मे पारिजातहरणक दुनू नान्दीश्लोक संकलित अछि जकर सूचना ऊपरहि देल गेल अछि। एहिमे पहिल नान्दीश्लोकक कर्त्तामे 'उमापत्युपाध्यायस्य' कहल गेल अछि। परन्तु दोसर नान्दीश्लोकक कर्त्तामे कहल गेल अछि—'उमानाथोपाध्यायस्य'। यदि ई दुहू श्लोक पारिजातहरणक नहि रहैत अथवा दोसर श्लोकमे 'हिन्दूपति'क नाम नहि रहैत तँ मानि लितहुँ जे दुहू श्लोक दुइ भिन्न व्यक्तिक रचल थिक; उमापति ओ उमानाथ दुइ भिन्न व्यक्ति थिकाह। परन्तु पारिजातहरणक सोझांमे ताहि लेल अवकाश नहि रहि जाइछ। तखन दुइ गोट संभावना विचारणीय। प्रथम, 'विद्याकरसाहस्रक'मे भ्रमसँ 'उमापति'केँ उमानाथ लिखा गेल हो; द्वितीय, उमापतिक एक अपर नाम उमानाथ रहल हो। पारिजातहरणक हस्तलिखित प्रतिमे जे दुइ गोट नवीन गीत उपलब्ध भेल अछि ताहिमे एकटा गीतक भणितामे 'उमानाथे' कविनाम अछि। एहि गीतमे 'हिन्दूपति' ओ 'महारानि'क नाम सेहो छनि। तेँ ई मानब संगत लगैत अछि जे नाटककार उमापतिहिक दोसर नाम 'उमानाथ' छलनि।

'उमानाथ'क नामसँ दुइ गोट संस्कृत श्लोक ओ दुइ गोट गीत '**चीरहरण**' एवं '**बाऊ-चरित्र**' सेहो भेटल अछि। ई दुहू गीत तँ कोनो नाटकक प्रस्तावने थिक संभवतः। दुहू संस्कृत श्लोक '**विद्याकरसाहस्रक**'मे संकलित अछि (श्लोक १९४, ४८२) जकरा '**उमानाथपण्डितस्य**' कहल गेल अछि।

'पारिजातहरण'क उमापति अपनाकेँ '**पण्डितमुख्य**' कहितहि छथि। कोइलखवासी दरिहरय-अमरावती मूलक उमापतिकेँ '**महामहोपाध्याय**' ओ '**पण्डित**' विशेषणक संग 'उमानाथो' नामेँ उल्लिखित कयल गेल छनि। कोइलख-वासी एहि 'उमापति प्रसिद्ध उमानाथ'क प्रशंसामे पञ्जीकार ओहिना 'महामहो-पाध्याय' ओ 'पण्डित' विशेषणक प्रयोग नहि कयने छल होयताह। ओ उमापति वस्तुतः न्याय-वैशेषिकक निष्णात विद्वान् छलाह जकर प्रमाण स्वरूप कमसँ कम हुनक एक गोट ग्रन्थ उपलब्ध छनि '**पदार्थीयदिव्यचक्षु**'। कोइलखीय उमापतिक पिताक नाम छलनि रत्नपति ओ मामक नाम छलनि भवदेव। 'पदार्थीयदिव्यचक्षु'क लेखक उमापति अपन पिताक नाम रत्नपति ओ मातुलक नाम 'भवदेव' कहने छथि। अतः दरिहरय-अमरावतीमूलक उमापतिए पदार्थीयदिव्यचक्षुक रचयिता थिकाह।

'**पदार्थीयदिव्यचक्षु**' न्याय-वैशेषिक विषयक पाण्डित्यपूर्ण दार्शनिक ग्रन्थ थिक। विद्वान् लोकनि एहि ग्रन्थक भूरि-भूरि प्रशंसा कयलनि अछि। एहि ग्रन्थक महत्त्व एहीसँ आँकल जा सकैत अछि जे विश्रुत मैथिल दार्शनिक सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र पण्डित बच्चा झा अपन एकटा शिष्य लक्ष्मीनाथ झाकेँ ई ग्रन्थ पढ़ओने छलथिन। पण्डित बच्चा झा जाहि ग्रन्थकेँ मान्यता देलनि से अवश्ये सामान्य कोटिक ग्रन्थ नहि भ' सकैत अछि।

एहिठाम 'पदार्थीयदिव्यचक्षु' पर उठल विवादोपर विचार क' लेब आवश्यक बुझना जाइत आछि। कारण ओहि विवादक सम्बन्ध उमापतिक परिचय ओ स्थितिकालसँ अछि। ई ग्रन्थ पण्डित धीरानन्द मिश्रक सम्पादनमे १९६१ ई०मे मिथिला संस्कृत शोध-संस्थानसँ प्रकाशित भेल। ग्रन्थक सम्पादन धीरानन्द मिश्र एहि ग्रन्थक रचनाक श्रेय कोइलखवासी 'उमापति'केँ देबाक पक्षमे नहि छथि। पण्डित धीरानन्द मिश्र ग्रन्थक भूमिकामे विस्तारसँ अपन विचार प्रतिपादित कयलनि अछि।

'पदार्थीय दिव्यचक्षु'क प्रणेता ग्रन्थारम्भमे एवं अन्तक पुष्पिकावाक्यमे अपन पिताक नाम रत्नपति देने छथि। आरम्भक तेसर श्लोकमे अछि—

रत्नावती-रत्नपत्योः पित्रोः पूर्व-तपोबलात्।
आतनोमि पदार्थीयं दिव्यचक्षुरुमापतिः॥

पुष्पिकावाक्यमे पिताक हेतु अनेक विशिष्ट शब्दक प्रयोग करैत रचयिता कहलनि अछि —

'इति वेदवेदाङ्गपारग-श्रीरत्नपत्युपाध्यायात्मज-महामहोपाध्याय-काश्यप श्रीमदुमापतिविरचितं पदार्थीयदिव्यचक्षुः सम्पूर्णम् ।।'

ग्रन्थक सम्पादक महोदयकें रत्नपतिविरचित दुइ गोट ग्रन्थ भेटलनि। प्रथम ग्रन्थ **'हरिविजय'** नामक महाकाव्य जकर मिथिलाक्षरमे प्रतिलिपि कयल प्रतिमे लिपिकाल १६४४ ई० अछि। ओ एहि रत्नपतिकें उमापतिक पिता सहज भावसँ मानि हुनका १६४४ ई०सँ पूर्व होयबाक अनुमान कयलनि। दोसर ग्रन्थ थिक रत्नपतिरचित **'विवेकोदय'** नामक ग्रन्थ जकर प्रतिलिपि लक्ष्मण-संवत् ४२९मे वालीग्राममे महामहोपाध्याय शिवपतिक आज्ञासँ श्रीनारायण नामक व्यक्ति कयने छलाह—

'ल० सं० ४२९ वालीग्रामे महामहोपाध्यायश्रीशिवपतेराज्ञया श्रीनारायणेन लिखितमिदं पुस्तकमिति।'

ई शिवपति के छलाह से ग्रन्थकारक देल **पुष्पिका**'मे भेटैत अछि, यथा—

'इति महामहोपाध्याय श्रीहरि·······त्मज महोपाध्याय श्रीशिवपतेरनुजेन महामहोपाध्याय श्रीरमापतेरग्रजेन श्रीरत्नपतिशर्मणा कृतोऽयं विवेकोदयः सम्पूर्णः।'

ई रत्नपति हरि (हर?)क पुत्र, शिवपतिक अनुज ओ रमापतिक अग्रज छल ह। हुनक समकालेमे विवेकोदयक प्रतिलिपि भेल छल। अतः सम्पादकक मतें लक्ष्मण-संवत् ४२९ अर्थात् १५३७ ई०मे ई रत्नपति विद्यमान छलाह। हिनक पुत्र उमापति सोलहम शताब्दीक सिद्ध होइत छथि।

दोसर दिस, कोइलखवासी उमापतिक शिष्य गोकुलनाथक समय १६५०-१७४० ई० धरि मानल जाइत छनि। विवेकोदयकार रत्नपतिक पुत्र उमापतिकें मानि लेने अवश्ये ओ कोइलखवासी उमापति नहि सिद्ध होइत छथि। परन्तु पं० धीरानन्द मिश्र पदार्थीयदिव्यचक्षुमे देल एकटा मूल्यवान सूचनाकें सर्वथा विचार कोटिमे नहि रखलनि। एहि ग्रन्थक दोसर श्लोकमे उमापति कहने छथि जे हुनक माम भवदेव हुनक गुरु छलथिन—

मातुलभवदेवादीनात्मगुरूनादराद् वन्दे ।।

कोइलखवासी उमापतिक मातामह छलथिन पलिवाड़ मूलक कवीन्द्र यदुनन्दन जनिक दोसर विवाहमे सबसँ छोट पुत्र छलथिन भवदेव जनिक सोदर बहिनिक पुत्र छलाह उमापति। कोइलखवासी उमापतिक गोत्र काश्यप छलनि आ

पदार्थीयदिव्यचक्षुक रचयिता उमापतिक गोत्र सेहो काश्यप कहल गेल छनि। अतः 'हरिविजय' एवं 'विवेकोदय'क रचयिता रत्नपति पदार्थीयदिव्यचक्षुक रचयिता उमापतिक पिता नहि छलाह। हुनक पिता रत्नपति ओ छलाह जनिक विवाह भवदेवक बहीनिसँ भेल छलनि। ओ वस्तुतः छलाह कोइलखवासी काश्यपगोत्रीय दरिहरय-अमरावती मूलक रत्नपति जनिक पुत्र छलाह उमापति, पदार्थीयदिव्य-चक्षुक रचयिता।

अतः कोइलखवासी काश्यप गोत्रीय दरिहरय-अमरावती मूलक महामहोपाध्याय पण्डित उमानाथ प्रसिद्ध उमापति मैथिली पारिजातहरणक रचयिता छलाह। एहि उमापतिक पंजीगत परिचयसँ मकवानीक संपर्कक एकटा सूत्रक सूचना भेटैत अछि जकर चर्चा आगाँ प्रसंगक्रमेँ होयबे करत।

उमापतिक पिता रत्नपतिकेँ पंजीमे महामहोपाध्याय ओ कवि कहल गेल छनि। पदार्थीयदिव्यचक्षुमे हिनका 'वेदवेदाङ्गपारग' कहल गेल छनि। एतावता ई सिद्ध होइछ जे ओ विद्वान् एवं कवि छलाह। मिथिलामे रत्नपति ओ कविरत्न नामक अनेक व्यक्ति भेल छलाह तथा एहि नामसँ सम्बद्ध अनेक ग्रन्थ भेटैत अछि। ऊपर 'हरिविजय' ओ 'विवेकोदय' नामक ग्रन्थक चर्चा भेल अछि जकर रचयिता उमापतिक पितासँ भिन्न रत्नपति थिकाह से सिद्ध भ' गेल अछि। एकरा अतिरिक्त निम्नलिखित कविरत्नक सूचना भेटैत अछि—

१. कामरूपक राजा गाभूरु खानक आदेशसँ शाके १४७६ (१५५४ ई०)मे 'कामन्दकीय नीतिशास्त्र'क प्रतिलिपिकर्त्ता कबिरत्न।

२. गङ्गेशोपाध्यायक 'न्यायतत्त्वचिन्तामणि'क 'नीर-क्षीर-निरूपण' नामक टीकाग्रन्थक कर्त्ता कविरत्न। हिनका विद्वान् लोकनि उमापतिक पिता मानैत छथि।

३. वसु-रस-शर-शशी शकाब्द (१५६८-१६४६ ई०)मे 'रत्न-कलाप' नामक ग्रन्थक लेखक 'विदितो विदेहे करम्बहावंशजवत्सगोत्रः' रामदासक प्रपौत्र, वासुदेवक पौत्र एवं रघुनन्दन सत्यवतीक पुत्र कविरत्न विष्णुदेव छलाह।

४. नेपाल दरबार लाइब्रेरीमे रक्षित 'सरोजकलिका'क लेखक कविरत्न।

५. 'रागतरंगिणी'क एकटा अर्द्धनारीश्वर-वर्णनक गीतक रचयिता कविरत्न।

६. 'रागतरंगिणी'क नायिकावर्णनविषयक गीतक रचयिता कवि रतनाञी। कवि रतनाञी नाम कविरत्नक तद्भव रूप थिक।

७. पंजीग्रन्थमे 'विवादचन्द्र'क रचयिता मिसरू मिश्रक अनुज होरब मिश्रक उपाधि कविरत्न भेटैत अछि।

८. पंजिएग्रन्थमे तल्हनपुर मूलक रतिमिश्रक पुत्र हरिकृष्ण मिश्रक सेहो उपाधि कविरत्न भेटैत अछि।

एहि सभमे क्रमसंख्या १, २, ४, ५, ६ मे सँ कोन कविरत्न उमापतिक पिता थिकाह वाकेयो अन्ये कविरत्न थिकाह; से बिक छयबाक कोनो साधन सम्प्रति उपलब्ध नहि अछि । परन्तु उमापतिक पिता कविरत्नपति छलाह धरि विशिष्ट विद्वान् ।

रमानाथ बाबूक कथ्य छनि जे प्रायः शैशवहि अवस्थामे उमापतिक पिताक देहान्त भ' गेलनि, तेँ ओ अपन मातृकमे माम भवदेवसँ पढ़लनि । परन्तु एहिसँ हमर सहमति नहि । उमापतिक अनेक गुरु छलथिन जाहिमे विशिष्ट छलथिन भवदेव। ई बात हुनक अपने कथनसँ स्पष्ट अछि। 'आदीन्' ओ 'गुरून्' बहुवचनान्त प्रयोगसँ तँ यैह सिद्ध होइछ 'मातुलभवदेवादीनात्मगुरूनादराद् वन्दे।' भवदेव छलाह विशिष्ट नैयायिक तेँ पितेक आदेशसँ हुनकासँ उमापति पढ़' गेल होयताह । पदार्थीयदिव्यचक्षु उमापतिक प्रौढ़कालक रचना थिक । एकर पुष्पिकावाक्यमे अपन पिता रत्नपतिक नामक संग 'श्री'क प्रयोग कयने छथि जे जीवित व्यक्तिक नाममे लगैत छल। अतः ई ग्रन्थ हुनक पिताक जीवन-कालमे रचित भेल छल। तेँ उमापतिक शैशवावस्थामे हुनक पिताक मृत्युक कल्पना समीचीन नहि लगैत अछि ।

मातामहक नाम छलनि **कवीन्द्र यदुनन्दन** ओ अनेक माममे सँ एकटा माम छलथिन नैयायिक भवदेव। पंजीमे हिनक मातामहीक नाम **'चिलकी'** भेटैत अछि परन्तु माताक नाम नहि। पदार्थीयदिव्यचक्षुमे अपन माताक नाम **'रत्नावती'** देने छथि । मिथिलाक स्त्रीगणक साधारणतः दुइ गोट नाम होइत अछि, एकटा नैहरक मूल नाम ओ दोसर सासुरमे अयलापर सासुरक लोक द्वारा देख गेल नाम। **'रत्नावती'** नाम नैहरक मूल नाम नहि अपितु सासुरमे पति रत्नपतिक नाम-साम्यपर 'रत्नावती' प्रदत्त नाम थिक।

उमापतिक पत्नीक नाम छलनि **मनोरमा** । ई मनोरमा छलीह खड़ोरय मूलक प्रसिद्ध मेघठाकुरक सबसँ छोट पौत्र कामदेव ठाकुरक कन्या तथा **पण्डितराय रघुनन्दनक** दौहित्रीक कन्या । रघुनन्दन रायक बालक छलाह **चतुर्भुज राय**। ई चतुर्भुजराय, **चतुर चतुर्भुज** नामसँ बहुतो मैथिली गीतक रचना कयने छथि। मोरङ्क सिंहदलनक आदेशसँ **'गीतगोपाल'** नामक संस्कृत काव्यक रचना कयने छलाह ।

भक्तपुरक राजा जगज्ज्योतिर्मल्ल ओ पाटनक राजा सिद्धि नरसिंहमल्लक आश्रयमे मैथिली गीत सभक रचना कयने छलाह। एही चतुर्भुजक भगिनीक जमाय

छलथिन उमापति । अर्थात् मनोरमाक माय ओ उमापतिक सासुक माम छलथिन चतुर्भुज।

चतुर्भुजकें पंजीमे विचित्र विशेषण देल गेल छनि **'माकमानी-पातिसाह'**। चतुर्भुज मकमानीक पातिसाह नहि रहल होयताह। तखन एहन उपाधि किएक ? एहि ठाम नेपाली इतिहासकार द्वारा वर्णित एकटा घटनाक उल्लेख करब असंगत नहि होयत। तिरहुतक ब्राह्मण लोकनिक शिष्यत्व ग्रहण करैत छलथिन सेन राजा लोकनि तकर सूचना पहिनहि देल गेल अछि । ओ तिरहुतिया गुरु लोकनि राज दूतक कार्य सेहो करैत छलाह। अतः प्रचुर सम्पत्तिक भागी होइत छलाह। बाल-चन्द्रशर्मा एकटा घटनाक विवरण देलनि अछि। यथा—

"बुटवल-पालपाक विनायकसेनक चारिम वा पाँचम पीढ़ीक राजा गन्धर्व सेन गुल्मी ओ खाँचीक राजाक सहयोगसँ वल्ह्यांग (वझांग ?)क मगरराजाकेँ पराजित क' पहाड़ ओ तराइक बेस पैघ भागपर अधिकार क' लेलनि। तीनू राजामे विजित भूभागक बाँट-चूट भेल परन्तु खिदिम राज्यक बटवारामे तीनूमे मतभेद भ' गेल। तखन एकटा ब्राह्मणकेँ ई खिदिम राज्य दान क' देल गेल जाहिपर ओहि ब्राह्मण वंशक अधिकार बहुत काल धरि रहल।"

की चतुर्भुजक 'माकमानी-पातिसाह' उपाधिसँ कोनो प्रकारेँ जोड़ल जा सकैत छैक एहि घटनाकेँ ? किछु कहब कठिन । मुदा मकमानीमे चतुर्भुजकेँ ततवा सम्पत्ति, ऐश्वर्य ओ प्रतिपत्ति छलनि जाहिसँ हुनका अपन देशक लोक 'माकमानी-पातिसाह' बुझैत-कहैत छलनि। हिनके माध्यमे हिनक भगिनीक जमाय कोइलखवासी उमापतिक प्रवेश मकवानपुर राजसभामे भेलनि आ यैह उमापति ओत' पारिजातहरण लिखलनि।

पंजीमे उमापतिक पुत्रक कतहु उल्लेख नहि अछि। परन्तु दुइ गोट कन्याक नाम भेटैत अछि **दैआ** ओ **मैञा** जे प्रायः **'दया'** ओ **'माया'**क तद्भव रूप थिक। एहि दुहू कन्याक सन्तानक विस्तृत परिचय पंजीमे भेटैत अछि जाहिमे अनेको विशिष्ट व्यक्तित्व-सम्पन्न छलथिन।

कहल जाइत अछि जे प्रसिद्ध गोकुलनाथ उपाध्याय कवि उमापतिक शिष्य छलाह । उमापति हुनक परीक्षा-गुरु छलथिन । एकटा प्रसिद्ध किंवदन्ती अछि जे उमापति जखन अत्यन्त वृद्ध छलाह तखन धर्मशास्त्रविषयक कोनो कठिन विवादमे मध्यस्थताक हेतु आमन्त्रित कयल गेलाह । हुनक ग्राम ओ गन्तव्य स्थलक मध्य एकटा नदी बहैत छल । ओहिमे बाढ़ि आयल छलैक तेँ बड़ उतफाल छलैक। उमापति स्वयं नहि जाय अपन प्रतिनिधि रूपमे गोकुलनाथकेँ पठओलथिन। संगहि एकटा पद्य सेहो पठओलथिन—

हम अति बूढ़ नदी नरखाहि। एकठा नाव चढ़ब नहि ताहि ।।
गोकुलनाथ कहैछथि जैह। हमरो सम्मति मानब सैह ।।

उमापति-गोकुलनाथक ई किंवदन्ती ततेक प्रचलित भ' गेल अछि जे सहजहि एकर खंडन करव संभव नहि अछि। किन्तु अनेक ठाम ई किंवदन्ती रामदास झा (आनन्दविजय नाटक-कर्त्ता) तथा गोकुलनाथक संग जोड़ल भेटैत अछि।[1] किछु गोटे कोइलखवासी उमापतिक स्थानमे मङरौनीवासी उमापतिक संग एहि कथाकेँ जोड़ैत छथि। मङरौनीक उमापति धर्मशास्त्रज्ञ छलाहो आ गोकुलनाथ स्वयं मङरौनिएक बासी छलाह तेँ ई संभव भ' सकैत अछि।

उमापतिक स्थितिकाल

उमापतिक स्थितिकाल निश्चित करबामे विशेषतः अनुमानेक आश्रय लेब' पड़त। पारिजातहरणमे गीत सभक भणितामे उमापति अपना लेल **गुरु, सुगुरु, सुमति**,इत्यादिक प्रयोग कयने छथि। एहिसँ अनुमान होइत अछि जे प्रायः हरिहर देवक राजगुरु छलाह तथा विभिन्न अवसरपर परामर्श सेहो दैत छलथिन। पारिजातहरणक मंगलगीतमे सकल सभाकेँ आशीर्वाद देलनि अछि —

सुमति उमापति आसिख वानी।
सकल सभा जय करथु भवानी ।।

हिन्दूपतिकेँ सेहो अनेक गीतक अन्तमे आशीर्वाद देलनि अछि, यथा—**'हिन्दूपति प्रतिपालथु धरा'** इत्यादि। भरतवाक्यक गीतमे हिन्दूपतिक चिरायुता एवं हुनक गुण-कीर्त्तिक गान सर्वत्र होयबाक आशीर्वाद देलनि अछि।

एहि सभसँ सहजे अनुमेय जे उमापति हरिहरदेवसँ वयसमे जेठ छलथिन। सेहो सामान्य अन्तर नहि, बहुत बेसी वर्षक अन्तर छल। से पन्द्रहो वर्ष मानि ली तँ उमापतिक मृत्युकाल १६६० मानल जा सकैछ।

पारिजातहरणक विभिन्न उक्तिसँ आभास भेटैत अछि जे उमापतिक वयस

---

१. पारिजातहरणक भूमिका (पृष्ठ-१२-१३) मे चेतनाथ झा एहि किंवदन्तीकेँ रामदास झाक संगजोड़ैत कहने छथि जे गोकुलनाथ अध्ययन समाप्त क' उमापतिक ओत' परीक्षा देब' आयल छलाह। उमापति उपाध्याय ओहि समय बहुत वृद्ध छलाह। राघव सिंहक सभा मध्य क्षयमास हो कि नहि तकर विवाद भेल। गोकुलनाथ उपाध्यायक पक्षक विपरीत बहुत विद्वान रहथि। मध्यस्थ के हो, तकर विचार भेल। उत्तम विद्वान् ओ वृद्ध जानि म० म० रामदास झाकेँ बजाओल गेल। वृद्ध रहने ओ बाटमे उमड़ल नदी बाधक होयबाक कारणेँ ओ स्वयं नहि जाय ई पद्य लिखि पठा देलथिन।

तखन साठिकेँ पार क' गेल होयतनि। हरिहरदेवक जीवनक अन्तिम भागमे जे पारिवारिक विग्रह भेल छल तकर आभास जेना एहि नाटकमे भेटैत अछि। हरिहरदेवक पत्नी सभमे पारस्परिक मनोमालिन्य स्थान बना लेने छल। रुक्मिणी ओ सत्यभामाक प्रतिस्पर्द्धामे माहेश्वरी देवी ओ महाराणीधिराणीक प्रतिस्पर्द्धाक झलक उमापति देबाक प्रयास कयलनि। पारिजातहरणमे शृंगारक प्रधानता रहितो संयम ओ शालीनताक पूर्ण निर्वाह कयल गेल अछि। कविक काव्य ओ भाषामे गरिमामय प्रौढ़ता सर्वत्र विद्यमान अछि। एहि सबसँ अनुमान होइछ जे एहि नाटकक रचना करबाकाल हुनक वयस सत्तरि वर्षक लगभग रहल होयतनि। हरिहरदेवक यवन-विजयक घटना १६४०-५० ई०क मध्य भेल होयत जकरा बाद पारिजातहरण लिखल गेल। जँ मोटामोटी मानि लेल जाय जे १६५० ई० मे उमापति सत्तरि वर्षक छलाह तँ हुनक जन्म-समय १५८० ई० अनुमित होयत। कहल जाइत अछि जे उमापति अत्यन्त वृद्ध भ' क' दिवंगत भेलाह। हुनक परम आयु अस्सी वर्ष मानि लेने १६६० ई० मे हुनक मृत्युक कल्पना क' सकैत छी। एहना स्थितिमे गोकुलनाथकेँ हुनक शिष्य मानल जा सकैछ यदि गोकुलनाथक जन्म समय १६४० ई० मानल जाय। यौवन प्राप्त करैत गोकुलनाथक परीक्षा-गुरु उमापति अत्यन्त वृद्धावस्थामे भ' सकैत छलथिन। 'पदार्थीयदिव्यचक्षु'क भूमिकामे धीरानन्द मिश्र गोकुलनाथक जन्मकाल १६४० ई० माननहु छथि। किन्तु कतोक विद्वान् गोकुलनाथक जन्मकाल सतरहम शताब्दीक चारिम चरणमे मानैत छथि। से मानला पर इहो मानहि पड़त जे तखन गोकुलनाथ कोइलखकक उमापतिक शिष्य नहि, कोनो अन्य उमापतिक शिष्य छलाह।

एवं प्रकारेँ कहि सकैत छी जे सोलहम शताब्दीक तेसर चरण ओ सतरहम शताब्दीक प्रथम तीन चरणक मध्य—आगाँ-पाछाँ किछु वर्ष छोड़ि क'—उमापतिक जीवन-काल रहल होयतनि। कोनहु स्थितिमे उमापतिक जीवन-कालकेँ १५७० ई० सँ पूर्व ओ १६७० ई०क पश्चात् नहि खीचल जा सकैत अछि। ओना दू-चारि वर्षक अन्तर जँ हो तँ से नगण्य थिक।

मकमानी राजसभामे मैथिली

एतबा विवेचनक पश्चात् निर्विवाद सिद्ध भ' गेल जे उमापति मकमानी राजसभामे कवि, पण्डितमुख्य, सुगुरु ओ सुमति रूपमे छलाह। कहियासँ कहिया धरि रहलाह से सुनिश्चित करबाक कोनो साधन नहि अछि। परन्तु एही संग एकटा प्रश्न उठैत अछि जे मकमानी राजसभामे की ई एकमात्र मैथिली कवि छलाह? मैथिली साहित्यक निर्माणमे एहि राजवंशक की योगदान रहल अछि तकर कोनो

आकलन एखन धरि नहि भ' सकल अछि। सत्त पूछल जाय तँ उमापतिक पारिजात-हरणक अतिरिक्त आन कोनो सामग्री प्रकाशमे आयलो ने अछि। परन्तु उमापतिक कृतिसँ भिन्नो कतोक गीत सभ दृष्टिपथपर आयल अछि जाहिसँ मकमानीक परिसरक साहित्यिक वातावरणपर प्रकाश पड़ि सकैत अछि।

एमहर अनुसंधान-क्रममे **देवनाथ** कविक गीत उपलब्ध भेल अछि जे स्पष्टे मकमानीक कोनो राजाक आश्रयमे रचित भेल छल। ई गीत कवीश्वर चन्दा झा केर संग्रहसँ उपलब्ध भेल अछि। देवनाथ कविक ई गीत कवीश्वर चन्दा झा निम्न रूपमे संकलित कयने छलाह—

जौं हम जनितहुँ तनितह उपजत मदन बेआधि।
बाहु फाँस लय फसितहुँ हँसितहुँ अभिमत साधि॥
समुखि भइए हसि हेरितहुँ करितहुँ सखितन खेद।
मनसिजशर नहि सहितहुँ रहितहुँ हम निरभेद॥
परसनि भय रति सजितहुँ बजितहुँ लाज निवारि।
कय परिरंभन गबितहुँ भरितहुँ गुण अवधारि॥
अजस सुजस कय गुनितहुँ सुनितहुँ नहि उपहास।
मनओ नहि परिहरितहुँ करितहुँ मन न उदास॥
नारि मनोरथ अभिमत शत शत रहस निरूप।
कवि देवनाथ रसिकमणि मकमानी बुझ भूप॥

नगेन्द्रनाथ गुप्त एहि गीतकेँ 'मिथिलाक पद' कहि क' विद्यापतिक भणितामे ग्रहण कयने छथि। समस्त गीतक पाठ तँ यैह अछि किन्तु भणितामे देल गेल अछि—

कवि विद्यापति गाओल रस बुझ सिवसिंह भूप॥

नगेन्द्र बाबूक संग्रहमे 'मिथिलाक पद' कहि क' जे गीत सभ देल गेल अछि से सभ कवीश्वर चन्दा झाक संग्रह-पोथीजे सेहो देखल जाइत अछि। आनो कविक गीतकेँ गुप्त महोदय भणिता बदलि क' विद्यापतिक नामपर चला देने छथि से कथा सर्वविदिते अछि। इहो गीत चन्दा झाक संग्रहसँ लेल गेल मुदा भणिता बदलि क'। मित्र-मजुमदार सेहो गुप्त महोदयक अनुसरण करैत एहि गीतकेँ विद्यापतिक नामपर ग्रहण कयलनि अछि किन्तु विद्यापतिए केर गीत थिकनि ताहिमे तारतम्य अवश्य भेल छलनि। तेँ एहि गीतक सम्बन्धमे विशेष टिप्पणी दैत कहलनि —"ई पद कोनो प्राचीन पुस्तकमे नहि पाओल जाइछ। नगेन्द्रनाथ गुप्त एकरा लोकक मुखसँ सूनि क' संग्रह कयने छलाह। तेँ एकर भाषा नवीन अछि।"

राजपण्डित बलदेव मिश्रक लगमे जे चन्दा झाक पोथा छलनि ताहिमे हमरा ई गीत देवनाथक भणितामे भेटल छल। स्वर्गीय रमानाथ झाक लगमे चन्दा झाक जे पोथा छलनि ताहूमे ई गीत वर्तमान छल जकरा उतारि क' प्रो० वेदनाथ झा (मैथिली-विभाग, जयनगर कॉलेज) हमरा उपलब्ध करऔलनि। दुहूक पाठ ओ भणिता समान अछि। स्व० दिनकरदत्त मिश्र सेहो प्राचीन मैथिली गीतक संकलन कयने छलाह। ओहू संग्रहमे ई गीत भेटल अछि। ओहिमे पाठान्तर छैक मुदा कोनो भणिता नहि छैक। अतः कवीश्वरक हस्तलेखक आधारपर हम एहि गीतकेँ देवनाथक कृति मानैत छियनि। देवनाथ कविक यथार्थ परिचय निश्चित नहि भ' सकल अछि मुदा ई छलाह मकमानीक आश्रयमे। देवनाथ कविक एकटा देवीवन्दनाक गीत **'मैथिल-भक्त-प्रकाश'** नामक गीत-संग्रहमे संकलित भेटैत अछि जे निम्न रूपक अछि—

नील वरनी शम्भु घरनी छिटक छवि जिमि दामिनी।
पाञो नूपुर रबय किंकिणि सुरब सुरनर मोहिनी॥
कठिन खड्गहि लीअ दुर्गे श्रवन झलकय टंकिनी।
अरुण नयना हसित वयना संग कोटिस योगिनी॥
चन्द्रभाल भुजंग भूषित करहु असुर निखंडिनी।
विन्ध्यवासिनि होउ दाहिनि सुनहु हे भव पाविनी॥
भूप से द्विपनाथ-सुत देवनाथ सहित निवासिनी॥

भणितामे कहल गेल **'भूप द्विपनाथ-सुत'** के, से नहि जानि। किन्तु पहिल गीतक आधारपर एहू भूपक खोज मकमानी वा ओकर शाखाराज्यमे करब अपेक्षित अछि।

एकटा आओर गीत उपलब्ध अछि मिथिला-गीत-संग्रह (भाग-४, गीत संख्या-८)मे। विरहिणी नायिका दक्षिण पवनकेँ संबोधित क' प्रियतमकेँ अपन विरह-संवाद प्रेषित करैत अछि। एहि गीतक भणिता अछि—

राजा हिन्दूपति परवाने, सुलताने।
जनि देल पिआ मोर आने, वरदाने॥

एहि गीतमे 'हिन्दूपति राजा सुलताने' स्पष्टतः आश्रयदाताक नाम थिक। श्री नरेन्द्रनाथ दास 'मिथिलाङ्क' (मिथिला-मिहिर, १९३५)क अपन निबन्ध 'मिथिलेश लोकनिक मैथिली कविता'मे यैह गीत किछु भिन्न पाठान्तरक संग निम्न प्रकारक टिप्पणीक संग उद्धृत कयने छथि—"एक पोथीमे हमरा एक प्राचीन गीत भेटल अछि जे मकमानीक राजा हिन्दूपतिक रचना थिक।" श्री दासजीक उद्धृत गीतक भणितामे अछि —

राजा हिन्दूपति मखमानी। जनि देलनि पहु मानी॥

राजपण्डित बलदेव मिश्रक लगमे जे चन्दा झाक पोथा छलनि ताहिमे हमरा ई गीत देवनाथक भणितामे भेटल छल। स्वर्गीय रमानाथ झाक लगमे चन्दा झाक जे पोथा छलनि ताहूमे ई गीत वर्तमान छल जकरा उतारि क' प्रो० वेदनाथ झा (मैथिली-विभाग, जयनगर कॉलेज) हमरा उपलब्ध करऔलनि। दुहूक पाठ ओ भणिता समान अछि। स्व० दिनकरदत्त मिश्र सेहो प्राचीन मैथिली गीतक संकलन कयने छलाह। ओहू संग्रहमे ई गीत भेटल अछि। ओहिमे पाठान्तर छैक मुदा कोनो भणिता नहि छैक। अतः कवीश्वरक हस्तलेखक आधारपर हम एहि गीतकेँ देवनाथक कृति मानैत छियनि। देवनाथ कविक यथार्थ परिचय निश्चित नहि भ' सकल अछि मुदा ई छलाह मकमानीक आश्रयमे। देवनाथ कविक एकटा देवीवन्दनाक गीत **'मैथिल-भक्त-प्रकाश'** नामक गीत-संग्रहमे संकलित भेटैत अछि जे निम्न रूपक अछि—

नील वरनी शम्भु घरनी छिटक छवि जिमि दामिनी।
पाञ्जो नूपुर रवय किंकिणि सुरब सुरनर मोहिनी॥
कठिन खड्गहि लीअ दुर्गे श्रवन झलकय टंकिनी।
अरुण नयना हसित वयना संग कोटिस योगिनी॥
चन्द्रभाल भुजंग भूषित करहु असुर निखंडिनी।
विन्ध्यवासिनि होउ दाहिनि सुनहु हे भव पाविनी॥
भूप से द्रिपनाथ-सुत देवनाथ सहित निवासिनी॥

भणितामे कहल गेल **'भूप द्रिपनाथ-सुत'** के, से नहि जानि। किन्तु पहिल गीतक आधारपर एहू भूपक खोज मकमानी वा ओकर शाखाराज्यमे करब अपेक्षित अछि।

एकटा आओर गीत उपलब्ध अछि मिथिला-गीत-संग्रह (भाग-४, गीत संख्या-८)मे। विरहिणी नायिका दक्षिण पवनकेँ संबोधित क' प्रियतमकेँ अपन विरह-संवाद प्रेषित करैत अछि। एहि गीतक भणिता अछि—

राजा हिन्दूपति परवाने, सुलताने।
जनि देल पिआ मोर आने, बरदाने॥

एहि गीतमे 'हिन्दूपति राजा सुलताने' स्पष्टतः आश्रयदाताक नाम थिक। श्री नरेन्द्रनाथ दास 'मिथिलाङ्क' (मिथिला-मिहिर, १९३५)क अपन निबन्ध 'मिथिलेश लोकनिक मैथिली कविता'मे यैह गीत किछु भिन्न पाठान्तरक संग निम्न प्रकारक टिप्पणीक संग उद्धृत कयने छथि—"एक पोथीमे हमरा एक प्राचीन गीत भेटल अछि जे मकमानीक राजा हिन्दूपतिक रचना थिक।" श्री दासजीक उद्धृत गीतक भणितामे अछि—

राजा हिन्दूपति मखमानी। जनि देलनि पहु मानी॥

अनुसन्धान क्रममे हमरा एहि गीतक कर्त्ताक दृष्टिएँ परिमार्जित पाठ भेटल अछि, यथा—

दछिन पवन तोहें जाहे, अवगाहे।
जँह रे बसथि मोर नाहे ॥
जाइत देखल पथ कान्हे, अनुमाने।
मदने साजल पचबाने ॥
नयन ढरकि पड़ नीरे, भिजु चीरे।
पिअ विनु दगध सरीरे ॥
परदेस रहल कन्हाई, नहि आई।
रमनि खसलि मुरुछाई ॥
कहबन्हि हुनि मोरि विनती जगरीती।
बड़ जन नहि तेज प्रीती ॥
हिन्दूपति सुलताने, परमाने।
जनि देल पिआ वरदाने ॥

तीनू ठाम कविक नामक अभाव अछि। ई हिन्दूपतिक रचना नहि थिकनि अपितु हुनक आश्रित कविक रचना थिकनि जनिक नामयुक्त भणिताक चरण लुप्त भ' गेल अछि। संभव अछि जे ई गीत उमापति किंवा देवनाथेक होइनि।

उपर्युक्त गीतक रचयिता हिन्दूपति हरिहरदेव वा आने कोनो हिन्दूपतिवंशी राजाकेँ मानब निस्सन्दिग्ध नहि होयत, परन्तु मकमानी राजा लोकनिक मैथिलीमे काव्य-रचना करब असम्भावित नहि अछि। नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालयमे रक्षित **'नानारागगीतम्'** नामक गीत-संग्रहमे एहि सम्भावनाक हेतु आधार उपलब्ध भेल अछि। ओहि संग्रहमे **'राय राघव'** ओ **'राय हरिहर'**क भणितामे एक-एक गोट गीत भेटैत अछि। राय राघव-भणित गीत अछि—

हा सजनि लो
आजु मुरलि घन-घन बाजे ॥
न जाने विनोदराय कोण दिग साजे ॥
मुरलिक रव सुनि श्रवण विकारे ॥
से बंधु सजनि देखि हृदय चंचरे ॥
कलसिते पानि भलिबो आनि घरे ॥
ए सासु ननंद आडल कि बोंलत आने ॥
राय राघव कह श्रवण गुण जाने ॥
हरिके चरण छादि गति नहि आने ॥

हिन्दूपति हरिहरदेवक पिता छलाह राघव नरेन्द्र। उपर्युक्त गीतक रचयिता **'राघव'क** संग **'राय'** विशेषणसँ कविक राजत्व सूचित होइत अछि। तेँ ई राय राघव **मकमानीक** राजा राघव नरेन्द्र भ' सकैत छथि।

राय हरिहर भणित गीतमे नायिकाक सौन्दर्यक बड़ सुन्दर वर्णन कयल **गेल** अछि—

देख रि धनि अनुपम कान्ति।
मदने जतने सिरिजलि कति भाँति॥ ध्रु० ॥
चिकुर उपर सोभ बंधन सारे।
राहु उगिल जयिसे उग शशधरे॥
ललित दशन वर मुख शशि गोरा।
चाद किरण भ्रमे भ्रमय चकोरा॥
राय हरिहर केओ पुरुब रंगे।
बड़े पुण्ये पायिय धनि रस रंगे॥

एहू [ठाम गीत-कवि 'हरिहर'केँ 'राय' पदवीयुक्त देखैत छी। ई राय हरिहर **मकमानी** राजा, उमापतिक आश्रयदाता हिन्दूपति हरिहरदेव भ' सकैत छथि।

उमापतिक सासुक माम ओ राय रघुनन्दनक पुत्र राय चतुर्भुज मोरङ ओ **पाटन-भक्तपुरक** राज्याश्रयमे काव्य-रचना कयने छलाह। पंजीमे हुनक परिचयक प्रसंग **'माकमानी-पातिसाह'** पदक उल्लेख अछि। एहि पदक तात्पर्य अस्पष्ट अछि परन्तु मकमानीक संग हुनक सान्निध्य-सम्पर्कक सम्पुष्टि एहि पदसँ अवश्य होइत अछि। परन्तु एखन धरि हुनक कोनो एहन गीत नहि भेटल अछि जाहिमे **मकमानी-सेनवंशी** राज्याश्रयक उल्लेख हो। हमरा विश्वास अछि जे अनुसन्धानमे एहन गीत अवश्य भेटबाक चाही।

एहि दिशामे आर अनुसन्धानक अपेक्षा अछि जाहिसँ मकमानी राजसभाक मैथिली-साहित्य-सर्जनक विस्तृत इतिवृत्तपर प्रकाश पड़ि सकय। चतुर्भुज, **देवनाथ** ओ **उमापति** मात्र ओत' आश्रय लेने होयताह से विश्वसनीय नहि अछि। आरो कवि लोकनि अवश्ये रहल होयताह। चतुर्भुज, देवनाथ ओ उमापतिहुक अन्य रचना सभक खोज अपेक्षित अछि।

ऊपर जे किछु गीत सभ देखल अछि ताहि आधारपर निश्चय होइत अछि जे मकमानीक राज-परिसरमे मैथिली काव्यक हेतु उर्वर वातावरण छल। मैथिली गीत-रसक बोद्धा रसिक मकमानीमे छलाह जे उमापतिकेँ पारिजातहरण सन सरस नाटकक रचना ओ ताहिमे प्रौढ़िपूर्ण गीत समाविष्ट करबाक उत्साह भेल छलनि।

राजपुरुषक संगहि राजमहिषी लोकनि सेहो मैथिली गीत-काव्यक, विशेषतः उमापतिक गीतक प्रशंसिका छलीह। पारिजातहरणक गीतमे राजमहिषी लोकनिक नामोल्लेखसँ ई स्पष्ट अछि।

उमापतिक कृति

उमापति उपाध्यायक व्यक्तित्व अत्यन्त गरिमामय छलनि। कवित्व ओ पाण्डित्यक विशिष्ट संयोग हिनकामे छलनि। पारिजातहरण नाटकक अन्तमे 'कवि पण्डितमुख्य' विशेषण हिनक व्यक्तित्वक शिष्टताक परिचायक थिक। रचना ई संस्कृत ओ मिथिलाभाषा दुइमे कयने छलाह। दार्शनिक ज्ञानक अभिव्यक्तिक माध्यम छलनि संस्कृत। परन्तु संयोगसँ संस्कृतमे हिनक एकहि गोट कृति उपलब्ध छनि 'पदार्थीयदिव्यचक्षु' जकर चर्चा पहिनहि भ' चुकल अछि। संस्कृत गद्यमे लिखित एहि ग्रन्थक विषयवस्तु न्याय-वैशेषिक दर्शनसँ सम्बद्ध अछि। एहि ग्रन्थक प्रौढ़ स्फीत गद्य ओ पाण्डित्यपूर्ण प्रतिपादनशैली अत्यन्त आकर्षक अछि।

संस्कृतमे कोनो काव्यकृति एखन धरि दृष्टिपथपर नहि आयल अछि। परन्तु ई विश्वासयोग्य नहि अछि जे 'कविपण्डितमुख्य' संस्कृतमे काव्य-रचना नहि कयने होथि। पारिजातहरणेमे उनैस गोट संस्कृत श्लोक अछि जाहिमे कतोक अत्यन्त कवित्वपूर्ण अछि। रस, अलंकार ओ ध्वनिसँ परिपूर्ण अछि। एहिसँ भिन्न 'विद्याकर-साहस्रक'मे पारिजातहरणक दुइ गोट नान्दीश्लोकक अतिरिक्त दुइ गोट आओर श्लोक 'उमानाथपण्डितस्य' कहि क' उद्धृत अछि। हम जनैत छी, उमापतिक अपर नाम 'उमानाथ' छलनि। तेँ 'विद्याकरसाहस्रक'मे दोसर नान्दी उमानाथेक नामसँ उद्धृत अछि। पारिजातहरणोमे एकटा नवीन गीत उमानाथहिक भणितामे भेटल अछि। अतः 'विद्याकरसाहस्रक'क ओ दुनू उमानाथ पण्डितक श्लोक उमापतिहिक थिकनि। एहि दुनू श्लोकमे कल्पनाक कमनीयता काव्य-रसिकक मनकेँ मुग्ध क' दैत अछि। ओ दुहू श्लोक द्रष्टव्य थिक—

> यत्र ब्रह्मसमुद्भवः कमलया यस्मिन्निवासः कृतः
> पाणौ यत्परमेश्वरेण परमप्रेम्णा समारोपितम्।
> भो भो कुन्दकदम्बकेतकिजपापुष्पाणि वः प्रार्थये
> तत्पद्मं कुसुमं वयञ्च कुसुमान्येवन्न कार्य्यं मनः ॥१९४॥
>
> उमानाथपण्डितस्य ॥

[हे कुन्द, कदम्ब, केतकी, जपा इत्यादि पुष्पगण ! अहाँ लोकनिकेँ प्रार्थना करैत छी। एहन मनमे नहि आनी (अथवा एहन अहंकार नहि करी) जे जत' ब्रह्माक उत्पत्ति भेलनि, लक्ष्मी जत' निवास कयलनि, विष्णु जकरा अत्यन्त प्रेमसँ अपना हाथमे रखलनि से कमल पुष्प थिक आ हमरहु लोकनि पुष्प छी।]

अज्ञास्तरन्ति पारं विज्ञा विज्ञाय द्राङ् निमज्जन्ति ।
कथय कलावति केयं तव नयनतरङ्गिणी रीतिः ॥४८२॥
उमानाथपण्डितस्य ॥

[हे कलावती ! कहू, अहाँक आँखिरूपी नदीक ई कोन रीति थिक जकरा अज्ञ तँ पार क' जाइत छथि परन्तु विज्ञ जानि क' तुरन्त ओहिमे डूबि जाइत छथि !]

उमापतिक मैथिली कृति थिकनि पारिजातहरण नाटक ओ स्फुट गीत सभ। पारिजातहरणक एखन धरिक मुद्रित संस्करणमे २१ गोट मैथिली गीत अछि। किन्तु पारिजातहरणक एकटा हस्तलिखित प्रतिमे दुइ गोट आओर नवीन गीत समाविष्ट अछि। एकरा लगा क' एहि नाटकमे गीतक संख्या २३ भ' जाइत अछि।

पारिजातहरण नाटकक गीतसँ भिन्न १५ गोट स्फुट गीत सेहो ताकल जा सकल अछि। एहिमे १३ गोट गीतमे 'उमापति' भणिता अछि। दुइ गोट गीतमे 'उमानाथ'क भणिता अछि। एकटा गीतमे छोड़ि, शेष १२ गोट गीतमे 'उमापति'क नामक संग 'सुमति' विशेषणक प्रयोग अनिवार्य रूपसँ भेल अछि। तीन गोट गीत भगवती-वन्दनाक अछि। दुइ गोट गीत शिवविषयक अछि। एकटामे कृष्णजन्मक वर्णन अछि। शेष गीत की तँ शृंगाररसक अछि अथवा कृष्णलीलाविषयक। ई सभ गीत 'उमापतिक स्फुट गीत' शीर्षकमे द' देल गेल अछि।

एहि गीत सभक सूक्ष्म विश्लेषणसँ आभास भेटैत अछि जेना ई सभ कोनो ने कोनो नाटकेक गीत हो। पारिजातहरणक आरम्भमे दुर्गाक वन्दना कयल गेल अछि। एहि आधारपर अनुमान क' सकैत छी जे स्फुट गीतक देवीवन्दना सेहो कोनो ने कोनो नाटकेक मंगलगीत थिक। एकटा देवीवन्दनाक गीत (संख्या-३)तँ स्पष्टे प्रवेश-गीत थिक जकर प्रयोग नाटकेमे होइत छल। पारिजातहरणक प्रस्तावनामे एकटा शिवविषयक गीत अछि जाहिमे शिव ओ गौरीक विवाहक अद्भुत प्रक्रियाक वर्णन अछि। स्फुट गीत (संख्या-४)मे महादेवक नृत्यक वर्णन अछि। मैथिली कीर्त्तनियाँ नाटकक प्रस्तावना-मंगल रूपमे शिवक नृत्य अथवा हुनक अर्द्धनारीश्वर रूपक वर्णन विशेष रूपसँ भेटैत अछि। 'आनन्दविजय' ओ 'रुक्मिणीस्वयंवर'मे मंगलगीतक रूपमे शिवक नृत्येक वर्णन अछि। अतः उमापतिक 'जय शम्भु नटा' वला गीत कोनो नाटकक प्रस्तावना-मंगलक गीत बूझि पड़ैत अछि। पाँचम गीत महादेवक उचिती थिक। वर रूप शिक्षक प्रति उचिती गीत गौरी-परिणय विषयक नाटकक अंग बूझि पड़ैत अछि। शेष गीतमे नाट्य-सन्दर्भक आभास स्पष्ट भेटैत अछि। एगारहम गीतक अन्तिम चरणमे अछि—

रतिपति पति मिलु पुरुबक पूने ॥

एहि ठाम 'रतिपति पति'क अर्थ अवश्ये सन्दर्भ-सापेक्ष अछि । रतिपति भेलाह कामदेव से पति रूपमे भेटलथिन । ई अर्थ तखने संगत होयत यदि ई मानी जे ई गीत प्रद्युम्न-प्रभावतीसँ सम्बद्ध अछि जे एहि विषयक कोनो नाटकेमे संभव अछि । हमर अनुमान अछि जे उमापति कृष्ण-लीलासँ सम्बद्ध अनेक नाटकक रचना कयने छलाह जाहिमे एकटा कड़ी पारिजातहरणो थिक । कृष्णलीलाविषयक नाटकमे कृष्णजन्म ओ व्रजलीलासँ ल' क' पारिजातहरण, प्रभावतीहरण इत्यादिक वस्तु संवलित अनेक नाटकक रचना कयने छलाह । ओहीमे 'बालचरित्र' ओ 'चीरहरण' नामक नाटक सेहो छल होयत । कृष्णविषयक आओरो नाटकक कल्पना कयने स्फुट गीतक गीत सभक सन्दर्भ-सापेक्षता संगत भ' जाइत अछि । उमापतिक एहन कय गोट नाटक छल होयतनि से निश्चित नहि कहल जा सकैत अछि । नायिका द्वारा माधवक प्रथम दर्शन, नायक द्वारा नायिकाक प्रथम दर्शन, नायिकाक रूप-सौन्दर्य-वर्णन, नायक-नायिकाक प्रथम मिलन, नायिकाक विरह इत्यादि विषयक उमापतिक गीत सभ अवश्ये नाटकक हेतु पूर्ण उपयुक्त अछि जकर अवसर कृष्णजीवनसँ सम्बद्ध नाटकमे विशेष भ' सकैत अछि । अतः बाबू गंगापति सिंहक मन्तव्य जे उमापतिक एकसँ अधिक नाटक छलनि, भविष्यमे सत्यो प्रमाणित भ' सकैत अछि ।

उमापतिक नाटक : पारिजातहरण

उमापति उपाध्यायक ख्याति नाटककार रूपमे रहलनि अछि । परन्तु नाटको एके गोट एखन धरि जानल अछि आ से थिक 'पारिजातहरण' । परन्तु सोचबाक थिक जे जाहि व्यक्तिक नामेमे 'कवि' शब्द जोड़ल अछि तनिक एके गोट कृति रहल होयतनि ? एहि सम्बन्धमे एकटा संस्मरणक उल्लेख अप्रासंगिक नहि होयत। १९५८ ई०क नवम्बर-दिसम्बरमे मैथिली ऑनर्सक परीक्षाक तैयारीमे छलहुँ । ओहि समयमे कलकत्ता विश्वविद्यालयक मैथिली विषयक अवकाश प्राप्त प्राध्यापक ओ प्रख्यात मैथिली-सेवी बाबू गंगापति सिंह दरभंगाक मिर्जापुर मोहल्लामे अपन नव-निर्मित आवासमे रहैत छलाह । अपन विषयक सम्बन्धमे, खास क' मैथिली साहित्यक सम्बन्धमे हुनकासँ बहुत किछु सुनबाक अवसर भेटल । अनेक एहन वस्तुक सम्बन्धमे सूचना देलनि ओ, जे कोनो मुद्रित ग्रन्थमे नहि छल, एखनो नहि भेटल अछि । ओही क्रममे ओ कहलनि "उमापतिक बारह गोट नाटक लिखल छलनि जे हमर पितामहीकें अभ्यास छलनि ।" हुनक कथनमे तखनो विश्वास नहि भेल छल, एखनो धरि विश्वास करबाक कोनो ठोस आधार नहि भेटल अछि । परन्तु आब जहिना-जहिना उमापतिक सम्बन्धमे गम्भीर अध्ययन करैत गेलहुँ अछि तहिना-तहिना हुनक आरो नाट्यकृति होयबाक संभावना गाढ़ होइत जा रहल अछि । उमापतिक बारह गोट

नाटक नहियो होउन मुदा एके गोट नाटक अवश्ये नहि रचने होयताह। उमापतिक संभावित नाट्यकृतिक अन्वेषण मिथिलाक अतिरिक्त नेपाल तराइक ग्रामीण नाट्यमंडली, मोरङ्क बिदापत नाचक नटुआ, प्राचीन पारिवारिक संग्रह तथा काठमांडूक विभिन्न संग्रहालय सभमे होयबाक चाही।

पारिजातहरण उमापतिएक कृतिक रूपमे नहि, अपितु समस्त मैथिली नाट्य साहित्यमे सर्वाधिक लोकप्रिय नाटक रहल अछि। एकर प्रमाण ऐह अछि जे सर्वाधिक प्राप्त हस्तलिखित प्रति, सर्वप्रथम मुद्रित ओ सर्वाधिक मुद्रित संस्करण-बाला नाटक होयबाक गौरव पारिजातहरणेकेँ छैक।

एहि नाटकक एखन धरि सात गोट संस्करण भ' चुकल अछि। एकर सर्वप्रथम मुद्रण उनैसम शताब्दीक अन्तिम दशकमे भेल छलैक। १८९३ ई०मे दरभंगाक मिथिला पब्लिशिंग कम्पनी द्वारा ई प्रकाशन भेल छल। काशीक भारत जीवन यन्त्रालयमे मुद्रण भेल छल। एकर सम्पादन के कयने छल ताहि सम्बन्धमे कोनो सूचना मुद्रित पोथीमे नहि देल गेल अछि। परन्तु कहल जाइछ जे एकर सम्पादन कवीश्वर चन्दा झा कयने छलाह। आवरणपत्रपर सूचना देल गेल अछि जे—

"सब पुस्तकें दर्भङ्गा, श्रीयुत विन्ध्यनाथ बाबू के मकानपर, लालजी ठाकुरके पास मिलेगी।"

एहिसँ अनुमान होइछ जे प्रायः बाबू विन्ध्यनाथ झा एकर मुद्रणक व्यवस्था करओने छलाह। पोथीमे कोनो भूमिका वा पाठान्तर नहि देल गेल छैक परन्तु प्राकृत अंशक संस्कृत छाया टिप्पणीमे द' देल गेल छैक।

एहि नाटकक दोसर संस्करण जार्ज ग्रियर्सन द्वारा प्रस्तुत भेल जे १९१७मे बिहार-उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी जर्नलक प्रथम खण्डमे प्रकाशित भेल। तीन गोट प्रतिक आधारपर पाठान्तरक प्रस्तुतिक संग ग्रियर्सनक विद्वत्तापूर्ण भूमिका ओ मूल नाटकक अङरेजी अनुवाद रहबाक कारणेँ ई संस्करण अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध भेल।

१९१७ मे दरभंगाक राजप्रेससँ चेतनाथ झाक संपादनमे तेसर संस्करण प्रकाशित भेल। ई संस्करण यद्यपि १८९३ बाला संस्करणक पुनर्मुद्रण छल तथापि एहिमे सम्पादकक भूमिका नेड़ो छल। भूमिकामे उमापतिक परिचय, आश्रयदाता ओ स्थितिकालपर प्रकाश देबाक चेष्टा कयल गेल अछि।

१९६० मे कृष्णनन्दन पीयूष हिन्दी अनुवादक संग पारिजातहरण प्रकाशित करओलनि। पाठमे ग्रियर्सनक अनुसरण कयल गेल तथापि ग्रियर्सन द्वारा मैथिलीक

ह्रस्व 'ए' एवं ह्रस्व 'ओ'क हेतु प्रयुक्त संकेतसँ अनभिज्ञताक कारणें अशुद्धि बहुत अछि। उमापतिक स्थितिकाल, लोकनाट्यपरम्परा आओर मैथिल किरतनिआ नाटक, मैथिक किरतनिआ नाटकक परम्परामे पारिजातहरण, पारिजातहरणक गीत, पारिजातहरणक पाठ इत्यादिक सम्बन्धमे आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कयल गेल अछि। मूल नाटकक हिन्दी अनुवाद मूलक आत्माकें उतारबामे अक्षम अछि। अन्तमे प्राकृत शब्दक सूची देल गेल अछि। एकर पुनर्मुद्रण १९६२मे भेल ।

हिन्दिएमे पाँचम संस्करण बजरंग वर्मा द्वारा कयल गेल १९६३ मे। मूलतः ग्रियर्सन ओ पीयूषक पद्धतिक अनुसरण करितो एहि संस्करणकें अधिक वैज्ञानिक ओ व्यवस्थित करबाक प्रयास कयल गेल अछि। समस्त मुद्रित संस्करणक पाठान्तरक सूचना एहिमे देल गेल अछि। हिन्दी अनुवादो पीयूषक अनुवादसँ अधिक स्फीत भेल अछि। आरम्भमे डा० सुनीति कुमार चटर्जी ओ डा० सुकुमार सेनक अंग्रेजीमे भूमिका छनि। तत्पश्चात् श्री वर्मा द्वारा उमापतिक जीवनवृत्त, आश्रयदाता ओ स्थितिकाल, नाटकक खोज, नाटकक नाम, नाटकक कथावस्तु ओ तकर स्रोत आदिपर विचार क' नाटकक रूपरचना, वस्तुविन्यास, चरित्रचित्रण, भाषा, गीतमे कवित्व इत्यादिक शास्त्रीय समीक्षा कयल गेल अछि। नाटकक पाठनिर्धारण पर विस्तारसँ विचार कयल गेल अछि। अन्तमे परिशिष्टमे नाटकक कथावस्तु, नाटकमे प्रयुक्त पौराणिक नामक विवरण, उमापतिक नामपर प्रचलित पद, नाटकमे प्रयुक्त संस्कृत छन्दक परिचय, नाटकमे प्रयुक्त राग-रागिणीक परिचय, प्राकृत ओ मैथिली शब्दक अनुक्रमणी द' क' एहि संस्करणकें अत्यन्त उपयोगी बना देल गेल अछि।

१९७१मे श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क सम्पादनमे पारिजातहरण केर छठम संस्करण दरभंगासँ प्रकाशित भेल अछि। एहिमे पाठानुसरण चेतनाथ झाक कयल गेल अछि। आरम्भमे विद्वत्तापूर्ण भूमिकामे कविक स्थितिकाल इत्यादिपर विचार करैत पारिजात-हरणक वैशिष्ट्यपर प्रकाश देल गेल अछि। प्रायः पहिल बेर, रचनाक आधारपर उमापतिक व्यक्तित्वक मूल्यांकन एहिमे कयल गेल अछि।

पारिजातहरणक अन्तिम संस्करण १९७५ ई०मे भेल अछि। स्व० जगदीश चन्द्र माथुर ओ डा० दशरथ ओझाक संयुक्त सम्पादनमे 'प्राचीन भाषा-नाटक' नामक ग्रन्थ प्रकाशित भेल अछि। लोकभाषामे रचित प्राचीनतम नाटकक रूपमे एकरा स्थान देल गेल अछि। एहिमे मूलक संग हिन्दी अनुवाद सेहो देल गेल अछि। आरम्भमे प्रदत्त संक्षिप्त भूमिकामे वैह कथा ओ निष्कर्ष सभ दोहराओल गेल अछि जे पूर्वक सम्पादक लोकनि कहैत रहलाह अछि।

पारिजातहरणक हस्तलिखित प्रति सभ मिथिलाक विभिन्न भागमे बहुल संख्यामे विद्यमान अछि। परन्तु एहि सभक सम्यक् अन्वेषण नहि भ' सकल अछि। डा० जयकान्त मिश्र एहन अनेक हस्तलिखित प्रतिक पता देने छथि अपन 'हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर' नामक ग्रन्थक पहिल भागमे। तदनुसार निम्नलिखित व्यक्तिक ओत' हुनका पारिजातहरणक हस्तलेख देखबामे आयल छलनि—

(१) धरणीधर पाठक, वलिगढ़, रून्नी सैदपुर, मुजफ्फरपुर।
(२) सत्यदेव मिश्र, रहिका, मधुबनी।
(३) बलदेव झा, रैयाम, लोहट, दरभंगा।
(४) जयरमण झा, उजान, मधुबनी।
(५) आद्यानाथ मिश्र, पाहीटोल, मनीगाछी, दरभंगा।
(६) म० म० राजनाथ मिश्र, सौराठ, मधुबनी। (एहि हस्तलेखक उल्लेख पूर्वहि कयल गेल अछि।)
(७) नरेन्द्रनाथ दास, सखबाड़, मनीगाछी, दरभंगा। (हिनका लगमे अनेक प्रति छनि जे पाठ ओ अभिनयक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण अछि।)

पारिजातहरणक एक गोट हस्तलिखित पोथी

हमरा लगमे सेहो पारिजातहरणक एक गोट प्राचीन हस्तलिखित प्रति अछि जकर चर्चा पूर्वहि कय बेर भेल अछि। ई प्रति हमरा प० जीवानन्द ठाकुरसँ प्राप्त भेल जे पूर्वमे राज पुस्तकालयमे छलाह आ सम्प्रति कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयमे छथि। ई पोथी डेढ़-पओने दू सय वर्ष पुरान होयतैक। कागतपर लिखल एहि पोथीक पत्रक लम्बाइ-चौड़ाइ १२"×४½" छैक। प्रत्येक पृष्ठपर ९-१० पंक्ति छैक। लिपि तिरहुता छैक। आरम्भमे सुलेख छैक मुदा अन्तमे खड़रा जकाँ। लिपिकार ओ लिपिकाल सम्बन्धी कोनो सूचना नहि छैक। पहिल पत्रक पहिल पृष्ठ सादा छैक। दोसर पृष्ठसँ लेख आरम्भ होइत छैक। अन्तिम पत्रक अन्तिम पृष्ठपर एक पाँती मात्र लिखल छैक।

पारिजातहरणक मंगलगीत ओ प्रथम नान्दीश्लोक एहिमे नहि अछि। पोथी 'अपिच' लिखि दोसर नान्दीश्लोकसँ आरम्भ होइत अछि। अन्तमे, धनञ्जयक संग पारिजात तरु लेने श्रीकृष्णक प्रवेश-सूचना द' क' समाप्त भ' गेल अछि। एहिसँ अनुमान होइत अछि जे ई हस्तलेख कोनो एहन आदर्श प्रतिसँ उतारल गेल छल जकर कम-सँ-कम पहिल पृष्ठ अपाठ्य भ' गेल छलैक तथा अन्तिम किछु पत्र छिन्न भ' गेल छलैक। ओ आदर्श पोथी प्रायः कोनो कीर्त्तनिञा मंडलीक अथवा ओकर अभिनेताक छल जे स्टेज पर प्रयोगक हेतु तैयार कयल गेल छल। ओहि आदर्श

पोथीक पहिल पत्रक पहिल पृष्ठ प्रायः अतिशय प्रयोगक कारणेँ वा कोनो अन्य कारणेँ घसा क' अपाठ्य भ' गेल छल । तेँ हमर पोथीक प्रतिलिपिकार अपन हस्त-लेखमे पहिल पृष्ठ सादा छोड़ि देलक एहि आशामे जे कोनो दोसर आदर्श भेटने ओकरा पूरा क' लेब । मूल आदर्श पोथीक अन्तिम किछु पत्र खंडित छल तेँ हमर पोथीमे अन्तिम अंश नहि अछि ।

हमर पोथीक लिपिकार सामान्य कोटिक छल । भ' सकैछ जे ओहो कोनो कीर्त्तनिञा अभिनेता रहल हो । मुदा छल ओ 'जो देख्या सो लेख्या'क अनुसरण कयनिहार । तेँ अशुद्धि बड़ वेसी । ओहूमे संस्कृत ओ मैथिली भाग ओतेक अशुद्ध नहि छैक जतेक प्राकृत भाग । प्राकृत कथोपकथन तँ सर्वथा दुर्बोध अछि । सभसँ विशिष्ट अछि अभिनयक सौकर्य हेतु कथोपकथन एवं रंगमंचपर सम्पादनीय क्रिया विषयक निर्देशक विवृति ओ स्पष्टता । वस्तुतः कीर्त्तनिञा अभिनेता रंगमंचपर प्रयोगक हेतु नाटकक कोन रूपक प्रतिलिपि तैयार करैत छल तकर निदर्शन अशुद्धिक बाहुल्य रहितो, आद्यन्त अपूर्ण रहितो, वर्तमान हस्तलेखसँ नीक जकाँ होइत अछि ।

पात्रक अभिनय-निर्देश, विशेषतः वाचिक अभिनयक निर्देश बड़ स्फुट क' क' देल गेल अछि । कोनो कथोपकथन कोन पात्र द्वारा ककरा प्रति कहल जाय आ तखन केहन अभिनय-मुद्रा रहय से सर्वत्र निर्दिष्ट अछि । मुद्रित प्रतिमे एहन निर्देश एकहु ठाम नहि भेटैत अछि । जेना नारद एकटा गीत गाबि कृष्णकेँ पारिजात पुष्प दैत छथिन । मुद्रित रूपमे निर्देश अछि 'इति पुष्पं ददाति' । वर्तमान प्रतिमे अछि 'गीतगानोत्तरं नारदः पुष्पं ददाति' । मुद्रित पोथीमे १४ ओ १५ संख्यक गीतक मध्य कोनो वार्तालाप वा निर्देश नहि अछि । १४म गीत समाप्त क' १५म गीत आरम्भ भ' जाइत अछि मुदा हस्तलेखमे १४म गीतक बाद भेटैत अछि—

> **'ततः श्रीकृष्ण (प्रति) सत्यभामां प्रति वदति । हे प्रिये क्षम्यतामयमे-कोपराधः पुनस्सत्यभामां प्रति श्रीकृष्णो वदति केदारी रागेण गीतं गायति ।'**

मुद्रित पोथीमे गीत-गायनक प्रसंग रागोल्लेखक अतिरिक्त कोनो निर्देश नहि भेटैत अछि । परन्तु हस्तलेखमे प्रत्येक गीतक पहिने विशिष्ट निर्देश अछि जे कीर्त्तनिञा रंगमंचपर गीत-प्रस्तुतिक प्रसंग मूल्यवान सूचना दैत अछि । किछु नमूना उपयोगी सिद्ध होयत, यथा—

गीत—८क (सत्यभामा-प्रवेश गीतमे)—'ततः सत्यभामा-प्रवेशिका-गीतं गायन्ति सर्वे ।'

गीत—१०क (पारिजात पुष्प प्राप्त भेलापर रुक्मिणीक प्रसन्नता व्यंजक गीतमे)—'रुक्मिणी सखीसमूहेन राजविजयरागे गीतं गायति।'

गीत—१२क (सत्याभामा द्वारा देल गेल उपालम्भक गीतमे)—'सत्यभामा सखी सम्बोध्य श्रीकृष्णं प्रति उलहनगीतं कोलाहलरागे गायति।'

गीत—१४मे (अरुण पुरुब दिस बाला गीतमे)—'मानिनी गीतं गायति।'

एहि गीतक विशेषता ई अछि जे प्रत्येक पदक अर्थद्योतक श्लोक अनुपदहि कहल गेल अछि 'एतस्मिन्नर्थे श्लोकः' वा 'गीतार्थे श्लोकः' निर्देशक संग। परन्तु हस्तलेखमे एकरा आओर स्पष्ट क' देल गेल अछि। **'पदद्वयार्थे श्लोकं पठति श्रीकृष्णः सत्यभामां प्रति।'; 'अस्यार्थे श्लोकं पठति श्रीकृष्णः सत्यभामां प्रति।'**

हस्तलेखमे कोन प्रकारेँ कथोपकथन ओ अभिनयक निर्देश देल अछि तदर्थ एक अंशक यथावत् उद्धरण द' देब उपयोगी सिद्ध होयत। ई उद्धरण ओहि ठामक अछि जखन नारद रैवतक उपवनमे आबि 'जाएब हरिक समाजे' गीत गबैत छथि। गीतक पश्चातक अंश अछि—

"रङ्गभूमिस्थले परिक्रम्य नारदो वदति—अहो इयं सत्य-भामायाः सखी सुमुखी च।

प्रविश्य सुमुखी अवहठेन नारदं प्रति वदति—अनुसर्प्पसिदस्ति दयिताए सत्य-भामाए इहा एक्कंते मं अज्जउत्तो समवेदि तदो गमिस्स।

पुनर्न्नारदं प्रति सुमुखी वदति—ब्रह्मणं प्रणमामि अहो नारदं वानरं वा।

सुमुखी प्रति नारदो वदति—भगवान् नारदोहं त्वं पूर्ण्णकामा भव। मां वानरं भनसि। नूनमये कोपपथानुशरिते वचनात्।

सुमुखी निरूप्य नारदं प्रति वदति—भो नारद इयं भनामि अच्छरीयम्।

पुनर्न्नारदं प्रति सुमुखी वदति—दिव्य (क)इन्दो नारदः।

पुनस्सुमुखीं प्रति नारदो वदति—अहो सुमुखी मान्दिव्यकपिं भणसि। सर्व्वथा श्लेषकुशला भवसि। इति मया न ज्ञायसे अतःपरं ते श्लेषेण मया बुद्धंभति (?) त्वंश्लेष कुशला नास्ति अतःपरं कथ सुमुखी कुत्र कृष्णः।

नारदं प्रति सुमुखी वदति—सन्निहितज्जैव।"

इत्यादि।

एहि उद्धरणसँ अभिनेताकेँ अभिनयक प्रशिक्षण कोन रूपेँ देल जाइत छल तथा मंचपर अभिनेता संस्कृत ओ प्राकृत भाषाक केहन प्रयोग करैत छल तकर नीक

परिचय भेटैत अछि। एकटा आओर सूचना अछि जे कीर्त्तनीञ्ा अभिनेता प्राकृतक नाम ओ प्रकृतिसँ सर्वथा अपरिचित छल। प्राकृतकेँ 'अबहट्ठ' बूझैत छल तेँ प्राकृत वाक्य सब अबहट्ठक प्रकृतिमे परिवर्त्तित क' देल गेल अछि।

पाठान्तरक दृष्टिएँ ई हस्तलेख मुद्रित संस्करणसँ तुलना करवा योग्य अछि। दोसर नान्दीमे 'मैथिलेश'क स्थानमे एत' 'हिन्दूपति' पाठ अछि से कतेक ऐतिहासिक महत्त्वक सिद्ध भेल अछि तकर परिचय पहिनहि भेटि गेल अछि। गीतो सभमे एहन अनेक विचारणीय स्थल सभ अछि। जेना उदाहरण लेल—दसम गीतक पहिल चरणक मुद्रित पाठ अछि—'**आज जनम फल भेला**।' हस्तलेखक पाठ अछि—'**आज जनम मोर सुफलित भेला**।' एहिना अन्यत्रहु बोद्धव्य थिक।

गीतक भणिता सभमे 'गुरु उमापति'क स्थानमे सर्वत्र 'गुरूमापति' प्रयुक्त अछि से रोचक पाठान्तर थिक।

वर्तमान हस्तलेखमे १९ गोट गीत अछि। मुद्रित संस्करणक पहिल मंगल गीत ओ अन्तिम २०-२१म गीत एत' नहि अछि। तकर कारण अछि हस्तलेखक मूल आदर्श ग्रन्थ आदि ओ अन्तसँ खंडित छल। मध्योमे मुद्रित संस्करणक तेरहम गीत एत' अनुपलब्ध अछि। ई गीत अत्यन्त सुन्दर ओ मार्मिक रहितो कीर्त्तनिञा अभिनेता द्वारा किएक छाँटि देल गेल तकर मीमांसा होयबाक चाही।

पारिजातहरणक दुइगोट नवीन गीत

सभसँ महत्त्वपूर्ण अछि एहि हस्तलेखमे दुइगोट नवीन गीतक उपलब्धि। मुद्रित संस्करणक पन्द्रहम गीत 'मानिनि मानह जओँ मोर दोसे'क पश्चात् हस्तलेखमे चौदहम संख्यक कृष्णोक्ति विलास गीत निम्नरूपक अछि—

ततस्सत्यभामां प्रणम्योत्थाय श्रीकृष्णः सत्यभामां प्रति विलास-गीतं गायति—

तोह धनि राजकुमारि
कुसुमहु तह अति सुकुमारि ॥
वरनारी लो ॥

नयन देह जल चारि
मोहि वरु हलह निहारि ॥
करेँ मारी लों ॥

तोहेँ छवि हिर मनिहारि
अमिय भरलि जनि झारि ॥
भयसारि लो ॥

उमानाथ की रस परिसारि
तुअ बस भेलहु परचारि ॥
परचारी लो ॥
हिन्दूपति जिय जाने
महरानी नि(वि)रमाने ॥
जगजानी लो ॥

मुद्रित संस्करणमे सोलहम गीत अछि 'ताहि अवसर ताहि ठाम, माधव किए विसरल मोर नाम'। तत्पश्चात् सत्यभामा ओ कृष्णक वार्त्तालाप अछि। एहि क्रममे कृष्ण एकटा श्लोक 'भुवनं समये' पढ़ैत छथि। हस्तलेखमे सेहो ई गीत पन्द्रहम संख्यक रूपमे विद्यमान अछि। उपर्युक्त वार्त्तालाप ओ श्लोकक पश्चात् हस्तलेखमे सोलहम गीत नवीन भेटैत अछि। गीत निम्नरूपक अछि—

"श्रीकृष्णः सत्यभामां प्रति गीतं गायति—

केशरि तिलक कयल निरवाम।
चान कुमुद लय पूजल काम[1] ॥
धने धने
तुअ रूप मन अनरूप सुन्दरि[2] ॥ध्रु० ॥
अलक झलक मुकुतावलि काँति।
जनि जलधर तर नखतक[3] पाँति ॥
वेनी विरचि सीस फुल देल।
जनि फणिपति शिरमणि उगि गेल ॥
वेशरि मोति झलक मुख विन्दु[4]।
उमगि अमीरस पिब जनि इन्दु[5] ॥
उरहार कच शीश पट टारि।
मुख शशि हेरि मेरु डिठि वारि ॥
उबेर (?) रसिक उमापति भान।
लखिमा देइ पति इ रस जान ॥"

मूलपाठमे किछु संशोधन अपेक्षित बूझि पड़ल। मूलपाठ सेहो द्रष्टव्य थिक—

१. वाम, २. सुन्दरी, ३. नक्षतक, ४. इन्दु, ५. विन्दु।

एहि प्रकारेँ देखल गेल जे पारिजातहरणक मूल रूपक उद्धारक हेतु एखनो बहुत किछु कर्त्तव्य शेष अछि। उचित तँ ई होइत जे पारिजातहरणक यावन्तो ज्ञात हस्तलेखक संकलन क' सभक पाठक तुलना क' ओकर यथार्थ स्वरूपक उद्धार कयल जाइत। हमरा जनैत पारिजातहरणक मुद्रित स्वरूप ओकर यथार्थ रूप कथमपि नहि थिक।

उमापतिक स्फुट गीत

उमापति उपाध्यायक एकमात्र नाट्यकृति 'पारिजातहरण'सँ सुधीसमाज परिचित छल। एहिसँ भिन्न अनेको स्फुट गीत सभ आब उपलब्ध भेल अछि। पहिने हिनक एकगोट गीत महादेवक ताण्डवनृत्य-वर्णन विषयक, खूब प्रचलित होयबाक कारणेँ लोकमे जानल छल। ई गीत साहित्यक संग्रह सभमे सहो स्थान पबैत रहल। ताहिसँ अतिरिक्त गीत सभमे किछु विभिन्न अन्वेषक लोकनि द्वारा प्रकाशितो भेल अछि परन्तु किछु गीत एखन धरि सर्वथा अप्रकाशित रहल अछि। सबसँ पहिल काज तँ ई अछि जे एखन धरिक ज्ञात समस्त प्रकाशित ओ अप्रकाशित गीतकेँ एकत्र क' देल जाय। एहिसँ उमापतिक साहित्यिक मूल्यांकनमे सौविध्ये होयत सँह नहि, हुनका संग न्यायो भ' सकतनि।

जतेक गीत सभ भेटल अछि ताहिमे दुइगोट गीत पारिजातहरणक हस्त-लिखित प्रतिमे कथाक्रममे संश्लिष्ट भेटैत अछि। तेँ ओकरा प्रामाणिक मानबामे तारतम्य नहि होयबाक चाहिऐक। एहि दुहू गीतकेँ पूर्वे उद्धृत कयल गेल अछि। ओकर प्रामाणिकताक सम्बन्धमे तत्रैव विचार भ' चुकल अछि।

अवशिष्ट गीतक प्रामाणिकताक आधार अछि ओकर भणितामे 'उमापति' नामक प्रयोग। किछु गीत प्राचीन लेख सभसँ उपलब्ध भेल अछि। किछु गीत मिथिलाक गाइनि लोकनिक गीतक पोथीसँ उद्धृत भेल अछि। एहि प्रकारक समस्त गीतकेँ प्रथम बेर एकत्र प्रस्तुत कयल जा रहल अछि।

कतोक गीत एकसँ अधिक स्रोतसँ उपलब्ध भेल अछि तेँ बहुविध पाठान्तर होयब स्वाभाविक। परन्तु सभक संकलन नहि क' केवल मान्य ओ संगते पाठ एत' ग्रहण कयल गेल अछि।

(१)

छिन्नमस्ताक स्तुति विषयक ई गीत 'मैथिल-भक्त-प्रकाश' नामक गीतसंग्रहमे संकलित भेल छल। वर्तमान शताब्दीक प्रथम दशकमे बाबू ललितेश्वर सिंह एहि संग्रहक सम्पादन कयने छलाह। एहि संग्रहमे विभिन्न कविक भगवतीक स्तुति विषयक गीत सभ संकलित अछि। 'मैथिल-भक्त-प्रकाश'क पृष्ठ १५ पर ई गीत देल गेल अछि।

छिन्नमस्ताक

॥ तोरी ॥

जय जय जय प्रचण्ड चण्डिके आदिशक्ति तुअ चण्डी।
ब्रह्म विष्णु शिव सकल भुवन भरि तुअ सिरिजल ब्रह्मण्डी॥
अष्टदल कमल उपर रविमण्डल तापर त्रिगुन सुरेखी।

तापर रति विपरित मनमथ कर तापर पद तुअ पेखी ॥
लहलह रसन दसन अति चञ्चल विकट वदन विकराला ।
पीन पयोधर ऊपर राजित उरग हार मुंडमाला ॥
उत्तम अंग वह वाम पाणि कय दहिन कल्प धरु काँती ।
निज गल उछिल लिधुर मधुरी मधु पीबि जिबिअ भल भाँती ॥
जोगिनी जुगल पास दुइ पोसल अरुण तरुण घनश्यामा ।
तीनि नयन तुअ जोति जगत भरि सहस भानु अभिरामा ॥
भाव भक्ति वर दिअ परमेश्वरि भक्त मुक्ति वरदाने ।
हिमगिरि कूमरि चरण हृदय धरु सुमति उमापति भाने ॥

(२)

दोसर गीत सेहो 'मैथिल-भक्त-प्रकाश'क १४-१५ पृष्ठपर अछि। गीत थिक ताराक वन्दनाक राग दरबारी कान्हरामे। परन्तु भणिता सन्दिग्ध अछि। भणितामे सुमति उमापति अछि परन्तु कोष्ठकमे 'कृष्णपति' पाठ सेहो देल गेल अछि। एकर तात्पर्य यैह भेल जे संग्रहकर्त्ताकेँ एहि गीतक भणितामे विशेष ठाम उमापतिए पाठ भेटलनि मुदा कोनो ठाम कृष्णपतियो पाठ भेटि गेल छलनि। कविक नामक संग 'सुमति' विशेषण प्रयुक्त अछि जे उमापतिक नामक संग विशेष ठाम भेटैत अछि। दोसर दिस 'कृष्णपति'क कतहु कोनो रचना एखन धरि नहि भेटल अछि तेँ हम एहि गीतकेँ उमापतिएक रचना सम्प्रति मानैत छियनि।

ताराक

।। दरबारी कान्हरा ।।

शंकरि शरण धयल हम तोर
कुकरम देखि अधिक यदि कोपित की करता यम मोर ॥ध्रु०॥
शिवतरु सुरतरु शिव ऊपर हासवास अति घोर ।
सहस दिवसमणि चान कोटि जनु तन दुति करय इजोर ॥
सोह खडग अति गरवक पूरनि लम्बोदरि जगदम्बे ।
मनुज नागवर सकल सुरासुर सबकाँ तुहि अवलम्बे ॥
बामा हाथ माथ आंत कोमल दहिन खडग कर काती ।
पाँच कपाल भाल अति राजित श्री इन्दीवर काँती ॥
शिव शव आसनि पास जोगिनिगन परिहर बाघरि छाला ।
रक्त रक्त लहलह कर रसना नव जौवन मुंडमाला ॥
फणि नेउर केउर फणि कङ्कण हृदयहार फणि राजे ।
सहरसना फणिजुग फणि केउर फणीहार फणि छाजे ॥

चौदिसि फेरव सब मुंडावलि चिताअग्नि सन गेहे।
तीन नयन फणिमय सब भूषण नव जलधर सम देहे॥
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक नर मुनि धरय धेआने।
त्रिभुवन तारिणि नरक निवारिणि सुमति उमापति भाने॥

(३)

भगवती-वन्दनाक तेसर गीत प्रो० प्रफुल्ल कुमार 'मौन'केँ मोरङ्क बिदापत नाचक मंडलीसँ भेटल छलनि। बिदापत नाचमे आरम्भमे जे विभिन्न देवी-देवताक वन्दना कयल जाइत अछि ताहिमे एहू गीतक प्रयोग होइत अछि। एहि गीतक पाठ यद्यपि छिन्न ओ विकृत अछि परन्तु अछि महत्वपूर्ण। प्रथमे चरणसँ संकेतित होइत अछि जे ई गीत स्वतन्त्र गीत नहि भ' क' कोनो नाटकक प्रवेश-गीत थिक। ई गीत मोरङ्क बिदापत-नाच-मंडलीमे प्रचलित रहल अछि आ मोरङ मकवानपुरक राज्ये सीमामे छल सैह नहि प्रत्युत हरिहरदेव अपन अन्तिम समयमे मोरङमे आवास बनओने छलाह।

आयल नटनेसरि लेल परवेस।
अभरन तेजि धय जोगिनि भेस॥
बघछाल कछिनि गाँथल ग्रिमहार।
हाथ खर्ग सिर ओरहुल फूल॥
कछनी पहिरि माता भाउर लेल।
नेपुर सबद मेदिनि उड़ि गेल॥
सती भवानी गुन अनुमान।
सुमति उमापति होउ समधान॥

(४)

प्रस्तुत गीत शिवक नृत्यवर्णन विषयक थिक। गीत अत्यन्त प्रसिद्ध। गीत सभक जे पुरान पोथी सभ उपलब्ध भेल अछि, ताहि सभमे अधिकांशमे ई भेटितहि अछि, यद्यपि पाठ-भेद बड़ बेसी। सर्वप्रथम स्व० रमानाथ झा स्वसम्पादित ओ मैथिली साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित मैथिली पद्यसंग्रह (पृष्ठ १९-२०)मे एकरा स्थान देलनि। एत' हुनकहि पाठकेँ उद्धृत कयल जाइछ।

जय शम्भु नटा जय शम्भु नटा।
हँसि हर हेरथि गौरि निकटा॥
भृङ्गी मधुर मृदङ्ग बजावथि
नन्दी निपुण झालि झमटा।
ताल तमौरा लए गुन गावथि

सङ्गहि नारद मुनि विपटा ॥
चान कला सँ चुइल अमिय रस
तेहि जिउल अजिन लपटा ।
गौरि सिंह देखि दुरहि पड़ाइलि
लाज कओन सहजहि लङटा ॥
भमइत भामु जटा लए झाँपल
चमकि उठए जनि जलद घटा ।
गङ्ग तरङ्ग भूमि भीजल अति
नयन चमक जनि बिजुरि छटा ॥
हँसथि सखी सभ दए करताली
ताल धरथि जनि सहस्र घटा ।
सानन भए वर दिअ ओ दिगम्बर
सुमति उमापति भिनति गोटा ॥

(५)

शिव विषयक ई गीत अद्यापि अप्रकाशित छल । गाइनि सभक पोथीमे इहो गीत वेसी ठाम लिखल भेटल अछि । भणितामे गोटेक ठाम विद्यापतिहुक नाम अछि । परन्तु बेसी ठाम उमापतिहिक नाम छनि । नाममे एतहु 'सुमति' शब्द प्रयुक्त अछि । गीत थिक 'उचिती' प्रकारक । एत' स्व० दिनकर दत्त मिश्र (प्रसिद्ध महीबाबू), नवटोलक संग्रहसँ गृहीत पाठ प्रदत्त अछि ।

देखलहु हर वर आज रे ।
रतिपतिकेँ होअ लाज रे ॥
पूर्व पुण्य फल आज रे ।
शङ्कर हमर समाज रे ॥
करथि हमर घर वास रे ।
पुरथि सकल मोर आस रे ॥
ओ त्रिभुवन पति राज रे ।
हम निरधन धन साज रे ॥
हमर बहुत अभिरोष रे ।
क्षमा करथि सब दोष रे ॥
सुमति उमापति भान रे ।
शिव जग के नहि जान रे ॥

(६)

कविशेखर बदरीनाथ झा स्वसम्पादित गीतसंग्रह 'मैथिली-गीत-रत्नावली'मे उमापतिक दुइगोट नवीन गीत संकलित कयने छथि। ई गीतद्वय पूर्वमे अप्रकाशित छल। एहि दुहु गीतमे, एकटामे कृष्णजन्म-कालमे देवकीकेँ कृष्ण अपन जाहि चतुर्भुज रूपक दर्शन देने छलथिन तकरे वर्णन अछि। एहू ठाम 'सुमति' विशेषण द्रष्टव्य थिक।

बेरि बेरि विरचथि विधि विधु मण्डल हरिमुख सरि नहि होए।
नयन निरखि निशि नलिन नलिन होअ नलिनी वन वस गोए॥
हरि एक जना।
मोर सएह धना॥
कनक किरिट पुर केउर नेउर कङ्कण किङ्किणि पाँती।
इन्द्रनील मनि विसकरमे जनि कसल कनक कत भाँती॥
शङ्ख सुदर्शन गदा सरोरुह शारङ्ग पीअर वासे।
जनि शशि सूरुज मेरु शिखर कुज इन्द्रधनु तलित अकासे॥
मणि मुनि चरण जुगुत मुकुतावलि मिलित ललित वनमाला।
जनि सागर सित सामर सरसिज हंसक पाँति विशाला॥
धन भादव धन मास किसन पछ धन आठमि तिथि आजे।
धन मथुरा धन देवकि वसुदेव जाहि जनमल जदुराजे॥
कोटिओ काम उपाम न पाबए की बरनए कवि जाने।
सब परिहरि हरिचरण हृदय धरि सुमति उमापति भाने॥

(७)

'मैथिली-गीत-रत्नावली'मे उमापति-भणिताक दोसर गीत शृंगार रसक थिक। भणितामे 'सुमति' विशेषणक प्रयोग अछिए, संगहि भणिताक चरणमे 'छत्रपति भूप' केर उल्लेख अछि। ई तथ्य ऐतिहासिक महत्त्वक अछि। उमापति उपाध्यायक आश्रयदायता हरिहरसेनक ज्येष्ठ पुत्रक नाम छत्रपतिसेन छलनि। हुनकहि नामक उल्लेख एहि गीतमे अछि।

कमलिनि सङ्गेँ रङ्गेँ दिवस गमाओल
कुमुदिनि निशि विसराम।
भमर पुछिअ तोहि सरुप कहह मोहि
अधिक प्रीति कोन ठाम॥

(१०)

कवीश्वर चन्दा झाक संग्रहमे उमापति-भणितायुक्त एकटा गीत लिखित अछि। माधवक रूप-सौन्दर्य वर्णनक ई गीत एखन धरि अप्रकाशित छल।

इन्दु विनिन्दक ओरे हरिमुख।
हेरितहि हरल सकल दुख॥
बहुत जनम तपेँ ओरे पाओल।
लोचन जुगल जुड़ाओल॥
छवि उपमा नहि ओरे हो कहि।
जनि रतिपति अवतरु महि॥
विधि कुदिवस ओरे मेटल।
तेँ जनि माधव भेटल॥
हरषि गहथु हरि ओरे तसु कर।
कुमुदिनि मिलथु सुधाकर॥
सुमति उमापति ओरे दृढ़ कह।
कुदिवस नहि निरवधि रह॥

(११)

कोइलखवासी प० खुद्दी झाक हस्तलेखमे नायिकाक रूप-सौन्दर्य-वर्णनक एकटा गीत उमापतिक भणितामे संकलित छनि। ई गीत डॉ० वेदनाथ झा (मैथिली-विभाग, जयनगर कॉलेज)क सौजन्यसँ उपलब्ध भेल अछि। ई गीत अद्यापि अप्रकाशित छल।

आजु देखलि हमे हो गे रमनी।
सारद ससिमुखि गति गजगमनी॥
भउँह कमान नयन सर वामा।
दुहु कर धनु धए मारलि कामा॥
कुचजुग सिरिफल अ (त)रु नत देहा।
कमल फुलल जनि बिजुरी रेहा॥
सामल लोम लता तसु देहा।
कनक आकृति जनि मसि रेहा॥
विहँसि विहँसि मुख करए अनन्दा।
वसुधा वरिस सुधारस चन्दा॥
वेदन मदन उमापति भाने।
रतिपति पति मिलु पुरुबक पूने॥

(१२)

'कविशेखर-पुष्पाञ्जलि' नामक अभिनन्दन-ग्रन्थमे श्री रसनाथ झा 'उमापति उपाध्यायक दुइगोट अप्रकाशित गीत' शीर्षकसँ दुइगोट गीत प्रस्तुत कयने छथि। ओहिमे प्रथम गीतमे रागक उल्लेख नहि अछि, परन्तु दोसर गीतमे 'धनछी' रागक उल्लेख अछि। प्रथम गीतक भणिताक चरणमे अछि 'हिमगिरि कूमरि दास।' दोसर गीतक भणिताक चरणमे 'हिन्दूपति'क उल्लेख अछि। दुहू गीतक भणितामे कविक नामक संग 'सुमति' विशेषणक प्रयोग भेल अछि। प्रथम गीत अछि—

कहह सरूप कलावति देबह दिवस कत खेद।
मन बुझि अबुझ न काछह अबहु करह परिछेद ॥
विमुख न कर मुख हिमकर समुख अबैतें हमे हेरि।
नयना जनु विछुराबह देह मोहि दिठिहुक मेरि ॥
कौशलें करह गतागत पुनु पुनु मोरि समाज।
उकुतिहि गुपुत बेकत होअ आबें कत करह बेआज ॥
संसय कर जिब डगमग विहुँसिहु देह विसवास।
गाबथि सुमति उमापति हिमगिरि कूमरि दास ॥

(१३)

'कविशेखर-पुष्पाञ्जलि'क दोसर गीत—

धनछी

तोहे हमे समुचित पेम।
रतने जडित जनि हेम ॥
भाविनि ॥ ध्रुवं ॥
तोहे धनि जल हमे मीन।
एक जीवन तन भीन ॥
हमे पाओल तोहें नीप।
हमे गृह तोहें मणि दीप ॥
हमे कैरव तोहें चन्द।
हमे हिअ तोहहि अनंद ॥
हमे अलि तोहे अरविन्द।
अधर मधुरि मकरन्द ॥
सुमति उमापति भान।
हिन्दूपति रस जान ॥

घाट बैसल नव दानी ।
सुन्दर सारंग पानी ।।

वचन बोलथि हसि हाँसी ।
मधुरि बजावथि बाँसी ।।

छन्द : स्याम सओं हसि पुछ गोआरिनि 'घाट तोहें घटवार । ओ
जाएब मधुपुर गोरस बेचए करह जमुना पार ।।' ओ

सेह सुनिकहु स्यामसुन्दर धए लटुरि भउ ठाढ़ । ओ
रोकि राख गोआरिनी सब दान माङए गाढ़ ।। ओ

'हाक दैए हलु कान्हे ।
होअह पार दए दाने ।।'

'दहि दुध किछु बरु लेहे ।
तो रित पार कए देहे ।।'

छन्द : 'नीत मधुपुर गोरस बेचिअ कबहु लाग न दान । ओ
कोन नग्र तोँह बसह दानी कहह के तुअ जान ।।' ओ
'दान दए दए जाह नित दिन भल न तोहर गेआन ।' ओ
'सुनह निठुर गोपाल मन दए भल न तोहर टेब ।' ओ
'एहि जग बसि के न जानए पार गेलें खेब ।।' ओ

'भए गेल दुपहरि बेरी ।
कखन जाएब गृह फेरी ।।

गरुअ पड़ल किअ आजे ।
कहिनि कहैतें होअ लाजे ।।'

छन्द : 'आज सब कुल लाज परिहरि जाह मथुरा बाट । ओ
नन्दसुत हमें प्रबल दानी रहिअ जमुना घाट ।। ओ

सुनह नारि गोआरि मन दए कहह सत्त सरूप । ओ
गर्व कए नहि दान राखिअ देखि बालक रूप ।। ओ

कंसक करब विधंसे ।
उधरब जत जदुवंसे ।।

करब भक्त निज काजे ।
उग्रसेन देब राजे ।।

छन्द : बधलि पुतना अओ उधारल जमल अर्जुन दास। ओ
हीनि पुतना मारि घालल करब कंस विनास ॥ ओ
धुरुबनिज जन अचल कएकहु देल निश्चल राज। ओ
एहि महीतल जत भगतजन करब सब मिलि काज ॥' ओ

सकुचित भेलि सबे नारी।
देखि चरित्र वनमाली ॥
'लेह आलिंगन दाने।
अओर अधर मधुपाने ॥'

छन्द : राधिका सओँ प्रीति बाढ़ल कान्ह धरु कड़हार। ओ
चललि हरखित नारि मधुपुर कैए जमुना पार ॥ ओ

ननुआँ से नन्दकुमारे।
जसोमति प्रान अधारे ॥
उमानाथ कवि गावए।
कृष्णकथा प्रस्थावए ॥

उमापतिक काव्य-वैशिष्ट्य

उमापतिक काव्यक समग्र रूपेँ अवलोकन कयने दुइगोट वस्तु एहन दृष्टि-गोचर होइछ जे हुनका परम्परासँ जोड़ैत छनि। प्रथम थिक काव्यवस्तुक हेतु पौराणिक सन्दर्भ-निर्भरता ओ द्वितीय थिक विद्यापतिक गीत-पद्धतिक अनुसरण।

पारिजातहरणमे कथावस्तु पुराणसँ लेल गेल अछि से स्पष्टे अछि। ओकरा पुनः दोहराय चर्वित-चर्वण करब अनपेक्षित। हम जे हुनक किछु आओर नाटक होयबाक संभावना व्यक्त कयल अछि तकरहु विषय श्रीमद्भागवतपर आधृत होयबाक चाही। नाटकमे प्रयुक्त गीत सभमे अथवा स्फुट गीत सभमे पौराणिक छाप देखल जा सकैत अछि। पारिजातहरणक मंगलगीतमे दुर्गासप्तशतीक वस्तुकेँ बीजरूपमे संकेतित कयल गेल अछि तँ कृष्णजन्म विषयक स्फुट गीतमे जन्मक समयमे विष्णु जाहि चतुर्भुज रूपमे देवकीकेँ दर्शन द' क' बालकृष्णक रूप धारण कयने छलाह तकर वर्णन अछि। बालचरित ओ चीरहरण शीर्षकबाला गीत श्रीमद्भागवतक कृष्णक बाल-लीला-प्रसंगसँ ग्रहण कयल गेल अछि। छिन्नमस्ता ओ तारावन्दना विषयक गीतमे हुनक ध्यानक वर्णन अछि जे शाक्तपुराण ओ तन्त्रवाङ्मयसँ प्रेरित-प्रभावित अछि।

विद्यापतिक काव्य-परम्परा मिथिलाक जन-जीवनमे ततेक गम्भीर धरि प्रवेश क' गेल छल जे कोनो साहित्यकारक हेतु मध्यकालमे ओहिसँ निरपेक्ष रहब

संभव नहि छल। अतः यदि उमापतियो ओहि परम्पराक अनुसरण कयलनि तँ से स्वाभाविके कहल जायत।

परन्तु यदि उमापतिक काव्यक सूक्ष्म पर्यालोचन कयल जाय तँ स्पष्ट भ' जायत जे उमापतिक काव्यसर्जन सर्वथा विद्यापति-परम्परानुसारी नहि अछि। छन्द ओ भास अवश्ये विद्यापतिक अनुसरण कयलकनि परन्तु भाव, भाषा ओ अभिव्यक्ति-पद्धतिमे उमापति स्वतन्त्रताक परिचय देलनि अछि। भावक दृष्टिएँ पारिजातहरणक कतोक गीतकेँ राखल जा सकैत अछि। शिव ओ पार्वतीक विवाहक वर्णन बहुतो कवि कयने छथि परन्तु पारिजातहरणक प्रस्तावनाक मंगलमे प्रयुक्त शिव-पार्वती-विवाह-विषयक गीतक जे भाव-सम्पत्ति अछि से बड़ कम कविक एहि विषयक गीतमे देखल जाइत अछि।

उमापतिक भाषा सर्वत्र पाण्डित्यपूर्ण छनि। सर्वत्र संस्कृतनिष्ठ भाषाक प्रयोग दृष्टिगोचर होइत अछि। एहन नहि अछि जे कवि तद्भव शब्दक प्रयोग नहि कयलनि अछि परन्तु ओकर मात्रा अपेक्षाकृत थोड़ अछि। विशेष ठाम संस्कृतक तत्समहि शब्दक प्रयोग भेटैत अछि। देशी शब्दक प्रयोग तँ क्वचित्-कदाचित् भेल अछि। एहि प्रकारक संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दावलीक प्रयोगक पाछाँ रहल अछि रचनाक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि। उमापति एहन राजसभाक परिसरमे अधिकांश काव्यक रचना कयने छलाह जकर प्रायः मातृभाषा मैथिली नहि छलैक। अथवा छलो होयतैक तँ पहाड़ी भाषा सभसँ मिश्रित। एहन समाजकेँ देशी शब्दावलीयुक्त मिथिला भाषाक काव्य सहज बोधगम्य नहि होइतैक। दोसर दिस संस्कृत शास्त्रक भाषा होयबाक कारणेँ सभठाम प्रचलित छल। अतः संस्कृत शब्दावलीयुक्त काव्यक अर्थबोधमे मिथिलासँ बाहरक श्रोताकेँ अधिक आयास नहि होइत होयतैक। संगहि उमापति न्याय-वैशेषिकक पण्डित छलाह। अतः ओहि पाण्डित्यक प्रभाव हुनक काव्य-भाषापर पड़ल तँ ओ आश्चर्यक विषय नहि थिक। यदि कही जे उमापति पण्डित कवि छलाह तँ अत्युक्ति नहि होयत।

उमापतिक जतबा गीत वा संस्कृत श्लोक छनि सभमे अलंकार-योजनाक विशिष्टता देखबामे अबैत अछि। आरम्भक दुहू नान्दी श्लोकमे साङ्गरूपक-योजना चमत्कृत क' देब'वला अछि। उपमा, उत्प्रेक्षा, इत्यादि अलंकारक प्रयोग हिनक गीतक सामान्य विशेषता थिकनि। हिनक बड़ कम गीत एहन अछि जे निरलंकृत अछि। एहिसँ कविक अलंकार-प्रियताक परिचय भेटैत अछि। परन्तु एहि प्रकारक अलंकार-योजनासँ उमापतिक काव्य गोविन्ददासक गीत जकाँ दुर्बोध नहि भ' गेलनि अछि। अलंकारक प्रयोग ततबे मात्रामे ओ ताहि प्रकारेँ कयल गेल अछि जाहिसँ ओ काव्यक हेतु उपकारक भ' सकय, काव्यशोभाकर धर्म भ' सकय। पदलालित्यक

कारणेँ माधुर्यगुणक पूर्ण समावेश भेल छैक परन्तु युद्धक वर्णनमे ओजगुणक समावेश सहज भावेँ भेल अछि। अलंकार-संपन्न, पदलालित्ययुक्त, पाण्डित्यपूर्ण भाषामे रचित उमापतिक गीत सभ गेयधर्मी ओ सर्वजनबोधगम्य होयबाक कारणेँ एतेक लोकप्रिय रहल अछि। अतः पारिजातहरणक अन्तमे कवि द्वारा अपन काव्यक हेतु कयल गेल अनुशंसा वा गर्वोक्ति पूर्णतः चरितार्थ भेल अछि जे—

आशूद्रान्तं कवीनां भ्रमतु भगवती भारती भङ्गिभेदैः।



मैथिली अकादमी

श्रीकृष्णपुरी, पटना-८००००१

महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

	मूल्य	
१. म० म० मुरलीधर झा (जीवनी)	६.००	
श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'	८.००	सजिल्द,
२. उमापति (जीवनी)	५.००	
डॉ० रामदेव झा	६.५०	सजिल्द,
३. स्मृति-सन्ध्या (संस्मरण-संग्रह)	७.५०	
श्री मोहन भारद्वाज (सम्पा.)	९.५०	सजिल्द,
४. भारत-भ्रमण (यात्रा-वृत्तान्त)	११.००	
डॉ० सीताराम झा 'श्याम'	१४.००	सजिल्द,
५. सांख्यशास्त्र (दर्शन)	८.००	
श्री दुर्गाधर झा	११.००	सजिल्द,
६. उच्चतर मैथिली व्याकरण	६.००	
श्री गोविन्द झा	८.५०	सजिल्द,
७. भारतक भाषा-सर्वेक्षण (मैथिली)	१६.००	सजिल्द,
मूल : जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन		
अनुवाद : श्री कुलानन्द मिश्र		
श्री मोहन भारद्वाज		
८, मैथिली प्राचीन गीतावली (कविता)	२०.००	सजिल्द,
श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' (सम्पा.)		
डॉ० रामदेव झा ,,		
९. मैथिली अभिलेख-गीतमाला (कविता)	५.००	
डॉ० जयमन्त मिश्र (सम्पा.)	७.००	सजिल्द,